राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 दिल्ली में आप-कांग्रेस की तनातनी में कूदे संजय राउत, बताया.......

अडानी की कंपनी खरीदेगी 8 टैसी जहाज, 450 करोड़ का...... 10

वर्ष : 15 | अंक : 253 | नई दिल्ली, रविवार, 29 दिसंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

इसरो के अनूठे रिकॉर्ड कायम करने वाले मिशन 'स्पैडेक्स' की उलटी गिनती होगी कल से शुरू

चेन्नई, एजेंसी

चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) वर्ष 2024 शानदाई विदाई देने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये अपने दोहरे रिकॉर्ड कायम करने वाले ह्यस्पैडेक्सह्न अंतरिक्ष मिशन के लिए उलटी गिनती काम कल से शुरू करेगा। इसके तहत पहली अंतरिक्ष डॉकिंग तकनीक पर - स्पैडेक्स उपग्रह से जुड़ी डॉकिंग और अनडॉकिंग श्रृंखला है और दूसरा पीएसएलवी-सी60 प्रक्षेपण यान पर पीओईएम-4 के हिस्से के रूप में 24 वैज्ञानिक प्रयोगों का पीएसएलवी का चौथा चरण शामिल है। पीएसएलवी-सी60 स्पैडेक्स मिशन का प्रक्षेपण 30 दिसंबर को श्रीहरिकोटा के पहले अंतरिक्ष बंदरगाह पर पैड से 2158 बजे निर्धारित है। पीएसएलवी मिशन के लिए उलटी गिनती का काम जो आम तौर पर 24 से 25 घंटे का होता

है, कल से शुरू होने की उम्मीद है, जिसके दौरान चार चरण वाले वाहन में प्रणोदक भरने का कार्य किया जाएगा। इसरो ने ह्यएक्सह्न पर एक पोस्ट में कहा, प्रक्षेपण के करीब एक कदम और बढ़ाते हुये स्पैडेक्स के प्रक्षेपण यान के साथ दो उपग्रह एकीकृत हो गए है। कहा गया, एकीकरण मील का पत्थर है, एसडीएससी शार लिफ्टऑफ के एक कदम और करीब स्पैडेक्स उपग्रहों को पीएसएलवी-सी60 के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत किया गया है। बताया गया, पीएसएलवी-सी60 पर पहली बार पीआईएफ सुविधा में पीएस 4 (चौथे चरण इंजन) तक पूरी तरह से एकीकृत कर इसे पहले लॉन्च पैड पर ले जाया गया। इसरो अपने पहले सफल अंतरिक्ष डॉकिंग प्रदर्शन के साथ वर्ष 2024 की शानदार विदाई करने के लिए उत्सुक है, क्योंकि यह अग्रणी मिशन भारत को चौथा देश बनने के लिए प्रेरित करेगा। इससे दुनिया को पता चलेगा कि देश जटिल अंतरिक्ष डॉकिंग तकनीक में महारत हासिल कर रहा है इसरो के लिए यह एक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व मिशन होगा जिसके तहत अंतरिक्ष डॉकिंग प्रदर्शन के लिए दो उपग्रह चेजर और टारगेट वाले स्पैडेक्स लॉन्च के अलावा, स्पैडेक्स मिशन के साथ पीएसलवी ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंट मॉड्यूल-4 (पीओईएम-4) पर अंतरिक्ष में रिकॉर्ड 24 वैज्ञानिक प्रयोग किये जायेंगे।

मौसम

अधिकतम तापमान 32.0°C

न्यूनतम तापमान 23.0°C

बाजार

सोना	80,405
चांदी	1,1000
सेंसेक्स	80,220
निफ्टी	24,472

संक्षिप्त खबरें

भारत-नेपाल की सेनाएं करेंगी संयुक्त सैन्य अभ्यास सूर्य किरण

नई दिल्ली। भारतीय सेना के 334 जवानों की एक टुकड़ी शनिवार को नेपाल के लिए रवाना हुई। भारतीय सेना की यह टुकड़ी नेपाल में बटालियन स्तरीय संयुक्त सैन्य अभ्यास सूर्य किरण में भाग लेगी। दोनों देशों के बीच यह संयुक्त सैन्य अभ्यास का 18वां संस्करण है। यह युद्धाभ्यास 31 दिसंबर 2024 से 13 जनवरी 2025 तक नेपाल के सलझंडी में आयोजित किया जा रहा है। सूर्य किरण अभ्यास का उद्देश्य जंगल में युद्ध, पहाड़ों में आतंकवाद विरोधी अभियानों और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अंतर्गत मानवीय सहायता और आपदा राहत में अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाना है। अभ्यास में परिचालन तैयारियों, विमानन पहलुओं, चिकित्सा प्रशिक्षण और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इन गतिविधियों के माध्यम से सैनिक अपनी परिचालन क्षमताओं को बढ़ाएंगे। इसके साथ ही दोनों सेनाओं के जवान अपने युद्ध कौशल को निखारेंगे। इस अभ्यास के माध्यम से भारत और नेपाल के सैन्य कर्मी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में एक साथ काम करने के लिए अपने समन्वय को मजबूत करेंगे।

मनमोहन सिंह राजकीय सम्मान के साथ पंचतत्व में हुए विलीन

निगमबोध घाट पर राजकीय सम्मान के साथ हुआ अंतिम संस्कार

राष्ट्रपति मुर्मू, पीएम मोदी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी सहित अन्य ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का शनिवार को यहां निगमबोध घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया और उनका पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। डॉ. सिंह के अंतिम संस्कार में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, भूटान नरेश जिग्मे खेसर नमगायेल वांगचुक, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू, भाजपा अध्यक्ष तथा केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, तीनों सेनाओं के प्रमुखों के साथ ही कई केंद्रीय मंत्री, राजनयिक तथा अन्य गणमान्य लोग शामिल हुए। इससे पहले उनके पार्थिव शरीर को कांग्रेस मुख्यालय में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया जहां उनके परिवार के सदस्यों के साथ ही कांग्रेस में कई प्रमुख नेताओं ने उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। उसके बाद उनके पार्थिव शरीर को काफिले के साथ निगमबोध घाट लाया गया। उनकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में लोग उमड़े, लेकिन निगम बोध घाट पर सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त होने के करण जो लोग कांग्रेस मुख्यालय से शव यात्रा में करीब 11 किलोमीटर पैदल चलकर घाट पर पहुंचे उनमें सबको अंदर जाने नहीं दिया गया।

गौरतलब है कि डॉ. सिंह का 92 साल की उम्र में 26 दिसंबर रात करीब 9 बजे दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में निधन हो गया था। डॉ. सिंह के निधन के बाद उनका स्मारक बनाने को लेकर कांग्रेस तथा भाजपा के बीच जमकर सियासत हो रही है हालांकि सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि ट्रस्ट बनाकर डॉ. सिंह का समाधि स्थल बनाया जाएगा। डॉ. सिंह 2004 से 2014 तक दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे। इससे पहले 1991 में पी.वी. नरसिम्हा राव सरकार में वित्तमंत्री के रूप में उन्होंने देश में उदारवादी आर्थिक सुधार लागू किया जिससे देश की अर्थव्यवस्था को नई रिपीट नई ऊंचाई मिली। वर्ष 1954 में पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए करने के बाद कैम्ब्रिज से प्रथम श्रेणी से अर्थशास्त्र (ओनर्स) कर उन्होंने 1962 में ऑक्सफोर्ड से डीफिल किया। वर्ष 1971 में भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार, 1972 में वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार रहे और 1980 से 82 तक योजना आयोग के सदस्य बने। डॉ. सिंह 1982-1985 तक रिजर्व बैंक के गवर्नर रहे और साल 1985 में योजना आयोग के उपाध्यक्ष बने। फिर वह 1990 में प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार नियुक्त हुए। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में भी प्रोफेसर रहे।

कांग्रेस मुख्यालय में मनमोहन के अंतिम दर्शन को उमड़ा जनसैलाब

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके अंतिम दर्शन के लिए कांग्रेस मुख्यालय में आज जन सैलाब उमर पड़ा। डॉ सिंह के पार्थिव शरीर को सुबह उनके आवास से कांग्रेस मुख्यालय लाया गया जहां कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा, कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल सहित कई प्रमुख नेताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री की अंतिम दर्शन कर उनको श्रद्धांजलि दी। खराब मौसम के बावजूद कांग्रेस कर्यकर्ता पार्टी मुख्यालय पहुंचे और डॉ सिंह के अंतिम दर्शन कर उनके पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। कांग्रेस मुख्यालय में डॉ मनमोहन सिंह की पत्नी गुरु शरण कौर तथा उनकी पुत्री ने भी पूर्व प्रधानमंत्री के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके अंतिम दर्शन किए। डॉ सिंह को पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद उनके पार्थिव शरीर को कांग्रेस मुख्यालय से निगमबोध घाट के लिए रवाना किया गया जहां राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

अंतिम यात्रा में राहुल गांधी समेत कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हुए शामिल

जब तक सूरज चांद रहेगा मनमोहन सिंह का नाम रहेगा, जैसे नारों के बीच पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की अंतिम यात्रा कांग्रेस मुख्यालय से निकली। इससे पहले शनिवार सुबह पूरे सम्मान के साथ भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना के अधिकारी पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का पार्थिव शरीर लेकर कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे, जहां स्वर्गीय मनमोहन सिंह की धर्मपत्नी और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। पूर्व प्रधानमंत्री का पार्थिव शरीर अंतिम यात्रा के लिए सेना के वाहन पर रखा गया। इस वाहन में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के परिवार के लोगों के साथ मौजूद रहे। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार दिल्ली के निगमबोध घाट पर होना तय किया गया है। अंतिम संस्कार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल होंगे। इससे पहले कांग्रेस मुख्यालय पर डॉ. मनमोहन सिंह की पत्नी गुरशरण कौर ने पूर्व प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि दी। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा, डीके शिवकुमार, अशोक गहलोत, केसी वेणुगोपाल, कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुखु, तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी समेत कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेताओं और पार्टी कार्यकताओं ने भी उन्हें श्रद्धांजलि दी। तीनों सशस्त्र सेनाओ के अधिकारियों ने पूर्ण सम्मान के साथ पूर्व प्रधानमंत्री के पार्थिव शरीर को उनकी शव यात्रा के लिए फूलों से सजाए गए वाहन पर रखा। इस दौरान कांग्रेस नेताओं और कार्यकताओं का बड़ा हुजूम कांग्रेस मुख्यालय के बाहर उमड़ा। कांग्रेस नेताओं और कार्यकताओं द्वारा श्रद्धांजलि दिए जाने के बाद कांग्रेस मुख्यालय से श्मशान घाट के लिए पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की अंतिम यात्रा शुरू हुई। कांग्रेस कार्यकताओं का हुजूम मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर के पीछे-पीछे चलता रहा। लोग मनमोहन सिंह अमर रहें के नारे लगाते रहे।

धोखाधड़ी | **इस अवधि में बैंक धोखाधड़ी की कुल 18,461 घटनाएं हुई..........**

अप्रैल से सितंबर के बीच 28 गुना बढ़े बैंक धोखाधड़ी के मामले : आरबीआई

- **आरबीआई की रिपोर्ट में कहा गया कि 2023-24 में कुल जुमार्ना राशि दोगुनी से अधिक हो गई, जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक सबसे आगे रहे।**

पटना, एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार इस वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में बैंक धोखाधड़ी के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। इस अवधि में बैंक धोखाधड़ी की कुल 18,461 घटनाएं हुईं, जिनकी राशि 21,367 करोड़ रुपये थी। रिपोर्ट के अनुसार, यह पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में मामलों की संख्या (वित्त वर्ष 24 के अप्रैल-सितंबर में 14,480) में लगभग 28 प्रतिशत की वृद्धि और कुल राशि (2,623 करोड़ रुपये) में आठ गुना से अधिक की वृद्धि है। केंद्रीय बैंक ने अपनी ट्रेंड एंड प्रोग्रेस ऑफ बैंकिंग इन इंडिया रिपोर्ट में जानकारी दी है कि वित्त वर्ष 2023-24 में, इंटरनेट और कार्ड फ्रॉड कुल धोखाधड़ी राशि का 44.7 प्रतिशत और कुल मामलों का 85.3 प्रतिशत हिस्सा रहा।

रिपोर्ट में आगे कहा गया कि निजी क्षेत्र के बैंकों ने सभी धोखाधड़ी के मामलों में से 67.1 प्रतिशत की रिपोर्ट की, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को सबसे अधिक वित्तीय प्रभाव का सामना करना पड़ा। रिपोर्ट में बताया गया है कि 2023-24 में कार्ड और इंटरनेट धोखाधड़ी का हिस्सा सबसे अधिक था। जब प्रवर्तन कार्रवाइयों की बात आती है, तो बैंकों पर लगाए गए कुल जुमार्ने 2023-24 में 86.1 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। एफबी और छोटे वित्तीय बैंकों (एसएफबी) को छोड़कर सभी बैंक समूहों में 2023-24 के दौरान विनियमित संस्थाओं (आरई) पर लगाए गए जुमार्ने के मामलों में वृद्धि हुई। आरबीआई की रिपोर्ट में कहा गया कि 2023-24 में कुल जुमार्ना राशि दोगुनी से अधिक हो गई, जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक सबसे आगे रहे। सहकारी बैंकों पर लगाए गए जुमार्ने की राशि में वर्ष के दौरान कमी आई, जबकि जुमार्ना लगाने के मामलों में वृद्धि हुई। धोखाधड़ी फाइनेंशियल सिस्टम के लिए प्रतिष्ठा से जुड़े जोखिम, परिचालन जोखिम, व्यावसायिक जोखिम और वित्तीय स्थिरता के साथ ग्राहक विश्वास को लेकर कई चुनौतियां पेश करती हैं। आरबीआई ने कहा, आगे बढ़ते हुए, बैंकों को अपने जोखिम प्रबंधन मानकों, आईटी गवर्नेंस व्यवस्थाओं और ग्राहकों को जोड़ने तथा लेनदेन निगरानी प्रणालियों को मजबूत करने की निरंतर आवश्यकता है, ताकि संदिग्ध और असामान्य लेनदेन सहित बेईमान गतिविधियों पर लगाम लगाई जा सके। केंद्रीय बैंक डिजिटल लेंडिंग ऐप्स के सार्वजनिक संग्रह पर काम कर रहा है, ताकि ग्राहकों को इन सेवाओं की वैधता सत्यापित करने में मदद मिल सके।

मॉरीशस में सूर्यास्त तक झुका रहेगा आधा ध्वज

नई दिल्ली/ एजेंसी। मॉरीशस ने घोषणा की है कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के सम्मान में शनिवार को सूर्यास्त तक सभी सरकारी कार्यालयों और संस्थानों में उसका राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीन रामगुलाम के कार्यालय ने एक विज्ञप्ति में निजी क्षेत्र से भी झंडे को आधा झुका कर फहराने का आग्रह किया। मॉरीशस के विदेश मंत्री धनंजय रामफुल ने दिल्ली आकर पूर्व प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। मॉरीशस के प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा, भारत गणराज्य के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के बाद, जनता को सूचित किया जाता है कि उनके अंतिम संस्कार के दिन, आज शनिवार को सूर्यास्त तक सभी सरकारी भवनों पर मॉरीशस का ध्वज आधा झुका रहेगा। विज्ञप्ति में कहा गया है, निजी क्षेत्र से भी अपील की जाती है कि सभी ध्वज आधे झुके रहें। भारत में आर्थिक सुधारों के जनक कहे जाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का बृहस्पतिवार को निधन हो गया था। वह 92 साल के थे। सिंह ने देश के वित्त मंत्री के तौर पर भी काम किया था। प्रधानमंत्री के रूप में सिंह के कार्यकाल के दौरान मॉरीशस समेत कई प्रमुख देशों के साथ भारत के संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुआ था। सिंह का अंतिम संस्कार शनिवार को दिल्ली के निगमबोध घाट पर पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा और कई अन्य हस्तियों ने सिंह को अंतिम विदाई दी।

जेड प्लस सिक्योरिटी में रहेंगी मनमोहन सिंह की पत्नी गुरुशरण कौर

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को पूरे राजकीय सम्मान के साथ विदाई दी गई। नई दिल्ली के निगम बोध घाट पर दिवंगत पीएम का अंतिम संस्कार किया गया। इस मौके पर डॉ. सिंह की पत्नी गुरुशरण कौर और उनकी बेटियां मौजूद रही। 2019 में डॉ. मनमोहन सिंह का एसपीजी सिक्योरिटी कवर वापस ले लिया गया था। एसपीजी की जगह पर उन्हें जेड प्लस सुरक्षा मुहैया कराई गई। अब उनकी पत्नी गुरुशरण कौर को भी सीआरपीएफ जेड प्लस सुरक्षा मिलेगी। इस सुरक्षा घेरे में उनके पास बुलेटप्रूफ वाहन भी होगा। उनके आवास पर करीब चार दर्जन जवान मौजूद रहेंगे। डॉ. मनमोहन सिंह की एसपीजी सुरक्षा हटाकर जब उन्हें सीआरपीएफ की जेड प्लस सुरक्षा दी गई थी, तब उन्हें एसपीजी वाली हाई क्लास बुलेटप्रूफ बीएमडब्लू कार, जिसमें वे यात्रा करते थे, वही गाड़ी प्रदान कर दी गई थी। अब उनकी पत्नी गुरुशरण कौर के पास भी वही गाड़ी रहेगी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का गुरुवार देर रात एम्स में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। पीएम के पद से हटने के बाद डॉ. सिंह को मोतीलाल लाल नेहरू रोड पर स्थित बंगला नंबर 3 अलॉट किया गया था। पांच साल पहले विशेष सुरक्षा समूह (एसपीजी) को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष में बहस छिड़ गई थी। वजह, 2019 में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की एसपीजी सुरक्षा वापस ले ली गई थी। तब विपक्ष की तरफ से कोई शोर शराबा नहीं हुआ था। कुछ माह बाद जब गांधी परिवार के सदस्यों की एसपीजी सुरक्षा हटाई गई तो विपक्ष ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया था कि जानबूझकर और राजनीतिक कारणों से एसपीजी सुरक्षा वापस ली गई है।

नवंबर में गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतरे 111 दवाओं के नमूने

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने नवंबर में केंद्रीय औषधि प्रयोगशालाओं में जांचे गए 41 दवा नमूने मानक गुणवत्ता के नहीं (एनएसक्यू) पाए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इसके अलावा, राज्य औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं द्वारा जांचे गए 70 औषधि नमूनों को भी नवंबर में एनएसक्यू के रूप में चिन्हित किया गया है। एक या उससे ज्यादा निर्दिष्ट गुणवत्ता मानकों पर खरा नहीं उतरने पर किसी औषधि को एनएसक्यू माना जाता है। एक अधिकारी ने कहा, सरकारी प्रयोगशाला में जिन औषधियों का परीक्षण किया गया, केवल वे मानकों पर खरी नहीं उतरीं और इससे बाजार में उपलब्ध अन्य औषधि के संबंध में किसी प्रकार की चिंता की आवश्यकता नहीं है। नवंबर में दो औषधि नमूनों की पहचान नकली दवाओं के रूप में की गई थी। सूत्रों ने बताया कि इनमें से एक नमूना बिहार औषधि नियंत्रण प्राधिकरण और दूसरा सीडीएससीओ गाजियाबाद ने लिया था।

संक्षिप्त समाचार

नए साल पर एयर इंडिया दिल्ली के लिए शुरू करेगा नई उड़ान

ऋषिकेश, एजेंसी। नए साल के पहले दिन से यात्रियों को देहरादून-दिल्ली के लिए एयर इंडिया एक और विकल्प देने जा रहा है। इस हवाई रूट पर एयर इंडिया 175 सीटर विमान से नई उड़ान शुरू करने जा रहा है। खास बात ये होगी कि यह विमान सप्ताह में सातों दिन उड़ान भरेगी। वर्तमान में एयर इंडिया का सिर्फ एक विमान शाम करीब 3:20 बजे यात्रियों को लेकर देहरादून एयरपोर्ट पर उतरता है। लेकिन एक जनवरी से कंपनी का विमान दिल्ली से यात्रियों को लेकर प्रतिदिन सुबह 8:35 बजे देहरादून एयरपोर्ट पहुंचेगा। यहां से यात्रियों को लेकर विमान सुबह 9:50 बजे वापस दिल्ली के लिए उड़ान भरेगा। देहरादून एयरपोर्ट पर दिल्ली के लिए इंडिगो, एलायंस एयर पहले से ही अपनी फ्लाइट संचालित कर रहे हैं। लेकिन दिल्ली के लिए अधिक पैसेंजर होने के कारण एयर इंडिया नए साल से दिल्ली के लिए अपनी दूसरी उड़ान शुरू करने जा रहा है। इसके लिए कंपनी ने बुकिंग भी शुरू कर दी है। जिसका एक तरफ का किराया लगभग 4,251 रुपये हैं। एयरपोर्ट सूत्रों के अनुसार नए साल में कुछ और फ्लाइटों के बढ़ने की संभावनाएं हैं। वहीं नया साल मनाने के लिए कई मशहूर हस्तियों के भी देहरादून पहुंचने की संभावनाएं हैं।

पुलिस ने 18 वाहन किए सीज, 14 चालक गिरफ्तार

ऋषिकेश, एजेंसी। थाना मुनि की रेती पुलिस ने शराब पीकर और तेज गति से वाहन चलाते चालकों के खिलाफ अभियान चलाया। इस दौरान 18 वाहनों को सीज किया गया और 14 लोगों को गिरफ्तार किया गया। थाना पुलिस ने बुधवार की देर रात्रि को मधुबन तिराहा, शिवानंद गेट और तपोवन तिराहे पर चेकिंग अभियान चलाया। शराब पीकर और तेज गति से वाहन चलाने वालों के खिलाफ मोटर वाहन अधिनियम में कार्रवाई की गई। थाना प्रभारी निरीक्षक रितेश साह ने बताया कि शराब पीकर वाहन चलाने वाले 14 चालकों को गिरफ्तार कर चौपहिया व दोपहिया वाहनों को सीज किया गया। वहीं तेज गति से वाहन चलाने वाले कुल चार चालकों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए वाहन सीज किए गए हैं। इसके अलावा नियमों का उल्लंघन करने वाले 15 वाहन चालकों से आठ हजार रुपये का संयोजन शुल्क वसूला गया है। बताया कि अभियान आगे भी जारी रहेगा।

भाजपा में शामिल हुए निवर्तमान पार्षद जगत सिंह नेगी व बंगवाल

ऋ षिकेश, एजेंसी। कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने कांग्रेस पार्टी से निवर्तमान पार्षद जगत सिंह नेगी और पुष्कर बंगवाल को भाजपा की प्राथमिक सदस्यता दिलाई। मंत्री अग्रवाल ने कहा कि भाजपा में प्रत्येक कार्यकर्ता का सम्मान होता है, जो अन्य संगठन में नहीं है। भाजपा में संयम और धैर्य रखने वाले कार्यकर्ता को मान मिलता है। जिलाध्यक्ष रविंद्र राणा ने कहा कि जगत नेगी और पुष्कर बंगवाल के आने से पार्टी को फायदा होगा। जगत नेगी और पुष्कर बंगवाल ने कहा कि भाजपा के रीति और अनुशासन से प्रभावित होकर उन्होंने पार्टी का दामन थामा है। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष मनोज ध्यानी भी मौजूद रहे।

गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल होंगे अंशुल

ऋ षिकेश, एजेंसी। शहीद दुर्गामल्ल पीजी कॉलेज के छात्र अंशुल देवरानी का गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल होने के लिए चयन हुआ है। डोईवाला कॉलेज के प्राचार्य डॉ. डीपी भट्ट ने बताया कि बीए पांचवें सेमेस्टर के छात्र और एनसीसी कैडेट अंशुल दिल्ली में प्रधानमंत्री रैली में शामिल होंगे। छात्र का चयन होने पर मीडिया प्रभारी डॉ. राखी पंचोला, डॉ. एनडी शुक्ला, डॉ. अफरोज इकबाल समेत कई शिक्षकों ने खुशी व्यक्त की है।

चाइल्ड पोर्नोग्राफी के वीडियो शेयर करने पर दो पर केस

खटीमा, एजेंसी। चाइल्ड पोर्नोग्राफी का वीडियो शेयर करने पर पुलिस ने युवती समेत दो लोगों पर केस दर्ज किया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने आपत्तिजनक सोशल मीडिया में चाइल्ड पोर्नोग्राफी वीडियो अपलोड करने के मामले में प्रयुक्त मोबाइल नंबर की डिटेल के आधार पर चारुबेटा, मुंडेली निवासी प्रीतम सिंह के विरुद्ध केस दर्ज किया है। दूसरे मामले की जांच के बाद पुलिस ने इस्लाम नगर, उमरुखुर्द निवासी सीमा राणा को चिह्नित कर रिपोर्ट दर्ज की है।

भाजपा और कांग्रेस ने योद्धाओं को मैदान में उतारा, नामों का एलान किया, सूची जारी

नैनीताल , एजेंसी। नगर निकाय चुनाव की नामांकन प्रक्रिया के पहले दिन ही भाजपा और कांग्रेस ने अपने योद्धाओं की सूची जारी कर दी। कांग्रेस ने हल्द्वानी मेयर सीट पर ललित जोशी को टिकट दिया, जबकि भाजपा के प्रत्याशी का शनिवार को एलान हो सकता है।

नगर निकाय चुनाव की नामांकन प्रक्रिया के पहले दिन ही भाजपा और कांग्रेस ने अपने योद्धाओं की सूची जारी कर दी। कांग्रेस ने हल्द्वानी मेयर सीट पर ललित जोशी को टिकट दिया, जबकि भाजपा के प्रत्याशी का शनिवार को एलान हो सकता है। शुक्रवार को भाजपा ने जिले की पांचों नगर पालिका और एकमात्र नगर पंचायत लालकुआं के अध्यक्ष पद पर उम्मीदवारों की सूची रात करीब 10 बजे जारी की। वहीं कांग्रेस ने कुछ समय बाद मेयर के साथ ही चार नगर पालिका अध्यक्ष पदों के लिए भी प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी।

भाजपा ने छह निकायों में दिया टिकट = भाजपा ने नगर पालिका और नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के प्रत्याशी तय करने में सामान्य कार्यकर्ताओं को तवज्जो दी है। वर्षों की मेहनत और संगठन हित में किए गए कार्यों टिकट के लिए पैमाना साबित हुए। नैनीताल नगर पालिका सीट से जीवंती देवी, रामनगर से मदन जोशी, भवाली से प्रकाश आर्या, भीमताल से कमला आर्या, कालाढूंगी से

कविता वालिया को प्रत्याशी बनाया है। लालकुंआ नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए प्रेम पंडित को टिकट दिया है।

डैमेज कंट्रोल की कवायद तेज = नगर पालिका और पंचायत सीट के लिए भाजपा से नामों का एलान होने के बाद टिकट न मिलने से अन्य दावेदारों में नाराजगी है। टिकट का एलान होते ही नैनीताल जिले के सभी विधायक और संगठन के पदाधिकारी पार्टी के निर्देशों के बाद डैमेज कंट्रोल को रोकने के लिए अन्य दावेदारों और उनके समर्थकों को मना रहे हैं।

कांग्रेस के ये प्रत्याशी हुए घोषित = कांग्रेस ने नैनीताल नगर पालिका से सरस्वती खेतवाल, भीमताल से सीमा टम्टा, भवाली से पंकज कुमार आर्या और कालाढूंगी से भावना सती को अपना उम्मीदवार बनाया है। रामनगर पालिका और लालकुआं नगर पंचायत के लिए अभी घोषणा नहीं की है।

सामान्य महिला के आरक्षित हुई नैनीताल नगर पालिका अध्यक्ष सीट पर भाजपा ने जीवंती भट्ट को अपना प्रत्याशी बनाया है। वह भाजपा की संगठनात्मक कार्यकर्ता रही हैं। 18 वर्ष पूर्व भाजपा की सदस्य के रूप में राजनीति में कदम रखने वाली जीवंती भाजपा महिला मोर्चा की दो बार जिला अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। बताया जाता है कि जीवंती भट्ट को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी समर्थन प्राप्त है। वह लेक सिटी वेलफेयर क्लब समेत तमाम सामाजिक संगठनों से भी जुड़ी है। पिछले एक दशक के दौरान उनके द्वारा संगठन हित में किए गए कार्यों का आज उन्हें लाभ मिला है। जीवंती के पति सुशील भट्ट पेशे से डॉक्टर हैं और नैनीताल में अपना प्राइवेट क्लीनिक चलाते हैं।

महिला के लिए रिजर्व नगर पालिका अध्यक्ष पद पर कांग्रेस ने डॉ. सरस्वती खेतवाल को अपना प्रत्याशी बनाया है। तल्लीताल बाजार निवासी खेतवाल ने पिछली दफा सीट सामान्य रहते हुए निर्दलीय प्रत्याशी के रूप चुनाव लड़ा था। वह लंबे समय से समाजसेवा से जुड़ी हुई हैं और धार्मिक कार्यों में भागीदारी निभाती आई हैं। रेडक्रॉस से जुड़ीं डॉ. खेतवाल लगभग दो दशकों से अधिक समय से रक्तदाता क्लब से भी जुड़ी हुई है।

एससी महिला के लिए आरक्षित भीमताल नगर पालिका अध्यक्ष पद के लिए पार्टी की मंडल अध्यक्ष कमला आर्या और पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष बीना आर्या की ओर से दावेदारी की गई थी। शीर्ष नेतृत्व ने मंडल अध्यक्ष कमला आर्या पर भरोसा जताते हुए उन्हें पार्टी का उम्मीदवार बनाया। भाजपा अनुसूचित मोर्चा की प्रदेश महामंत्री रहने के साथ-साथ भाजपा अनुसूचित मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य रही हैं। कमला को टिकट मिलने की वजह पार्टी में उनका सक्रिय होना है। संगठन हित में किए गए कार्यों के साथ-साथ क्षेत्र की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने का उन्हें फायदा मिला है।

भीमताल नगर पालिका अध्यक्ष पद के लिए कांग्रेस ने सीमा टम्टा को प्रत्याशी बनाया है। वह डाकबंगला वार्ड (नंबर दो) की निवर्तमान सभासद हैं। पार्टी ने उन्हें अध्यक्ष पद का उम्मीदवार बनाकर कार्यकर्ताओं में भी जोश भरा है। उनके लिए अधिकतर पार्टी कार्यकर्ता टिकट मांग रहे थे। सीमा की सक्रियता भी टिकट मिलने में काम आई।

सामान्य हुई रामनगर पालिकाध्यक्ष सीट पर भाजपा ने अपने नगर मंडल अध्यक्ष मदन जोशी को टिकट दिया है। वह अन्य दावेदारों में सबसे आगे थे। उनके अलावा पूर्व पालिका अध्यक्ष भागीरथ लाल चौधरी, गणेश रावत, संजय डॉबी, मनीष अग्रवाल, सत्यप्रकाश शर्मा, नरेंद्र शर्मा, भूपेंद्र खाती सहित 22 दावेदार थे। मदन सांसद अनिल बलूनी और विधायक दीवान सिंह बिष्ट के करीबी माने जाते हैं। दोनों नेताओं की करीबी का उन्हें लाभ मिला। वह वर्ष 2002 में भाजपा के वार्ड अध्यक्ष और इसके बाद उन्होंने नगर व जिले की कार्यकारिणी में कई पद संभाले। वर्तमान में भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष है।

ओबीसी के लिए आरक्षित नगर पंचायत अध्यक्ष सीट पर भाजपा ने अपने पार्टी नेता और पूर्व सभासद प्रेमनाथ पंडित पर भरोसा जताया है। उनकी पत्नी राजलक्ष्मी पंडित नगर पंचायत की सभासद रह चुकी हैं।

रामपुर में हादसा : उत्तराखंड रोडवेज की ट्रैक्टर-ट्रॉली से भिड़ंत, चालक की मौत, कंडक्टर समेत 13 यात्री जख्म

रामपुर, एजेंसी। दिल्ली से हल्द्वानी जा रही उत्तराखंड रोडवेज की बस बिलासपुर में ट्रॉली से टकरा गई। हादसे में चालक की मौत और कंडक्टर समेत 13 यात्री घायल हुए हैं। हादसे की वजह चालक को नींद की झपकी आना बताया जा रहा है।

दिल्ली से हल्द्वानी जा रही उत्तराखंड परिवहन निगम की बस नैनीताल हाईवे पर बिलासपुर के पास चावल से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली से टकरा गई। हादसे में बस चालक की मौत हो गई जबकि कंडक्टर समेत 13 यात्री घायल हो गए। हादसे का कारण चालक को नींद की झपकी आना बताया गया है।

दिल्ली से हल्द्वानी जा रही रोडवेज बस शनिवार सुबह करीब

5 बजे बिलासपुर थाने के पास ट्रैक्टर-ट्रॉली से टकरा गई। बस में कुल 12 यात्री और चालक-परिचालक सवार थे। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस का आगे का हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया।

हादसे में बस चालक रमनदीप सिंह (निवासी करीमगंज, थाना बहेड़ी, बरेली) की मौके पर ही मौत हो गई। घटना में कंडक्टर समेत 12 यात्री घायल हुए। इन्हें पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) बिलासपुर ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद चार यात्रियों की हालत सामान्य होने पर उन्हें छुट्टी दे दी गई। सात घायलों को जिला अस्पताल रेफर किया गया। इन घायलों में से एक यात्री की हालत गंभीर होने पर उसे बरेली के लिए रेफर कर दिया गया है। हादसे की सूचना मिलते ही सहायक महाप्रबंधक (एजीएम) काठगोदाम राजेंद्र कुमार और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची। उन्होंने जिला अस्पताल में भर्ती घायलों का हालचाल लिया और दुर्घटना स्थल का निरीक्षण किया। एजीएम ने बताया कि बस हल्द्वानी डिपो की थी और इसमें चालक-परिचालक समेत कुल 14 लोग सवार थे। हादसे का प्राथमिक कारण बस चालक को नींद की झपकी आना बताया जा रहा है। फिलहाल इसकी जांच की जा रही है। टक्कर के बाद ट्रैक्टर-ट्रॉली और बस को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी गई है। मृतक चालक और घायलों के परिजनों को सूचना दे दी गई है।

33 हजार केवी की लाइन में फाल्ट आने से 12 गांवों की बिजली गुल

रूड़की, एजेंसी। 33 हजार केवी की विद्युत लाइन में फाल्ट आने से सुल्तानपुर क्षेत्र के करीब 12 गांवों में बिजली गुल हो गई। सुबह साढ़े सात बजे से गुल बिजली देर शाम तक भी बहाल नहीं हो पाई। इससे लोग पीने के पानी तक के लिए भी तरस गए। हैंडपंप के पानी से लोगों ने काम चलाया।

शुक्रवार सुबह से ही क्षेत्र में रिमझिम बारिश शुरू हो गई थी। इसके चलते सुबह 7:30 बजे से सुल्तानपुर क्षेत्र के खानपुर ब्रह्मपुर, बाकरपुर, कंकरखाता, शिवपुरी, रणजीतपुर, भिक्कमपुर अलावलपुर, रामपुर रायघटी, कबूलपुरी राय समेत 12 से अधिक गांव में विद्युत आपूर्ति बंद है। इसके चलते विद्युत उपकरण नहीं चल पाने से लोगों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रामीण प्रवेश कुमार, मुकेश कुमार, सोमपाल सिंह, जितेंद्र कुमार, मोनू कुमार, पंकज, दिनेश कुमार आदि ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र के गांव में हो रही विद्युत व्यवस्था पूरी तरह से चरमराई हुई है। कभी अघोषित विद्युत कटौती तो कभी विद्युत लाइन पर हो रहे कार्य के नाम पर आए दिन विद्युत आपूर्ति बाधित होती रहती है। ग्रामीणों का कहना है कि थोड़ी बरसात होते ही निरंजनपुर फीडर के सभी गांव की विद्युत आपूर्ति बंद कर दी जाती है।

शुक्रवार सुबह से ही हो रही हल्की बरसात में भी सुबह से ही विद्युत आपूर्ति नहीं हो पा रही है। इसके चलते विद्युत उपकरण नहीं चल पा रहे हैं। विद्युत मोटर नहीं चलने से पेयजल संकट और मोबाइल फोन चार्ज नहीं हो पा रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि हल्की बरसात में अन्य सभी जगह विद्युत आपूर्ति होती रहती है लेकिन निरंजनपुर फीटर से जुड़े सभी गांव में थोड़ी बरसात होते ही विद्युत आपूर्ति बंद कर दी जाती है।

ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में बंद पड़ी विद्युत आपूर्ति सुचारू करने के लिए ऊर्जा निगम के अधिकारियों से लगातार मांग की जा रही है।

गड़गड़ाहट से गूंज उठा हल्द्वानी, अचानक बदला मौसम और होने लगी तेज बारिश, सहम उठे लोग

हल्द्वानी, एजेंसी। हल्द्वानी में शनिवार सुबह से तेज बारिश हो रही है। जिससे कड़ाके की ठंड पड़ रही है। उत्तराखंड में अचानक मौसम बदला। नैनीताल जिले के हल्द्वानी में शनिवार सुबह से तेज बारिश हो रही है। जिससे कड़ाके की ठंड पड़ रही है। देहरादून मौसम विभाग ने पिथौरागढ़, नैनीताल समेत पर्वतीय जिलों में हल्की से मध्यम बारिश को लेकर अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार आगामी 24 घंटे में ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी हो सकती है। पंतनगर विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डॉ. आरके सिंह का कहना है कि अगले दो दिन हल्की बारिश होने के साथ शीत लहर का भी प्रकोप रहेगा।

मां से मिलने से पहले मिली मौत, घर से उठी दीक्षा की अर्थी तो मच गया कोहराम; हर आंख हुई नम

हल्द्वानी, एजेंसी। भीमताल बस हादसे में जान गंवाने वाली दमुवाढूंगा की दीक्षा प्रकाश होनहार छात्रा थी। तीन साल पहले उसने सर्वोच्च अंकों से इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की थी। इसके बाद पिथौरागढ़ कॉलेज में नर्सिंग बीएसएसी में प्रवेश लिया था। बुधवार को वह अपनी सहेलियों के संग हल्द्वानी के लिए निकली थी। भीमताल पहुंचने से पहले उसने मां को फोन किया और एक घंटे में मिलने की बात कही, लेकिन रास्ते में बस मौत बनकर खाई में समां गई। मां से मिलने से पहले मौत मिल गई।

गुरुवार को डॉ. सुशीला तिवारी अस्पताल में उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। सुबह नौ बजे उसका शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया। मां बेसुध हो गई। अर्थी उठते ही सहेलियां व बहनें फूट-फूटकर रोने लगी।

जवाहर ज्योति दमुवाढूंगा हल्द्वानी दीक्षा प्रकाश चार भाई बहनों में दूसरे नंबर की थी। पिता कैलाश परिवार से अलग रहते हैं। घर पर मां इंद्रा आर्या, बड़ी बहन सूचि, छोटी बहन भूमि व 12 वर्षीय भाई आदी रहता है। किराए के कमरे पर रहकर मां परिवार का पालन पोषण कर रही है।

गुरुवार को दीक्षा प्रकाश का शव जैसे ही पोस्टमार्टम के बाद घर पहुंचा तो मातम पसर गया। शव को घर के बाहर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था। बेटी की लाश देखते ही मां बेहोश हो गई। बहनें रोने लगी। आसपास के लोगों को हुजूम उमड़ पड़ा। हर आंख नम थी। जिसने भी दीक्षा को बचपन से हंसता-खेलता देखा वो रो रहा था। दीक्षा की सहेलियां भी घर पर पहुंची थी। थोड़ी-थोड़ी देर में उनकी आंखों ने दीक्षा को खोने के आंसू बह रहे थे।

दीक्षा की बड़ी बहन सूचि ने बताया कि मां ने उनकी परवरिश और पढ़ाई में कोई कमी नहीं की। पिथौरागढ़ से घर आने पर दीक्षा काफी खुश थी। भीमताल पहुंचने से पहले उसने मां से फोन पर बात की और एक घंटे में मिलने को कहा था। शाम को चार बजे फोन आया कि जो बस खाई में गिरी थी, उसमें दीक्षा भी थी। जिसे गंभीर चोट आई हैं। एसटीएच में उपचार चल रहा है। सुबह जब दीक्षा की मौत की खबर मिली तो घर में कोहराम मच गया।

दीक्षा प्रकाश होनहार के साथ मिलनसार भी थी। यही कारण था कि उसे देखने के लिए आसपास के इलाकों के सैंकड़ों लोग घर पर पहुंच गए थे। दीक्षा के पड़ोस में रहने वाली महिलाओं ने कहा कि दीक्षा की मां इंद्रा देवी ने कभी अपने बच्चों को गरीबी का एहसास नहीं होने दिया। खुद फटे कपड़े पहने, लेकिन बच्चों की परवरिश में कोई कमी नहीं की। वह आशा वर्कर हैं।

बच्चों ने दिखाया रास्ता : आबकारी विभाग ने मारा छापा, जब्त की देशी-कच्ची शराब

हल्द्वानी , एजेंसी। हल्द्वानी शहर के लामाचौड़ स्थित एक घर में छापेमारी कर आबकारी विभाग ने देसी शराब गुलाब के 67 पव्वे और कच्ची शराब के 75 पाउच बरामद किए।

हल्द्वानी शहर में फिल्मी सीन की तरफ पुलिस ने नौनिहालों की मदद से कच्ची शराब बरामद की। लामाचौड़ स्थित एक घर में छापेमारी कर आबकारी विभाग ने देसी शराब गुलाब के 67 पव्वे और कच्ची शराब के 75 पाउच बरामद किए।

बता दें कि आबकारी विभाग ने शुक्रवार को हल्द्वानी से लामाचौड़ तक करीब 10 होटल और ढाबों पर छापेमारी की। एक सूचना के आधार पर विभाग ने लामाचौड़ चौराहे के पास चंद्र किरण के घर छापेमारी

की। नीचे वाले कमरे में आरोपी ने दीवान बेड के अंदर छेद करके जगह बनाई थी। वहां से देशी शराब के 67 पव्वे बरामद किए। इसके बाद पुलिस किचन आदि में छापेमारी कर रही थी लेकिन कुछ नहीं मिल रहा था। घर में मौजूद छोटे बच्चे मौजूद थे। अधिकारियों ने बहला-फुसला कर बच्चों से पूछा कि जो सफेद पन्नी में पानी भरकर रखा जाता है। वह पापा-मम्मी कहां रखते हैं। बातों-बातों में बच्चों ने दूसरी मंजिल की तरफ इशारा किया। ऊपर दो कमरे थे। वहां विभाग ने सोफा कम बेड की तलाशी ली तो कच्ची शराब के 75 पाउच बरामद हुए। आरोपी चंद्र किरण पत्नी पूरन पर आबकारी अधिनियम की धारा 60 के अंतर्गत मुकदमा दर्ज किया गया। आबकारी निरीक्षक धीरेंद्र बिष्ट ने बताया कि आगामी चुनाव और नए साल को देखते हुए हल्द्वानी क्षेत्र में अवैध कच्ची शराब की भट्ठियों को नष्ट करना, अवैध शराब की ब्रिकी या परोसना के खिलाफ तलाशी अभियान जारी रहेगा।

फील्ड मैनेजर को जातिसूचक शब्दे कहकर धमकी दी

हरिद्वार, एजेंसी। रानीपुर कोतवाली क्षेत्र की एक कंपनी से निकालने पर कर्मचारी ने फील्ड मैनेजर को जातिसूचक शब्द कहते हुए धमकी दे डाली। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। जसवीर सिंह निवासी शिवालिक नगर ने शिकायत देकर बताया कि वह कंपनी में फील्ड मैनेजर है। उसके पास नितीश कुमार निवासी रोनी हजीपुर मुजफ्फरनगर यूपी फैक्टरी में सुपरवाइजर का कार्य करता था। गलती की वजह से उसे कंपनी ने हटा दिया। तब से वह रंजिश रखने लगा। आरोप है कि काम पर आते-जाते समय उसे जातिसूचक शब्द बोलता है। एक माह पहले जब वह अपने ऑफिस के बाहर आया तो उसने आकर गाली-गलौज कर फिर से जातिसूचक शब्द कहे। एसएचओ कमल मोहन भंडारी ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अलग-अलग इलाकों में चाकू लेकर घूमते हुए पुलिस ने तीन संदिग्धों को गिरफ्तार कर लिया। आर्म्स एक्ट में मुकदमा दर्ज कर आरोपियों का चालान कर दिया गया। कनखल एसओ मनोज नौटियाल ने बताया कि शमसान घाट पुल के पास से आरोपी सन्नी निवासी कुम्हारगढ़ा थाना कनखल को चाकू के साथ पकड़ा गया। ज्वालापुर कोतवाल प्रदीप बिष्ट ने बताया कि वाल्मीकि बस्ती पीएसी रोड से सुभाषनगर की तरफ जाने वाले रास्ते से आरोपी रोहन यादव उर्फ पीहू निवासी सादीपुर कृतिनगर थाना राजीव नगर नई दिल्ली को चाकू के साथ गिरफ्तार किया गया। शहर कोतवाल कुंदन सिंह राणा ने बताया कि शिव पुल (तिरछा पुल) के नीचे आड़ में चाकू लेकर खड़े आरोपी अर्जुन निवासी बजरीवाला ठोकर नंबर 10 थाना कनखल को पकड़ा गया।

नगर कोतवाली क्षेत्र में सट्टे की खाईबाड़ी करते हुए पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। जुआ अधिनियम में मुकदमा दर्ज कर आरोपी का चालान कर दिया गया।

भाजपा ने पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए राजघाट में जगह न देकर सिख समुदाय का अपमान किया-संजय सिंह

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए राजघाट परिसर में जगह न देने पर आम आदमी पार्टी ने भाजपा पर तीखा हमला बोला है। आप के वरिष्ठ नेता एवं सांसद संजय सिंह का कहना है कि भाजपा ने पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए राजघाट में जगह न देकर सिख समुदाय का अपमान किया है। अभी तक देश के लगभग सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों का अंतिम संस्कार राजघाट में ही हुआ है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ यह भेदभाव भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच को दिखाता है। मोदी जी एक पूर्व प्रधानमंत्री का नाम बताएं, जिसका अंतिम संस्कार निगमबोध में हुआ हो।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि सबसे ज्यादा अफसोस की बात है कि ऐसे मुद्दे पर भी हम लोगों को बात करनी पड़ रही है। यह दिखाता है कि सरकार की सोच कितनी छोटी और ओछी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मैं पूछना चाहता हूं कि भारत के एक महान अर्थशास्त्री जिनकी पूरी दुनिया में कद्र है। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने अपनी जिंदगी के दस वर्ष इस देश को आगे बढ़ाने के लिए लगाए। डॉ. मनमोहन सिंह सिख समाज से आने वाले भारत के एक मात्र प्रधानमंत्री हैं। इससे पहले देश के लगभग सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों का अंतिम संस्कार राजघाट परिसर में हुआ है। लेकिन ये लोग राजघाट परिसर में डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए जगह देने को तैयार नहीं हैं। यह भाजपा की सोच है। यह अपने आप को संस्कारी पार्टी कहते हैं। यह अपने आप को दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी कहते हैं। यह दुनिया की सबसे बड़ी है, लेकिन सबसे छोटी मानसिकता वाली पार्टी है। मुझे बहुत अफसोस है। इससे कहीं न कहीं पूरी दुनिया में रह रहे और भारत में रहने वाला एक-एक व्यक्ति शर्मसार है कि मोदी सरकार यह क्या कर रही है? देश के प्रधानमंत्री रह चुके एक व्यक्ति को यह राजघाट परिसर में जगह देने के लिए तैयार नहीं है? एक पूर्व प्रधानमंत्री का नाम बताइए जिसका अंतिम संस्कार निगम बोध घाट में हुआ हो। फिर चाहे वो अटल बिहारी वाजपेयी हों, राजीव गांधी हों या इंदिरा गांधी हों।

संजय सिंह ने आगे कहा कि यह भेदभाव क्यों किया जा रहा है? यह दिखाता है कि दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी, छोटी मानसिकता वाली और छोटे दिल वाली पार्टी है। यह भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी की सोच को दिखाता है। डॉ. मनमोहन सिंह सिख समाज से आने वाले एकमात्र प्रधानमंत्री हैं। इससे पंजाब में रहने वाले लोग और पूरी दुनिया में रह रहे सिख समाज के लोग अपने आप को अपमानित महसूस कर रहे होंगे। इस देश के 144 करोड़ लोग जो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था में आस्था रखते हैं, जो डॉ. मनमोहन सिंह के किए गए कार्यों की सराहना करते हैं, उनसे उन्हें भी तकलीफ हुई होगी। आज पूरी दुनिया में यही छपेगा कि भारत में एक ऐसी सरकार है जो अपने पूर्व प्रधानमंत्री के लिए राजघाट के परिसर में जगह देने के लिए तैयार नहीं है। सरकार उनके परिवार की इच्छा के अनुरूप अंतिम संस्कार और अंत्येष्टि करने के लिए तैयार नहीं है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।

वहीं आप के वरिष्ठ नेता एवं कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह खबर सुनकर मैं स्तब्ध हूं कि देश के दस साल तक प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह को, जिसे पूरी दुनिया एक विद्वान मानती है। उनकी आर्थिक नीतियां दुनियाभर के विश्वविद्यालयों में पढ़ी और पढ़ाई जाती हैं। जिन्होंने देश को आर्थिक मंदी से बचाया। उदारीकरण में देश को आगे ले गए। एक सिख समुदाय से आने वाले प्रधानमंत्री का दिल्ली के निगम बोध घाट में अंतिम संस्कार हुआ। निगम बोध घाट डॉ. मनमोहन सिंह के लिए? क्या हमारी देश की राजनीति इतनी निम्न हो गई कि केंद्र सरकार देश के एक विद्वान प्रधानमंत्री के लिए दिल्ली में एक हजार गज जमीन भी नहीं दे पा रही है? यह शर्मसार करने वाली बात है। इन मामलों के अंदर राजनीति नहीं करनी चाहिए।

दिसंबर वाली बारिश ने दिल्ली में तोड़ा 15 साल का रिकॉर्ड

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के चलते दिल्ली समेत नॉर्थ वेस्ट इंडिया में बारिश हो रही है, जिससे कारण दिल्ली में कई जगहों में जलभराव और जाम की स्थिति पैदा हो गई। वहीं पहाड़ों में हो रही भीषण बर्फबारी की वजह से तापमान माइनस में पहुंच गया है। देश की राजधानी दिल्ली में एक बार फिर बारिश का दौर शुरू हो गया है। दिल्ली और आसपास के इलाकों में शुक्रवार 27 दिसंबर को मौसम ठंडा रहा, बादल छाए रहे और जमकर बारिश हुई। मौसम विभाग के मुताबिक, दिल्ली में आज भी ज्यादातर स्थानों पर कोहरा रहने की संभावना है। वहीं आंधी के साथ रुक-रुक कर बारिश होगी। आईएमडी के अनुसार, दिल्ली में 28 दिसंबर को अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 12 डिग्री सेल्सियस रहने की उम्मीद है। विभाग ने तेज हवाओं और कोहरे की स्थिति को देखते हुए दिल्ली में येलो अलर्ट जारी किया है। बारिश की वजह से अधिकतर स्थानों पर न्यूनतम तापमान में मामूली वृद्धि हुई है, जिससे लोगों को ठंड से कुछ राहत मिली है। दिल्ली में 27 दिसंबर को सुबह से ही मौसम शुष्क था। 27 दिसंबर को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली का न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 14.6 डिग्री सेल्सियस था। वहीं दिनभर काली घटा छाई रहीं और रुक रुक कर बारिश हुई। मौसम विभाग के मुताबिक, राष्ट्रीय राजधानी में पिछले 15 वर्षों में दिसंबर में सबसे अधिक बारिश दर्ज की गई। यूपी में भी मौसम लगातार करवट ले रहा है। विभाग ने राज्य में ओलावृष्टि और बारिश को लेकर येलो और ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। आईएमडी ने जिन जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है वो बुलंदशहर, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर हैं। पटना स्थित मौसम विज्ञान केंद्र अनुसार, सक्रिय मौसमी सिस्टम की वजह से बिहार में भी बारिश होने की संभावना बन रही है। बारिश की वजह से तापमान में गिरावट आएगी, जिससे ठंड बढ़ेगी।

शीशमहल का काला सच जनता के सामने लाएं केजरीवाल: विजेंद्र गुप्ता

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने आज एक बार फिर से आम आदमी पार्टी के नेता एवं दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास 6, फ्लैग स्टाफ रोड में किए गए अवैध निर्माण और उसमें लगाये गये महंगे संसाधनों को लेकर केजरीवाल को कटघरे में खड़ा किया। गुप्ता ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा कि वे खुद सामने आकर जनता को अपने इस शीश महल का काला सच बतायें।

दिल्ली प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए विजेंद्र गुप्ता ने अरविंद केजरीवाल से सवाल किया कि आखिर उनकी ऐसी क्या योजना थी, जिसमें दो सौ करोड़ रुपये की लागत से अवैध निर्माण करने की तैयारी की जा रही थी।

गुप्ता ने आम आदमी पार्टी के ईमानदार मुखिया पर तंज कसते हुए कहा कि सभी सात सरकारी संपत्तियों को मिलाने के लिए किसी सक्षम अथॉरिटी से अनुमति नहीं ली गई और इसी कारण सरकारी रिकॉर्ड में आज भी ये संपत्तियां बंगला नंबर 45, 47 राजपुर रोड और 8-ए तथा 8-बी फ़्लैग स्टाफ रोड के रूप में ही दर्ज हैं, जबकि 6, फ्लैग स्टाफ रोड का हिस्सा बनने के बाद इनका कोई अस्तित्व ही नहीं बचा है। गुप्ता ने कहा कि 6, फ्लैग स्टाफ रोड के मुख्यमंत्री आवास पर कुछ और भी अवैध निर्माण अधूरा पड़ा है, जिसका खुलासा होने के बाद केजरीवाल ने आनन फानन में उस निर्माण कार्य को बंद करवा दिया।

गुप्ता ने कहा कि यह निर्माण कार्य बदस्तूर जारी रहता यदि विपक्ष इस मामले को जनता के सामने ना लाता। गुप्ता ने कहा कि इसमें सिर्फ निर्माण कार्य में ही अनियमितताएं नहीं बरती गईं, बल्कि इस सरकारी आवास में करोड़ों रुपये का आरामदायक लग्जरी साजो-सामान भी लगा दिया गया। यह वह दौर था जब देश कोरोना महामारी से जूझ रहा था और केजरीवाल अपने इस आलीशान शीश महल को सजाने के लिए इसमें महंगे सामान को जुटाने की खातिर नई शराब नीति की इबारत लिख रहे थे। पुरानी शराब नीति के होते हुए भी ह्नई शराब नीतिह बनाने का मकसद सिर्फ शराब माफिया को फायदा पहुंचाना था, जिसके बदले में केजरीवाल ने अपने शीश महल में सोने की कमोड, 28 लाख के टीवी, करोड़ों के पर्दे, महंगे सोफे, रीक्लाइनिंग चेयर्स जैसा लग्जरी सामान जुटा लिया।

गुप्ता ने बताया कि 2022 में पीडब्ल्यूडी ने बतौर मुख्यमंत्री केजरीवाल के इस भवन में उन्हें जो जो सामान उपलब्ध करवाया था और 2024 पर जब उन्होंने उसे खाली किया और उस समय जो इन्वेंटरी लिस्ट बनाई गई, दोनों में बड़ा अंतर था। 2024 में बंगले में लगा सामान 2022 में उपलब्ध करवाये गये सामान से आठ गुना ज्यादा पाया गया।

गुप्ता ने कहा कि ऐसे में सवाल उठता है कि यदि पीडब्ल्यूडी ने यह सामान नहीं दिया तो यह सामान आया कहां से? गुप्ता ने सवाल किया कि क्या केजरीवाल ने खुद यह सामान अपने पैसों से खरीदा तो उसका खुलासा करें। लेकिन इस पूरे मामले में केजरीवाल की चुप्पी जता रही है कि शराब माफिया ने ही उन्हें यह सामान दिया, जिसके फायदे के लिए केजरीवाल ने शराब की बिक्री पर मिलने वाले कमीशन को 5 फीसदी से बढ़ाकर 12 फीसदी कर दिया और इस बढ़ाई गई कमीशन की रकम का मोटा हिस्सा केजरीवाल को सहूलियत और आरामदायक संसाधन सामान उपलब्ध करवाने में खर्च किया गया।

गुप्ता ने कहा कि इस मामले में भ्रष्टाचार की शिकायत विपक्ष द्वारा किए जाने के बाद ही केंद्रीय सतर्कता आयोग में शिकायत दर्ज करवाने के बाद आयोग ने दिल्ली सतर्कता विभाग को जांच के लिये कहा और जिसने जांच को आगे बढ़ाते हुए लोक निर्माण विभाग के प्रमुख सचिव को इस मामले में पांच दिन के अंदर अपनी रिपोर्ट देने के लिए कहा, लेकिन अभी तक उसकी ओर से कोई जवाब नहीं दिया गया है।

दिल्ली में महिला सम्मान योजना पर विवाद के बाद एलजी ने दिए जांच के आदेश

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली में महिला सम्मान योजना को लेकर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। पक्ष-विपक्ष के बार-पलटवार के बीच उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने महिला सम्मान योजना की जांच के आदेश दिए हैं। एलजी ने इसे लेकर एक लेटर भी जारी किया है। उन्होंने इस संबंध में डिविजनल कमिश्नर को जांच का जिम्मा सौंपा है। उपराज्यपाल ने लोगों के डेटा को लेकर चिंता जाहिर की है। उन्होंने कहा है कि डेटा की गोपनीयता भंग की जा रही है। एलजी ने कांग्रेस के आरोपों की जांच का भी आदेश दिया है। दरअसल पिछले दिनों कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने एलजी को महिला सम्मान योजना के लिए चिट्ठी लिखी थी। जिसमें उन्होंने महिला सम्मान योजना की जांच की मांग की थी।

एलजी की ओर से क्या कहा गया?

दिल्ली के उपराज्यपाल ने अपने आदेश में संदीप दीक्षित की चिट्ठी का जिक्र किया और कहा कि गैर-सरकारी लोग दिल्ली में महिलाओं से फॉर्म भरवा रहे हैं और उनका व्यक्तिगत डेटा एकत्र कर रहे हैं और दावा कर रहे हैं कि अगर आप सत्ता में आती है तो इस विवरण का उपयोग उन्हें 2100 रुपये मासिक भत्ता देने के लिए किया जाएगा। इसलिए डेटा की गोपनीयता को लेकर मामले में जांच की जाए। इसके अलावा, ह्यपुलिस आयुक्त फील्ड अधिकारियों को निर्देश दे सकते हैं कि वे ऐसे लोगों के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई करें जो लाभ देने की आड़ में भोले-भाले नागरिकों की निजी जानकारी एकत्र करके उनकी निजता का उल्लंघन कर रहे हैं। डीसीपी को सरकारी योजनाओं के फर्जी नामांकन के लिए शिविर आयोजित करने वाले निजी व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई करने की सलाह दी जा सकती है।

सबसे पहले कुछ दिन पहले दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की ओर से पब्लिक नोटिस जारी किया गया था। जिसमें उन्होंने लिखा है कि एक राजनीतिक पार्टी महिलाओं को 2100 रुपये महीने देने का दावा कर रही है लेकिन विभाग की ओर से ये स्पष्ट किया जाता है कि इस तरह की किसी स्कीम के बारे में सूचित नहीं किया गया है। विभाग ने इन योजनाओं के लिए प्रार्थना पत्र लेने-देने के खिलाफ सार्वजनिक नोटिस जारी कर लोगों से अपील की है। इसी तरह दिल्ली सरकार के परिवार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के विशेष सचिव की तरफ से सार्वजनिक सूचना जारी कर स्पष्ट किया कि दिल्ली सरकार के पास आज तक कोई ऐसी कथित संजीवनी योजना अस्तित्व में नहीं है। जिस पर जमकर बवाल हुआ।

विपक्ष ने लगाए धोखा करने के आरोप

दक्षिणी दिल्ली से पूर्व बीजेपी सांसद रमेश बिधूड़ी ने आम आदमी पार्टी पर महिला सम्मान और संजीवनी योजना के रजिस्ट्रेशन पर सवाल उठाए, और इन दोनों को फ्रॉड बताया है, साथ ही इसके लिए आम आदमी पार्टी के खिलाफ [illegible] दर्ज करने की मांग की है। वहीं यूथ कांग्रेस की तरफ से आम आदमी पार्टी (आआपा) के संयोजक अरविंद केजरीवाल के खिलाफ संसद मार्ग थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है। अरविंद केजरीवाल पर गुमराह करने और धोखा देने का आरोप लगाया। वहीं 2100 रुपये मासिक भुगतान करने की आम आदमी पार्टी की घोषणा को लेकर एक महिला ने दक्षिणी दिल्ली में पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने कहा कि महिला द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत की जांच कर रहे हैं, जिसमें महिला सम्मान योजना के नाम पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया है।

महिला सम्मान योजना के पंजीकरण के लिए लग रही लंबी लाइनें

वहीं इस सब के बीच दिल्ली के अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों में आम आदमी पार्टी के विधायक दफ्तरों के बाहर महिलाओं, लड़कियों और बुजुर्गों की लंबी-लंबी लाइनें देखने को मिल रही हैं। महिलाएं अपने वोटर आईडी कार्ड के साथ इस योजना का लाभ लेने के लिए कतार में खड़ी हैं।

संक्षिप्त खबरें

बस में सामान चुराने वाले गिरोह का भंडाफोड़

नई दिल्ली। आईपी एस्टेट पुलिस ने ऑटो-बस में यात्रियों के बैग से सामान चुराने वाले गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इसमें दो चोरी का सामान खरीदने वाले रिसीवर भी हैं। इनके कब्जे से करीब नौ ग्राम सोना और चोरी के अन्य सामान बरामद हुए हैं। पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे की फुटेज के आधार पर मिंटो रोड से आमिर और अब्दुल को गिरफ्तार किया। आरोपियों ने बताया कि चोरी के सामान को मोहम्मद असद और मोहम्मद साहिल को बेचा था। फिर पुलिस ने दोनों को तुर्कमान गेट इलाके से गिरफ्तार किया।

एनसीपी ने 11 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी, अजीत पवार गुट) भी हिस्सा लेने जा रही है। शनिवार को पार्टी ने 11 उम्मीदवारों की अपनी पहली सूची जारी कर दी है। उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में पार्टी द्वारा कुछ अन्य विधानसभा सीटों पर भी प्रत्याशी उतारे जाएंगे। जानकारी के अनुसार, एनसीपी ने बादली से मुलायम सिंह को दिल्ली कांग्रेस प्रमुख देवेंद्र यादव के खिलाफ टिकट दिया है। बुराड़ी से रतन त्यागी, चांदनी चौक से खालिद उर रहमान, बल्लीमारान से मोहम्मद हारुन और ओखला से इमरान सैफी को उम्मीदवार बनाया गया है। छतरपुर से नरेंद्र तंवर, गोकुलपुरी से जगदीश भगत, मंगोलपुरी से खेम चंद, लक्ष्मी नगर से नमहा, सीमापुरी से राजेश लोहिया और संगम विहार से कमर अहमद को पार्टी ने अपना प्रत्याशी घोषित किया है। दिल्ली विधानसभा के लिए चुनाव अगले वर्ष फरवरी में होने की उम्मीद है। इसके लिए जनवरी के पहले सप्ताह में चुनाव आयोग तारीख का ऐलान कर सकता है। सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी ने सभी 70 सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए हैं, जबकि कांग्रेस ने अब तक 47 सीटों पर उम्मीदवारों की सूची जारी की है। वहीं, भाजपा भी जल्द ही अपने उम्मीदवार घोषित कर सकती है।

अवैध रूप से रह रहा बांग्लादेशी दोबारा डिपोर्ट किया

नई दिल्ली । आरके पुरम पुलिस ने दिल्ली में अवैध रूप से रह रहे एक बांग्लादेशी को दोबारा डिपोर्ट किया है। दक्षिणी पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि आरोपी वर्ष 1990 से लेकर 2004 तक दिल्ली के ढोलक बस्ती, यमुना पुस्ता में अवैध रूप से रह रहा था। 2004 में इसकी पहचान कर इसे बांग्लादेश वापस भेज दिया गया था, लेकिन फिर से बेनापोल-पेट्रापोल बॉर्डर से होते हुए वर्ष 2022 में भारत आ गया और छोटे ढाबों में काम करने लगा। इसकी पहचान 50 वर्षीय फिरोज मुल्ला के रूप में हुई है। यह बांग्लादेश के जिला मदारीपुर स्थित साहिब का हट्ट गांव का रहने वाला है। पुलिस के मुताबिक, 27 दिसंबर को सूचना मिली कि आरके पुरम सेक्टर दो स्थित हनुमान मजदूर कैंप में एक अवैध रूप से रह रहा बांग्लादेशी कमरा ढूंढ रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस ने मौके पर छापा मारकर आरोपी फिरोज मुल्ला को गिरफ्तार कर लिया।

एलजी ने दिए जांच के आदेश तो भाजपा पर भड़के केजरीवाल

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आआपा) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को प्रेस वार्ता कर अपनी योजनाओं का बचाव किया और भाजपा पर जमकर हमला बोला। केजरीवाल ने कहा कि कुछ दिन पहले हमने दो योजनाओं का ऐलान किया था। इसमें एक महिला सम्मान योजना के तहत चुनाव जीतने पर 2100 रुपये हर महीने देने की बात थी। कैबिनेट ने एक हजार देने की योजना पास की थी। दूसरी योजना बुजुर्गों को फ्री में इलाज देने की थी। केजरीवाल ने दावा किया कि इन दोनों योजनाओं से भाजपा की नींद उड़ गई है। केजरीवाल ने भाजपा पर हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि इनके लोग गुंडे भेजकर हमारे कैम्प हटाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के चुनाव लड़ने का एक ही मकसद है कि महिला सम्मान योजना, बुजुर्गों की स्वास्थ्य योजना, फ्री बिजली-पानी सब रोक देना है। केजरीवाल ने महिला सम्मान योजना की एलजी द्वारा जांच के आदेश देने पर कहा कि यह भाजपा ने एक संकेत दिया है कि वो अगर जीत गए तो सारी योजना बंद करा देंगे। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा के नेता खुले में लोगों को रुपये बांट रहे हैं लेकिन उनकी कोई जांच नहीं कर रहा है। उन पर कोई करवाई नहीं हो रही है। आगे उन्होंने कांग्रेस की शिकायत पर कहा कि भाजपा की हिम्मत नहीं हुई कि वह खुद शिकायत करे। उन्होंने कांग्रेस से मिलकर उनसे शिकायत करवाई। भाजपा और कांग्रेस मिलकर हमे हराना चाह रहे हैं। केजरीवाल ने कहा कि अगर भाजपा को वोट दिया तो वह दिल्ली में रहना मुश्किल कर देंगे, लोगों को दिल्ली छोड़कर जाना पड़ेगा, क्योंकि वह जीतने के बाद सबसे पहले सारी योजनाओं को बंद कर देंगे। अंत में उन्होंने कहा, भगवान मेरे साथ है, आप लोग खूब रजिस्ट्रेशन कराओ, आआपा को जिताओ। मैं देखता हूं कि कैसे योजना बंद करते हैं।

आर के पुरम में नाले का बड़ा हिस्सा धसा, 25 फीट गड्ढे में समाई कार

नई दिल्ली। दिल्ली के आर के पुरम सेक्टर 9 में शनिवार रात संगम सिनेमा के पास स्थित नाले का लेंटर धसने से सड़क का एक बड़ा हिस्सा ध्वस्त हो गया। इस घटना में लगभग 25 फीट लंबा और 10 फीट चौड़ा गड्ढा बन गया, जिसमें एक कार और एक बाइक समा गई। हालांकि, गनीमत यह रही कि इस हादसे में कोई भी घायल नहीं हुआ।

इस घटना के पीछे शुक्रवार रात को हुई तेज बारिश को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। भारी वर्षा के चलते नाले के लेंटर पर बढ़ते दबाव ने उसे तोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। स्थानीय लोगों ने बताया कि नाले की हालत पिछले कई महीनों से खराब थी, और इस प्रकार की अनहोनी की आशंका पहले से ही जताई जा रही थी। घटना की जानकारी मिलने के बाद, स्थानीय लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत कार्य शुरू किया। एक क्रेन की मदद से गड्ढे में फंसी बाइक और कार को निकाला गया। इस दौरान प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि यह क्षेत्र एमसीडी का पुराना नाला है, जिसे समय पर मरम्मत की आवश्यकता थी।

रमेश, जो घटना के प्रत्यक्षदर्शी थे, ने कहा, ह्लयह नाला पूरी तरह से डैमेज हो चुका था। कब, कहां और कैसे घटना हो जाएगी, यह किसी को नहीं पता था। गनीमत है कि उस वक्त गाड़ी में कोई व्यक्ति नहीं था। सुरक्षा मानकों की अनदेखी इस घटना ने स्थानीय प्रशासन की लापरवाही को उजागर किया है, जो बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के प्रति गंभीरता से विचार नहीं कर रहा है। लोग अब सवाल उठा रहे हैं कि क्या दिल्ली में बुनियादी ढांचे की सुरक्षा को लेकर प्रशासन की प्राथमिकताएं सही हैं या नहीं। इसके अलावा, शुक्रवार की बारिश के कारण दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में कई पेड़ भी गिर गए, जिससे यातायात प्रभावित हुआ। स्थानीय निवासियों ने प्रशासन से यह मांग की है कि इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए शीघ्र और प्रभावी कदम उठाए जाएं।

नमकीन बनाने वाली फैक्टरी में सिलेंडर विस्फोट, छह घायल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के नजफगढ़ इलाके में आज सुबह नमकीन बनाने वाली एक फैक्टरी में सिलेंडर से रिस रही गैस से अचानक आग लग गई। इस दौरान उस सिलेंडर में धमाका हो गया। हादसे में फैक्टरी के छह कर्मचारी झुलस गए।

मामले की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस व दमकलकर्मियों ने सभी घायलों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया। जहां हालत बिगड़ती देख सभी को डॉक्टरों ने सफदरजंग अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। घायलों की पहचान शिवम, अमित, अमित सिंह, चंदन, जयपाल और वासुदेव के रूप में हुई है। सभी का अस्पताल में इलाज चल रहा है।

दमकल विभाग के अनुसार सुबह 8:16 बजे नंगली सकरावती औद्योगिक क्षेत्र शमशान घाट रोड नजफगढ़ की एक फैक्टरी में आग लगने की सूचना मिली। पहले पांच गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। इस बीच 12 और गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। दमकल अधिकारी ने बताया कि उनके पहुंचने से पहले सभी घायलों को आसपास के लोगों ने अस्पताल में भर्ती करा दिया था।

तमंचा के साथ रील बनाकर डाला फेमस होने इंस्टाग्राम पर

सोशल मीडिया पर हथियार के साथ फोटो पोस्ट करके अपने दोस्तों में, अपने जानकारी में सनसनी फैलाने वाले एक शख्स को बाहरी जिला पुलिस के स्पेशल स्टाफ की टीम ने गिरफ्तार किया है। इसके पास से कंट्री मेड पिस्टल और जिंदा कारतूस भी बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान धर्मेंद्र के रूप में हुई है, यह सुलेमान नगर किराड़ी का रहने वाला है। डीसीपी आउटर सचिन शर्मा ने बताया कि 25 दिसंबर को हेड कांस्टेबल विकास कुमार को जानकारी मिली थी। इंस्टाग्राम पर एक रील वायरल हो रहा है, जिसमें एक युवक ने हथियार के साथ पोस्ट किया है। उस रील की जांच पुलिस ने शुरू की, टेक्निकल सर्विलांस से पता लगाया। एसीपी ऑपरेशन नरेंद्र खत्री की देखरेख में इंस्पेक्टर रोहित, सब इंस्पेक्टर विपिन कुमार, सहायक सब इंस्पेक्टर मुरारी लाल और कांस्टेबल संदीप की टीम ने 24 घंटे की जांच के बाद इसके बारे में पता लगाया।

ये आदेश एलजी नहीं, अमित शाह के ऑफिस से आया है, महिला सम्मान योजना के जांच के आदेश पर भड़के केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने महिला सम्मान योजना की जांच के आदेश दिए हैं। इसे लेकर अरविंद केजरीवाल ने भाजपा पर हमला बोला है। केजरीवाल का कहना है कि भाजपा दिल्ली में महिला सम्मान योजना रोकना चाहती है। ये आदेश एलजी ऑफिस से नहीं, अमित शाह के ऑफिस से आया है। भाजपा महिलाओं का सम्मान नहीं करती है। भाजपा दिल्ली चुनाव में हार मान चुकी है। दिल्ली में महिला सम्मान योजना को महिलाओं का पूरा समर्थन मिल रहा है। अब तक 22 लाख से ज्यादा महिलाओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है।

केजरीवाल ने कहा कि महिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना से दिल्ली के लोग खुश थे। भाजपा इन योजनाओं को रोकना चाहती है। भाजपा महिला सम्मान योजना से बौखला गई है। भाजपा वाले दिल्ली में पैसे बांट रहे हैं। मैंने कहा था कि चुनाव जीतने के बाद हम महिलाओं को 2100 रुपए देंगे और 60 साल से ऊपर के बुजुर्गों को मुफ्त इलाज देंगे। ये दोनों योजनाएं जनता के लिए इतनी फायदेमंद थीं कि लाखों लोगों ने पहले ही इनके लिए रजिस्ट्रेशन करा लिया था। इससे भाजपा घबरा गई, कई भाजपा नेताओं ने मुझसे कहा कि जीतना तो छोड़िए, कई जगह भाजपा की जमानत जब्त हो जाएगी।

केजरीवाल ने कहा कि पहले उन्होंने अपने गुंडे भेजे, फिर पुलिस भेजकर रजिस्ट्रेशन कैंप उखाड़ दिया, आज उन्होंने फर्जी जांच के आदेश दे दिए कि जांच होगी। किस बात की जांच होगी? हमने चुनावी घोषणा की थी कि चुनाव जीतेंगे तो इसे लागू करेंगे। मुझे खुशी है कि इस कदम से भाजपा ने साफ कर दिया है कि वे चुनाव क्यों लड़ रहे हैं। आज उन्होंने बता दिया है कि अगर आप उन्हें वोट देंगे तो वे महिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना को लागू नहीं करेंगे। वे बसों में महिलाओं की मुफ्त यात्रा बंद कर देंगे, वे आपकी मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मोहल्ला क्लीनिक, मुफ्त इलाज और मुफ्त शिक्षा बंद कर देंगे।

उपराज्यपाल ने महिला सम्मान योजना के जांच के आदेश दिए

एलजी सचिवालय ने महिला सम्मान योजना के जांच के आदेश दिए हैं। एलजी सचिवालय ने दिल्ली के मुख्य सचिव को निर्देश दिए हैं। डिविजनल कमिश्नर से जांच करने को कहा गया है। सचिवालय ने पुलिस कमिश्नर से कहा है कि वे उन लोगों के खिलाफ कानून के मुताबिक कार्रवाई करें जो लाभ देने की आड़ में डेटा की गोपनीयता भंग कर रहे हैं।

पूर्व बीजेपी सांसद प्रवेश साहिब सिंह ने आम आदमी पार्टी पर मानहानि की साजिश के मामले की शिकायत की

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

पश्चिम दिल्ली से पूर्व बीजेपी सांसद प्रवेश साहिब सिंह ने डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस (डीसीपी) के पास एक औपचारिक शिकायत की है, जिसमें उन्होंने उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने, और धन उगाही के लिए जानबूझकर चलाए जा रहे एक अभियान का आरोप लगाया है। अपनी शिकायत में प्रवेश साहिब सिंह ने आम आदमी पार्टी (आप) की सदस्य श्रीमती उषा और पार्टी के अन्य नेताओं को इस साजिश में शामिल होने का आरोप लगाया है।

यह विवाद तब शुरू हुआ जब आम आदमी पार्टी नेता उषा ने एक राष्ट्रीय न्यूज चैनल पर सिंह पर आरोप लगाया कि उन्होंने उन्हें बीजेपी में शामिल होने के लिए पैसे की पेशकश की। इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा मेरे घर पर कल बीजेपी के आपके जो प्रवेश वर्मा जी हैं, वो सुबह 9:30 बजे मेरे घर पर आए थे क्या मेरी इतनी कीमत है कि मुझे बीजेपी खरीद सकती है?

प्रवेश साहिब सिंह ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए उन्हें झूठा और मनगढ़ंत बताया। उन्होंने कहा कि ये आरोप उषा की 5 लाख रुपये की मांग को ठुकराने के बाद लगाए गए। प्रवेश साहिब सिंह के अनुसार, जब उन्होंने उसकी यह मांग न मानी, तो उषा ने उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी।

दिल्ली के कालकाजी स्थित सर्वोदय विद्यालय पहुंचीं सीएम आतिशी, लिया फीडबैक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने शनिवार को कालकाजी स्थित सर्वोदय विद्यालय का दौरा किया, जहां उन्होंने स्कूल के बच्चों और उनके अभिभावकों से मुलाकात की। इस दौरान, मुख्यमंत्री ने बच्चों की शिक्षा को लेकर दिल्ली सरकार के प्रयासों पर चर्चा की।

मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि जैसे आप सभी अपने बच्चों के लिए चिंतित रहते हैं, वैसे ही पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी आपके बच्चों के लिए उतने ही चिंतित रहते हैं, ताकि बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल सके।

बच्चों के अभिभावकों भी मुख्यमंत्री आतिशी की मौजूदगी से हैरान हुए। उन्होंने सीएम के इस कदम को सराहा और कहा कि बहुत अच्छा लगा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आज स्कूल के बच्चों से मिलने आईं। एक अभिभावक ने कहा कि सीएम आतिशी ने हम लोगों से भी मुलाकात की है। अच्छा लगा कि मुख्यमंत्री हमारी समस्याओं और बच्चों के मुद्दों को समझने आईं।

सोच फाउंडेशन से जुड़ी गुलिस्ता ने कहा कि हमारे पास बच्चों के लिए विभिन्न तरीके हैं, जैसे कि हम बच्चों के बीच सीखने में आ रही गैप्स को समझने और उन्हें व्यक्तिगत सत्र देने का प्रयास करते हैं। मुख्यमंत्री ने हमें यह मौका दिया कि हम सरकार के स्कूलों में जाकर बच्चों के लिए अपना इनपुट दे सकें और उनकी मदद कर सकें। सीएम आतिशी ने पेरेंट्स, टीचर और बच्चों से फीडबैक लिया। हम बहुत खुश हैं कि हम बच्चों को बेहतर शिक्षा देने में योगदान दे पा रहे हैं।

प्रियंका नाम की एक महिला ने सीएम आतिशी की तारीफ की। बोलीं, उन्होंने बच्चों की पढ़ाई के बारे में पूछा कि क्या वह स्कूल आते हैं और क्या वहां अच्छी पढ़ाई होती है? महिला ने इसके जवाब में कहा कि स्कूल में शिक्षा अच्छी होती है और मैम भी बहुत अच्छी हैं।

भारतीय वाल्मीकि धर्म समाज की मांग, वाल्मीकि प्रकट दिवस पर घोषित हो राष्ट्रीय अवकाश

- देश में ठेकेदारी प्रथा को खत्म किया जाए: डॉक्टर विपिन पिप्हाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

भारतीय वाल्मीकि धर्म समाज के प्रदेश अध्यक्ष डॉ विपिन पिप्हाल ने केंद्र सरकार से मांग करते हुए कहा है कि महर्षि वाल्मीकि प्रकट दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाए। साथ ही ठेकेदारी प्रथा को पूरे देश से खत्म किया जाए। ठेकेदारी प्रथा के चलते मजदूरों व कामगारों को परेशान होना पड़ता है। ठेकेदारों द्वारा कर्मचारियों को उचित पैसा भी नही दिया जाता है।

उन्होंने आगे बताया कि हमारे समाज का इस देश में एक बड़ा तपका है, इसलिए हर राज्य से एक राज्यसभा सांसद होना चाहिए।

डॉ विपिन ने बताया कि हम समाज से जुड़ी हुई कई मांगों को लेकर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी पत्र लिख चुके हैं।

डॉ विपिन ने कहा कि सभी को आदि धर्म का प्रचार करना है और हमें शिक्षा के महत्व को पहचाना है। उन्होंने समाज के लोगों से कहा कि हमे अपने बच्चों को शिक्षा अवश्य ही दिलानी है जिससे कि बच्चे पढ़ लिखकर समाज और देश का नाम रोशन करें।

भीड़ भाड़ वाले मार्केट में आई-फोन पर करते थे हाथ साफ

- 12 आई फोन सहित 13 मोबाइल, 150 कवर हुआ बरामद
- गैंग के 2 मेंबर को पुलिस ने दबोचा, 6 मामलों का खुलासा
- सरोजनी नगर, कनॉट प्लेस, रेलवे स्टेशन भी निशाने पर

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के भीड़ भार वाले मार्केट में लोगों को खासकर लड़कियों को टारगेट करके महंगे आईफोन चुराने वाले गैंग का पदार्फाश सरोजिनी नगर थाना की पुलिस ने किया है। इनके पास 13 मोबाइल बरामद किए गए हैं, जिसमें 12 आईफोन हैं। जिनकी कीमत 9 लाख रुपए से ज्यादा बताई जा रही है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान पुलिस ने देव कुमार महतो और उसके साथी के रूप में की है। साथ ही मोबाइल के 150 कवर भी बरामद किया गया।

मार्केट में खरीददारी करने आई लड़की से हुई वारदात

डीसीपी साउथ वेस्ट सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि सरोजिनी नगर मार्केट में आई एक लड़की के साथ मोबाइल चोरी की वारदात हुई थी। जब वह दोपहर में मार्केट में खरीदारी करने आई थी। इसकी शिकायत पर पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू की थी। एसीपी सफदरजंग इंक्लेव रणवीर सिंह की देखरेख में एसएचओ सरोजिनी नगर रूपेश कुमार खत्री, सब इंस्पेक्टर अनूप कुमार, अमरजीत, कांस्टेबल मैनपाल और मनीष की टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता लगाना शुरू किया। काफी सीसीटीवी देखने के बाद इन आरोपियों का पता लगाने में पुलिस टीम कामयाब हुई।

12 आई फोन सहित 13 मोबाइल, 150 कवर बरामद

देव कुमार महतो नाम का शख्स जो पेशे से ऑटो ड्राइवर था, उसके बारे में पता चला। वह उत्तर पूर्वी दिल्ली के गोकुलपुर गांव में किराए के मकान में रहता था। पुलिस टीम ने वहां पर छापा मारा उसके पास से लड़की से चुराया गया सैमसंग गैलेक्सी का मोबाइल बरामद किया गया। साथ ही उसके घर की तलाशी ली गई तो 12 आईफोन बरामद किए गए। जो दिल्ली और एनसीआर से चुराए गए थे। तलाशी में दूसरे मोबाइल के 150 सौ बैक कवर भी बरामद किया गया, जो चुराए गए और मोबाइल के हैं।

दिल्ली/ एनसीआर में ऑर्गेनाइज गैंग करता वारदात

पता चला कि उस आरोपी का नेटवर्क मोबाइल चोरों के साथ लार्ज स्केल पर है। इसके साथी सरफराज अंसारी से पूछताछ में पुलिस को पता चला की वह ऑर्गेनाइज गैंग का मेंबर हैं। जो दिल्ली एनसीआर के बड़े मार्केट के अलावा रेलवे स्टेशन पर टारगेट करके लोगों से मोबाइल चोरी करते हैं। इनका मुख्य रूप से टारगेट सरोजिनी नगर मार्केट, कनॉट प्लेस मार्केट के अलावा दिल्ली के रेलवे स्टेशन है।

अभी आधा दर्जन मामलों का खुलासा, जांच जारी

पूछताछ में पुलिस को पता चला की सरफराज मोबाइल चोरी करके देव कुमार को हैंडओवर करता है। फिर देव कुमार आगे अभिषेक और अब्दुल के जरिए आगे मोबाइल को बेचने के लिए पहुंचाता है। अभी तक की जांच में पुलिस ने सरोजिनी नगर, ओल्ड दिल्ली रेलवे स्टेशन, न्यू दिल्ली रेलवे स्टेशन, महावीर एनक्लेव, विकासपुरी और गाजियाबाद के 6 मामलों का खुलासा किया है। बाकी की जांच की जा रही है।

पीछे से अचानक आता और गले में चॉक लगाकर लूट देता

गुलाबी बाग में वारदात, 24 घंटे में सीसीटीवी से गिरफ्तार

संवाददाता

गुलाबी बाग थाना की पुलिस टीम ने लूटपाट के मामले को 24 घंटे के अंदर सुलझाते हुए एक लुटेरे को गिरफ्तार किया है। उसके पास से ट्रेन यात्री से चुराया गया एक और मोबाईल भी बरामद किया गया है। पूछताछ में पता चला की वह पहले से लूट, स्नेचिंग और चोरी के कई मामलों में भी शामिल रहा है। जो इसके ऊपर गुलाबी बाग, सब्जी मंडी और क्राइम ब्रांच थाना में दर्ज है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान राहुल उर्फ सनी के रूप में हुई है, यह किशनगंज दिल्ली का रहने वाला है।

डीसीपी नॉर्थ राजा बांठिया ने बताया की खिलौने की फैक्ट्री में काम करने वाले एक शख्स ने पुलिस में शिकायत किया कि 26 दिसंबर को जब सुबह वह काम पर जा रहा था। इस दौरान पीछे से एक शख्स आया और गले में चॉक लगाकर उसका मोबाइल, कैश और डॉक्यूमेंट लूटकर फरार हो गया। उस मामले में पुलिस ने छानबीन शुरू की। वारदात वाली जगह पर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे की जांच की।

एसीपी सराय रोहिल्ला नरेश खनका की देखरेख में इंस्पेक्टर वेंकटेश कुमार, सहायक सब इंस्पेक्टर विनोद कुमार, हासिम बैग, हेड कांस्टेबल रणवीर सिंह और अमरिंदर की टीम ने उस फुटेज के आधार पर लुटेरे के बारे में पता लगाना शुरू किया था। और 24 घंटे के अंदर इसके बारे में पता लगाया। इसकी पहचान सीसीटीवी फुटेज से की गई और इससे मोबाइल और कैश इत्यादि बरामद किया गया। जो डॉक्यूमेंट लूटा था, वह भी पुलिस ने बरामद कर लिया है। इससे एक दूसरा मोबाइल भी बरामद किया गया है, पता चला वह ट्रेन यात्री से चुराया था। जिसकी अभी जांच की जा रही है। यह दोनों मोबाइल बेचने की फिराक में था, लेकिन उससे पहले ही यह पकड़ा गया।

तमंचा के साथ रील बनाकर डाला फेमस होने इंस्टाग्राम पर

स्पेशल स्टाफ ने पता लगा दबोचा, भेजा जेल की हवा खाने

संवाददाता

सोशल मीडिया पर हथियार के साथ फोटो पोस्ट करके अपने दोस्तों में, अपने जानकारी में सनसनी फैलाने वाले एक शख्स को बाहरी जिला पुलिस के स्पेशल स्टाफ की टीम ने गिरफ्तार किया है। इसके पास से कंट्री मेड पिस्टल और जिंदा कारतूस भी बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान धर्मेंद्र के रूप में हुई है, यह सुलेमान नगर किराड़ी का रहने वाला है। डीसीपी आउटर सचिन शर्मा ने बताया कि 25 दिसंबर को हेड कांस्टेबल विकास कुमार को जानकारी मिली थी। इंस्टाग्राम पर एक रील वायरल हो रहा है, जिसमें एक युवक ने हथियार के साथ पोस्ट किया है। उस रील की जांच पुलिस ने शुरू की, टेक्निकल सर्विलांस से पता लगाया। एसीपी ऑपरेशन नरेंद्र खत्री की देखरेख में इंस्पेक्टर रोहित, सब इंस्पेक्टर विपिन कुमार, सहायक सब इंस्पेक्टर मुरारी लाल और कांस्टेबल संदीप की टीम ने 24 घंटे की जांच के बाद इसके बारे में पता लगाया। आरोपी युवक को सुल्तानपुरी बस स्टैंड से इसको पकड़ लिया। उसके पास से हथियार बरामद किया गया और उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट का मामला भी दर्ज किया गया।

बंगलादेश से बॉर्डर क्रॉस कर आया, पहचान छुपाकर रहता

- आर के पुरम पुलिस ने की पहचान, किया वापस डिपोर्ट
- 18 साल पहले किया था डिपोर्ट, दो साल पहले फिर आया

संवाददाता

बॉर्डर पार करके चोरी छुपे भारत में घुसकर दिल्ली में रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान करके उन्हें डिपोर्ट करने का अभियान लगातार दिल्ली पुलिस के द्वारा किया जा रहा है। इसी कड़ी में साउथ वेस्ट डिस्ट्रिक्ट पुलिस ने एक और बांग्लादेशी नागरिक की पहचान करके उसको डिपोर्ट किया है। वह 2022 में बॉर्डर क्रॉस करके भारत में घुस आया था और यहां साउथ वेस्ट दिल्ली के आर के पुरम इलाके की झुग्गी बस्ती में रह रहा था।

डीसीपी साउथ वेस्ट सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि डिपोर्ट किए गए बांग्लादेशी नागरिक की पहचान फिरोज मुल्ला के रूप में हुई है। यह बांग्लादेश के मदारीपुर का रहने वाला है। एसीपी वसंत विहार गरिमा भटनागर की देखरेख में एसएचओ रविंद्र कुमार त्यागी, सब इंस्पेक्टर हिमांशु, कांस्टेबल ओमवीर सिंह की टीम ने इसकी पहचान करके इसको डिपोर्ट किया है।

पूछताछ में पता चला कि यह 1990 में भी बॉर्डर क्रॉस करके भारत आया था। लेकिन 2004 में इसको वापस बंगलादेश डिपोर्ट किया गया था। इससे पहले वाल दिल्ली के यमुना पुश्ता इलाके के ढोलक बस्ती में रहा था। लेकिन 18 साल बाद यह फिर मौका देखकर दोबारा से बॉर्डर क्रॉस करके भारत में घुस आया और आरके पुरम सेक्टर 2 के हनुमान मजदूर कैंप में रहने लगा। पूछताछ के दौरान पुलिस को इसने झूठा दावा किया कि वह वेस्ट बंगाल के नॉर्थ 24 परगना का रहने वाला है। लेकिन जब छानबीन की गई तो इसकी पोल खुल गई।

यमुना पर वोट नहीं मिलती, फिर भी मैं सफाई कराऊंगा : केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आज एक बड़ा खुलासा करते हुए कहा कि मैं अब राजनीति को समझने लगा हूं। ये जानता हूं कि यमुना को लेकर दिल्ली के लोग वोट नहीं देते है। फिर भी मैं वादा करता हूं कि आने वाले पांच सालों में यमुना नदी को पूरी तरह साफ करने का प्रयास करुंगा। यह बात केजरीवाल ने एक पॉडकॉस्ट इंटरव्यू के दौरान कही। केजरीवाल ने कहा कि यमुना वोट का मुद्दा नहीं। उन्होंने कहा कि मैं अब थोड़ी बहुत पॉलिटिक्स समझने लगा हूं, यमुना पर वोट नहीं मिलेंगे। लेकिन फिर भी मैं यमुना साफ करूंगा। क्योंकि मैं यहां वोट की राजनीति करने नहीं आया हूं। वोट की राजनीति तो ये लोग कर ही रहे थे। सत्ता से पैसा, पैसे से सत्ता कर ही रहे थे। मैं वो करने नहीं आया। जब मैं स्कूल बनवाता हूं यह नहीं देखता कि स्कूल से वोट मिलेंगे कि नहीं। जब मैं अस्पताल बनवाता हूं यह नहीं देखता कि इसकी वजह से वोट मिलेंगे कि नहीं। मैं काम करता हूं क्योंकि मैं काम करने आया हूं। जनता और देश के लिए काम करने में मुझे मजा आता है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि यमुना वजीराबाद तक साफ होती है, पल्ला तक आती है उसके बाद उसमें दिल्ली का सारा सीवर गिरने लगता है। इधर से शाहदरा ड्रेन आती है जो यूपी का गंदा पानी लेकर आती है, इधर से नजफगढ़ ड्रेन हरियाणा का गंदा पानी लेकर आती है। तीनों चीजें मिलकर यमुना के पानी को मैला कर देती हैं। दिल्ली में 1780 अवैध कॉलोनियां हैं। उनमें कोई सीवर सिस्टम नहीं था। हमने लगभग सभी में सीवर लाइन डलवा दी है। यह समस्या का 80 फीसदी हिस्सा था। अब इन सीवर सिस्टम को सीवर ट्रीटमेंट प्लांट में ले जाना है। अभी तक जो प्लांट थे उनकी क्षमता बढ़ा रहे हैं। इसके बाद सारा सीवर जब ट्रीटमें प्लांट में जाएगा तो यमुना में सीवर गिरना बंद हो जाएगा। शाहदरा और नजफगढ़ ड्रेन के लिए भी एसटीपी बना रहे हैं। मैंने 2020 में वादा किया था कि यमुना साफ कर दूंगा, मुझे अंदर से दर्द होता है कि मैं यह नहीं कर पाया।

दिल्ली की अदालत ने हत्या के प्रयास के मामले के तीन आरोपियों को बरी किया

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने 2018 के हत्या के प्रयास और आपराधिक धमकी के एक मामले में तीन आरोपियों को बरी करते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष उनके खिलाफ आरोप साबित करने में बुरी तरह विफल रहा। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विशाल पाहुजा ने इस मामले की सुनवाई की। इस मामले में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और शस्त्र अधिनियम के प्रावधानों के तहत मालवीय नगर पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। अभियोजन पक्ष के अनुसार, आरोपी ने 14 मई, 2018 को पीड़ित के घर के सामने हवा में गोलियां चलाईं और उसे धमकाया। अदालत ने 16 दिसंबर को जारी आदेश में कहा कि पीड़ित और शिकायतकर्ता (पीड़ित के रिश्तेदार) अभियोजन पक्ष के मामले के मुख्य गवाह थे लेकिन वे अपने बयान से मुकर गए और उन्होंने आरोपियों को पहचानने से इनकार कर दिया। अदालत ने कहा, जिरह के दौरान भी अभियोजन पक्ष के गवाह आरोपियों को इस मामले के अपराधियों के रूप में पहचानने में विफल रहे। उसने कहा कि शस्त्र अधिनियम के तहत आरोपों को स्थापित करने के लिए कोई सबूत नहीं है। न्यायाधीश ने कहा, इस अदालत का मानना है कि अभियोजन पक्ष कोई ठोस सबूत न होने के कारण अपना मामला साबित करने में बुरी तरह विफल रहा है इसलिए आरोपियों मनोज हथौड़ी, निखिल और राकेश उर्फ राका को उनके खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों से बरी किया जाता है।

दिल्ली में हुई 41.2 मिमी बारिश, 101 साल बाद दिसंबर में एक दिन में हुई सबसे अधिक बारिश

नई दिल्ली। दिल्ली में शनिवार सुबह साढ़े आठ बजे तक पिछले 24 घंटे में 41.2 मिमी बारिश हुई, जो 101 साल में दिसंबर में एक दिन में हुई सबसे अधिक बारिश है। मौसम विभाग ने यह जानकारी दी।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार राष्ट्रीय राजधानी में तीन दिसंबर 1923 को एक ही दिन में सबसे अधिक बारिश हुई थी, जो 75.7 मिमी थी।इस बीच शनिवार को दिल्ली में आसमान में बादल छाए रहे और मौसम विभाग ने हल्की से मध्यम बारिश का अनुमान जताते हुए दिन के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। शनिवार को न्यूनतम तापमान 12.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो मौसम के औसत से छह डिग्री अधिक था। इस बीच केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में वायु गुणवत्ता में सुधार हुआ और शनिवार सुबह नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 152 दर्ज किया गया। एक्यूआई को शून्य से 50 के बीच अच्छा, 51 से 100 के बीच संतोषजनक, 101 से 200 के बीच मध्यम, 201 से 300 के बीच खराब, 301 से 400 के बीच बहुत खराब और 401 से 500 के बीच गंभीर माना जाता है।

चोरी के एक दर्जन आईफोन, 150 बैक कवर समेत दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। दक्षिण पश्चिमी जिले की सरोजिनी नगर पुलिस ने गत शुक्रवार को मोबाइल फोन की चोरी करने वाले गिरोह का पदार्फाश किया है। पुलिस उपायुक्त सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि इनके कब्जे से एक दर्जन आईफोन, एक अन्य मोबाइल फोन व 150 बैक कवर बरामद हुए हैं। पुलिस का दावा है कि बरामद आईफोन व अन्य मोबाइल फोन की कुल कीमत नौ लाख रुपए है। पकड़े गये आरोपियों की पहचान गोकुलपुर, शेरपुर निवासी देव कुमार व सरफराज अंसारी के रूप में हुई है। ये दोनों मूलरूप से झारखंड के साहेबगंज जिले के रहने वाले हैं। पेशे से देव ऑटोचालक व सरफराज दिहाड़ी श्रमिक हैं। ये दोनों दिल्ली में एक ही मकान में साथ रहते थे। पुलिस ने इनकी गिरफ्तारी के बाद मोबाइल फोन चोरी के छह मामले सुलझाने का दावा किया है। पुलिस के मुताबिक, गत 26 दिसंबर को सुल्तानपुर निवासी प्राची तोमर ने सरोजिनी नगर बाजार में उनके मोबाइल फोन की चोरी की शिकायत दी थी। बताया कि दोपहर 1.30 से 1.45 के बीच उनका मोबाइल फोन किसी ने चुरा लिया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज, तकनीकि विशेषज्ञों व स्थानीय सूत्रों की मदद से आरोपी के ठिकाने का पता लगाया और गोकुलपुर में छापा मारकर इन्हें गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में सरफराज ने बताया कि वह सरोजिनी नगर मार्केट, कनॉट प्लेस मार्केट व रेलवे स्टेशनों पर भीड़ का फायदा उठाकर संगठित तरीके से चोरी की वारदातों को अंजाम दे रहा था। चोरी का मोबाइल फोन वह देव कुमार को दे देता था और उसके बाद उसके गुर्गे अभिषेक व अबुल इसे बाजार में बेच देते थे। आरोपियों को अदालत के समक्ष पेश करने के बाद 14 दिन के लिए जेल भेज दिया गया है। पुलिस इनके गिरोह के नेटवर्क इत्यादि के बारे में पता लगाने के लिए छानबीन कर रही है। इसके साथ ही बरामद मोबाइल फोन के मालिकों का भी पता लगाने की कोशिश कर रही है।

दिल्ली में नमकीन फैक्ट्री में आग लगने से हुआ विस्फोट, चार कर्मचारी झुलसे

नई दिल्ली । दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के नजफगढ़ में शनिवार सुबह एक नमकीन फैक्ट्री में आग लग जाने से विस्फोट हो गया जिससे चार कर्मचारी झुलस गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के एक अधिकारी ने बताया कि सुबह आठ बजकर 16 मिनट पर आग लगने की सूचना मिली जिसके बाद दमकल की 17 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। उन्होंने बताया कि यह दो मंजिला इमारत है और आग भूतल पर लगी थी। उन्होंने बताया कि आग लगने के कारण हुए विस्फोट में फैक्ट्री के अंदर मौजूद चार कर्मचारी झुलस गए। उन्हें दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल ले जाया गया है। अधिकारियों ने बताया कि आग बुझाने के प्रयास जारी हैं।

अरबिंदो कॉलेज ने बिजनेस एनालिटिक्स और रिसर्च मेथोडोलॉजी विषय पर छह दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

यूजीसी की एमएमटीटीपी योजना के तहत दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध श्री अरबिंदो कॉलेज व रामानुजन कॉलेज के सहयोग से बिजनेस एनालिटिक्स एंड रिसर्च मेथोडोलॉजी पर छह दिवसीय शॉर्ट-टर्म ऑनलाइन प्रोग्राम (एसटीपी) का आयोजन किया गया था जो आज सफलता पूर्वक समापन हुआ । इस कार्यक्रम में देशभर से 150 से अधिक संकाय सदस्यों ने भाग लिया। जो इसके व्यापक प्रभाव को दर्शाता है। बता दें कि यह प्रोग्राम प्रतिभागियों को बिजनेस एनालिटिक्स और रिसर्च मेथोडोलॉजी में नवीनतम रुझानों और तकनीकों के ज्ञान से लैस करने के लिए डिजाइन किया गया था । साथ ही एसटीपी आधुनिक वाणिज्य शिक्षा के अभिन्न प्रमुख क्षेत्रों को संबोधित करता है। विशेष रूप से यह विषय दिल्ली विश्वविद्यालय की नई शिक्षा नीति - 2020 के तहत बी.कॉम और बी.कॉम (ऑनर्स) पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। कार्यक्रम के इस अवसर पर श्री अरबिंदो कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अरुण चौधरी ने मुख्य अतिथि तथा सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का कॉलेज की ओर से स्वागत किया और कहा कि आपकी उपस्थिति ने यह कार्यक्रम सफल बनाया है । उन्होंने कहा कि वर्तमान में जिस गति से विकसित हो रहे शैक्षणिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में बिजनेस एनालिटिक्स और रिसर्च मेथोडोलॉजी जैसे विषयों को मांग बढ़ी है जिससे इनकी प्रासंगिकता बनी हुई है । उन्होंन प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना करते हुए कार्यक्रम की शानदार सफलता का श्रेय कॉलेज की दोनों टीम को दिया। उन्होंने कार्यक्रम को एक उल्लेखनीय उपलब्धि बनाने में उनके अमूल्य सहयोग के लिए रामानुजन कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रसाल सिंह को भी अपना विशेष धन्यवाद दिया। समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के वाणिज्य विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर और डीन प्रोफेसर अजय कुमार सिंह उपस्थित थे। प्रोफेसर सिंह ने बिजनेस एनालिटिक्स और रिसर्च मेथोडोलॉजी जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व पर बहुमूल्य जानकारी प्रतिभागियों के साथ साझा की। उन्होंने संकाय सदस्यों को नवीनतम उपकरणों और तकनीकों से लैस करने में उनकी भूमिका पर जोर दिया जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वे लगातार विकसित हो रहे पेशेवर परिदृश्य में अपडेट और रोजगार योग्य बने रहें। प्रोफेसर सिंह ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के परिवर्तनकारी प्रभाव पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षण, सीखने और अनुसंधान प्रथाओं को बढ़ाने के लिए इसके प्रभावी एकीकरण की आवश्यकता बताई। दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के वाणिज्य विभाग के प्रोफेसर एच.के. डांगी ने दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर बिजनेस एनालिटिक्स एंड रिसर्च मेथोडोलॉजी जैसे अभिनव कार्यक्रमों की शुरूआत पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अकादमिक शिक्षा और उद्योग की जरूरतों के बीच की खाई को पाटने के लिए इस पहल की उन्होंने सराहना की। प्रो. डांगी ने शिक्षा को नया रूप देने और छात्रों को व्यवसाय और शैक्षणिक दुनिया में भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य उन्नत उपकरणों जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित किया है।

कॉलेज के मीडिया संयोजक डॉ. हंसराज सुमन ने बताया कि एफडीपी कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को डेटा विज्ञान, विश्लेषण और शोध पद्धतियों में उन्नत अवधारणाओं से परिचित कराया । उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विभिन्न संस्थानों के प्रसिद्ध विशेषज्ञों ने तकनीकी सत्रों और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से अपना ज्ञान साझा किया। इन प्रतिष्ठित वक्ताओं में बीवीआईएमआर विश्वविद्यालय के प्रो. ब्रोटो भारद्वाज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रबंधन अध्ययन संकाय के प्रो. नारायण, एमएलएसयू, उदयपुर के प्रो. हनुमान प्रसाद, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. सी.पी. गुप्ता और अमेरिकन एक्सप्रेस के प्रबंधक श्री अक्षय महाजन शामिल थे। इन सत्रों में उन्नत एक्सेल, टेबल्यू, पावर बीआई, आर सॉफ्टवेयर और प्रश्नावली डिजाइनिंग जैसे विषयों को शामिल किया गया। इस कार्यक्रम को समापन तक ले जाने वालों में आयोजन समिति में डॉ. निशिता गुप्ता का विशेष सहयोग रहा। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ जिसमें आशा व्यक्त की गई कि सत्र के दौरान साझा किया गया ज्ञान संकाय सदस्यों और शिक्षाविदों को व्यवसाय विश्लेषण और अनुसंधान पद्धति के क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने के लिए सशक्त करेगा।

शीशमहल का काला सच जनता के सामने लाएं केजरीवाल: विजेंद्र गुप्ता

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने आज एक बार फिर से आम आदमी पार्टी के नेता एवं दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास 6, फ्लैग स्टाफ रोड में किए गए अवैध निर्माण और उसमें लगाये गये महंगे संसाधनों को लेकर केजरीवाल को कटघरे में खड़ा किया। गुप्ता ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा कि वे खुद सामने आकर जनता को अपने इस शीश महल का काला सच बतायें।

दिल्ली प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए विजेंद्र गुप्ता ने अरविंद केजरीवाल से सवाल किया कि आखिर उनकी ऐसी क्या योजना थी, जिसमें दो सौ करोड़ रुपये की लागत से अवैध निर्माण करने की तैयारी की जा रही थी। गुप्ता ने आम आदमी पार्टी के ह्यईमानदारह्ल मुखिया पर तंज कसते हुए कहा कि सभी सात सरकारी संपत्तियों को मिलाने के लिए किसी सक्षम अथॉरिटी से अनुमति नहीं ली गई और इसी कारण सरकारी रिकॉर्ड में आज भी ये संपत्तियां बंगला नंबर 45, 47 राजपुर रोड और 8-ए तथा 8-बी फ़्लैग स्टाफ रोड के रूप में ही दर्ज हैं, जबकि 6, फ्लैग स्टाफ रोड का हिस्सा बनने के बाद इनका कोई अस्तित्व ही नहीं बचा है। गुप्ता ने कहा कि 6, फ्लैग स्टाफ रोड के मुख्यमंत्री आवास पर कुछ और भी अवैध निर्माण अधूरा पड़ा है, जिसका खुलासा होने के बाद केजरीवाल ने आनन फानन में उस निर्माण कार्य को बंद करवा दिया।

गुप्ता ने कहा कि यह निर्माण कार्य बदस्तूर जारी रहता यदि विपक्ष इस मामले को जनता के सामने ना लाता। गुप्ता ने कहा कि इसमें सिर्फ निर्माण कार्य में ही अनियमितताएं नहीं बरती गईं, बल्कि इस सरकारी आवास में करोड़ों रुपये का आरामदायक लग्जरी साजो-सामान भी लगा दिया गया। यह वह दौर था जब देश कोरोना महामारी से जूझ रहा था और केजरीवाल अपने इस आलीशान शीश महल को सजाने के लिए इसमें महंगे सामान को जुटाने की खातिर ह्यनई शराब नीतिह्ल की इबारत लिख रहे थे। पुरानी शराब नीति के होते हुए भी ह्यनई शराब नीतिह्ल बनाने का मकसद सिर्फ शराब माफिया को फायदा पहुंचाना था, जिसके बदले में केजरीवाल ने अपने शीश महल में सोने की कमोड, 28 लाख के टीवी, करोड़ों के पर्दे, महंगे सोफे, रीक्लाइनिंग चेयर्स जैसा लग्जरी सामान जुटा लिया।

गुप्ता ने बताया कि 2022 में पीडब्ल्यूडी ने बतौर मुख्यमंत्री केजरीवाल के इस भवन में उन्हें जो जो सामान उपलब्ध करवाया था और 2024 पर जब उन्होंने उसे खाली किया और उस समय जो इन्वेंटरी लिस्ट बनाई गई, दोनों में बड़ा अंतर था। 2024 में बंगले में लगा सामान 2022 में उपलब्ध करवाये गये सामान से आठ गुना ज्यादा पाया गया।

गुप्ता ने कहा कि ऐसे में सवाल उठता है कि यदि पीडब्ल्यूडी ने यह सामान नहीं दिया तो यह सामान आया कहां से? गुप्ता ने सवाल किया कि क्या केजरीवाल ने खुद यह सामान अपने पैसों से खरीदा तो उसका खुलासा करें। लेकिन इस पूरे मामले में केजरीवाल की चुप्पी जता रही है कि शराब माफिया ने ही उन्हें यह सामान दिया, जिसके फायदे के लिए केजरीवाल ने शराब की बिक्री पर मिलने वाले कमीशन को 5 फीसदी से बढ़ाकर 12 फीसदी कर दिया और इस बढ़ाई गई कमीशन की रकम का मोटा हिस्सा केजरीवाल को सहूलियत और आरामदायक संसाधन सामान उपलब्ध करवाने में खर्च किया गया।

गुप्ता ने कहा कि इस मामले में भ्रष्टाचार की शिकायत विपक्ष द्वारा किए जाने के बाद ही केंद्रीय सतर्कता आयोग में शिकायत दर्ज करवाने के बाद आयोग ने दिल्ली सतर्कता विभाग को जांच के लिये कहा और जिसने जांच को आगे बढ़ाते हुए लोक निर्माण विभाग के प्रमुख सचिव को इस मामले में पांच दिन के अंदर अपनी रिपोर्ट देने के लिए कहा, लेकिन अभी तक उसकी ओर से कोई जवाब नहीं दिया गया है।

भूकंप और आग से बचाव का क्या है मनमोहन सिंह से कनेक्शन, पूर्व सेनाध्यक्ष ने बातचीत में किया खुलासा

प्रात : किरण संवाददाता

डॉ. मनमोहन सिंह एक दूरदर्शी नेता और कुशल अर्थशास्त्री थे। उनके कार्यकाल में देश ने आर्थिक रूप से प्रगति की और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का गठन हुआ। इस प्राधिकरण ने देश की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनरल एनसी विज ने दैनिक जागरण से बातचीत में डॉ. मनमोहन सिंह के व्यक्तित्व और उनके कार्यों की सराहना की। डॉ. मनमोहन सिंह एक दूरदर्शी नेता और कुशल अर्थशास्त्री थे। फाइल फोटो पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल एनसी विज ने कहा डा. मनमोहन सिंह से बहुत कुछ सीखने को मिला। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का गठन डा. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ही किया गया। आदित्य राज, गुरुग्राम। जाने माने अर्थशास्त्री व पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह सरलता, सौम्यता व सादगी के प्रतीक थे। वह दूरद्रष्टा थे। बहुत आगे की सोचते थे। सेना की मजबूती से लेकर देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने को लेकर वह प्रयासरत रहे। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का गठन उनके शासनकाल में ही हुआ। आज यह प्राधिकरण देश की सुरक्षा में विशेष भूमिका निभा रहा है। ये बातें डॉ. मनमोहन सिंह के शासनकाल के दौरान सेनाध्यक्ष व राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वाइस प्रेसिडेंट रहे जनरल एनसी विज ने दैनिक जागरण से फोन पर बातचीत कही। मनमोहन सिंह को हर क्षेत्र की थी गहरी जानकारी-जनरल एनसी विज उन्होंने कहा कि डा. मनमोहन सिंह से जब भी बातचीत करता था तो कुछ न कुछ नई जानकारी मिल जाती थी। वह सही मायने में विद्वान थे। उनकी विद्वता की कोई सीमा नहीं थी। हर क्षेत्र की गहरी जानकारी उन्हें थी। जनरल एनसी विज, पूर्व सेनाध्यक्ष बातचीत के दौरान किसी भी विषय पर इतना कुछ कह जाते थे जैसे कि वे हर विषय के विशेषज्ञ हों। सेना की मजबूती की बात वह हमेशा किया करते थे। वह नई तकनीकी को विकसित करने पर हमेशा जोर देते थे। आपदा से बचाव के बारे में अधिकतर लोग जागरूक हो चुकेह्न कहते थे कि नई तकनीक के लिए शोध चलते रहना चाहिए। आपदा आने के बाद तत्काल बचाव कार्य बेहतर तरीके से शुरू हो सके, इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के गठन पर जोर दिया। आज यह प्राधिकरण देश के भीतर बेहतर स्थान बना चुका है। प्राधिकरण के माध्यम से करोड़ों लोगों को जागरूक किया जा चुका है। भूकंप आने पर कैसे बचाव करना चाहिए, आग लगने पर कैसे बचाव करना चाहिए सहित सभी प्रकार के आपदा से बचाव के बारे में अधिकतर लोग जागरूक हो चुके हैं। दो प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल में रहे देश के सेनाध्यक्ष उनके साथ काम करके बहुत कुछ सीखने को मिला। बता दें कि जनरल एनसी विज 31 दिसंबर 2002 से 31 जनवरी 2005 तक सेनाध्यक्ष रहे। इस तरह दो प्रधानमंत्रियों अटल बिहारी वाजपेयी एवं डा. मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान सेनाध्यक्ष रहे। सेनाध्यक्ष से सेवानिवृत होने के बाद राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के पहले वाइस प्रेसिडेंट बने। प्रेसिडेंट का पद प्रधानमंत्री के पास होता है।

पत्रकारिता क्षेत्र में पहचान रखने वाले पत्रकार नीरज प्रधान जी का निधन

प्रात : किरण संवाददाता

फैजगंज बेहटा औरछी पूर्व ग्राम प्रधान व हिंदुस्तान अखबार के पत्रकार नीरज प्रधान का हृदय गति रुकने से बिहार में निधन हो गया वो 60 वर्ष के थे बताया जाता है कि नीरज प्रधान अपने परिवार के साथ बिहार अयोध्या आदि यात्रा पर अपने परिवार के साथ गए हुए थे जहां उनका निधन हो गया निधन होने का कारण हृदय गति रुकने से बताया जा रहा है नीरज प्रधान ने अमर उजाला में भी लम्बे समय तक कार्य किया था और अब काफी समय से हिंदुस्तान अखबार से जुड़े हुए थे उनके निधन की सूचना मिलते ही उनके परिवार व मित्रो पर जैसे पहाड़ सा टूट गया हो जैसा माहौल बन गया है लोग काफी दुखी ओर परेशान हो रहे है नीरज प्रधान के परिवार का भी रो रो कर बुरा हाल है नीरज प्रधान को कल उनके पैतृक स्थान चंदौसी लाया जा रहा है नीरज प्रधान के निधन से मीडिया क्षेत्र में भी दुखी का माहौल है

डीएम की अध्यक्षता में थाना उसावा में संपन्न हुआ थाना समाधान दिवस का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बदायूँ जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव ने थाना उसावा में आयोजित थाना समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए पुलिस अधिकारियों को फरियादियों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए उसका गुणवत्तापरक निस्तारण करने के लिए कहा। इस अवसर पर भूमि व राजस्व संबंधी 05 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 01 का मौके पर निस्तारण कर दिया गया। जिलाधिकारी ने थाने का निरीक्षण भी किया। जिलाधिकारी ने कहा कि भूमि संबंधी विवादों के निस्तारण के लिए पुलिस व राजस्व विभाग की संयुक्त टीम बनाकर मौके पर जाकर समस्याओं का निस्तारण करें तथा निस्तारण के समय की फोटोग्राफी भी कराया जाए तथा सहमति पत्र पर दोनों पक्षों के हस्ताक्षर भी लिए जाएं। जिलाधिकारी ने थाना उसावा में आयोजित समाधान दिवस के उपरांत थाने का निरीक्षण भी किया। उन्होंने वहां विभिन्न रजिस्टरो का अवलोकन किया। माल खाने को निरीक्षण किया तथा पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने पुलिस अधिकारियों को जनता से बेहतर व्यवहार करने व संवाद स्थापित करने के लिए भी कहा। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार सिंह सहित अन्य पुलिस अधिकारी मौजूद रहे।

बलिदानियों के परिजनों को अब 50 लाख की बजाय मिलेंगे एक करोड़ रुपये, हरियाणा सरकार का बड़ा एलान

प्रात : किरण संवाददाता

हरियाणा की नायब सरकार ने बलिदानी सैनिकों और अर्धसैनिक बलों के जवानों के परिजनों के लिए मुआवजे की राशि को बढ़ाकर एक करोड़ रुपये कर दिया है। साथ ही हिंदी आंदोलन के मातृ भाषा सत्याग्रहियों को हर महीने 20 हजार रुपये पेंशन देने का एलान किया है। पहले बलिदानी सैनिकों के आश्रितों को 50 लाख रुपये मिलते थे। हरियाणा मंत्रिमंडल की बैठक में बलिदानियों के आश्रितों के लिए मुआवजा बढ़ाने का हुआ एलान हिंदी आंदोलन के मातृ भाषा सत्याग्रहियों को हर महीने मिलेगी 20 हजार रुपये पेंशन फरीदाबाद के बलिदानी पुलिस सब इंस्पेक्टर की पत्नी को 200 वर्ग गज का प्लाट मिलेगा राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़। हरियाणा सरकार बलिदानी सैनिकों व अर्धसैनिक बलों के जवानों के आश्रितों को अब एक करोड़ रुपये मुआवजा देगी। इसके अलावा हिंदी आंदोलन के मातृ भाषा सत्याग्रहियों को हर महीने 20 हजार रुपये पेंशन दी जाएगी। फरीदाबाद के हीरापुर गांव के बलिदानी पुलिस सब इंस्पेक्टर जयभगवान की पत्नी कमलेश शर्मा को 200 वर्ग गज का प्लाट दिया जाएगा। अभी तक दी जाती थी 50 लाख की सहायता मुख्यमंत्री नायब सैनी की अध्यक्षता में शनिवार को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसले लिए गए। अभी तक प्रदेश में बलिदानी सैनिकों के आश्रितों को 50 लाख रुपये सहायता राशि प्रदान की जाती थी। इस राशि को बढ़ाने को लेकर पूर्व में घोषणा हो चुकी है, जिसे अब लागू कर दिया गया है। इसी तरह हिंदी आंदोलन के सत्याग्रहियों को मिलने वाली 15 हजार रुपये मासिक पेंशन में पांच हजार रुपये की बढ़ोतरी की गई है। इस खबर को पूरा पढ़ने और बेहतर अनुभव के लिए

बदायूं में युवक की गला घोंटकर हत्या. नहर में मिला शव, गले और पैर में बंधी थी रस्सी; जांच में जुटी पुलिस बदायूं के बिनावर

थाना क्षेत्र में एक युवक की हत्या कर दी गई और उसका शव हजारा नहर में फेंक दिया गया। युवक की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। बता दें कि ग्रामीणों ने शव को देखा तो पुलिस को जानकारी दी। युवक के पैर रस्सी से बंधे हुए थे। युवक का शव नहर से बरामद किया गया। (तस्वीर जागरण) संवाद सूत्र, सिलहरी (बदायूं) । बदायूं के बिनावर थाना क्षेत्र में एक युवक की रस्सी से गला घोंटकर हत्या कर दी गई। उसका शव विजयनगला-सिकरोड़ी के बीच नवादा मोड़ को जाने वाली हजारा नहर में फेंक दिया गया। उसके गले और पैरों में रस्सी बंधी मिली है। फिलहाल, उसकी पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस ने शव को मॉच्यूरी में रखवा दिया है। बुधवार सुबह करीब नौ बजे सिकरोड़ी गांव के कुछ किसान अपने खेतों पर जा रहे थे। तभी उन्होंने रास्ते में विजय नगला और सिकरोड़ी गांव के बीच रसूलपुर से नवादा मोड़ की ओर जाने वाली हजारा नहर में एक युवक का शव पड़ा देखा। उसके पैर रस्सी से बंधे हुए थे और उसके गले में भी रस्सी बंधी हुई थी। युवक का चेहरा पूरी तरह से काला पड़ चुका था युवक का चेहरा काला पड़ चुका था। उसकी पैंट और नेकर नीचे की ओर खिसका हुआ था। उसे देखकर लोगों ने आसपास के ग्रामीणों को सूचना दी और तुरंत पुलिस को भी इसकी जानकारी दी, जिससे बिनावर थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई और ग्रामीणों की मदद से युवक के शव को नहर से बाहर निकलवाया।

एग्ट से होंगे चुनाव, कांग्रेस की मांग खारिज; कभी भी जारी हो सकता है चुनावी कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

हरियाणा में होने वाले शहरी निकाय चुनावों में ईवीएम का इस्तेमाल किया जाएगा। राज्य चुनाव आयोग ने मेयर प्रत्याशी के चुनाव प्रचार खर्च की सीमा पांच लाख रुपये और पार्षद की डेढ़ लाख रुपये बढ़ाई है। पहले चरण में 27 शहरी निकायों में चुनाव होंगे जबकि सात शहरी निकायों में दूसरे चरण में चुनाव होंगे। आयोग ने कांग्रेस की मांग को खारिज कर दिया है। का जल्द जारी हो सकता है कार्यक्रम। राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़। शहरी निकायों में आरक्षण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद अब राज्य चुनाव आयुक्त चुनाव कराने को तैयार है। पहले चरण में 27 शहरी निकायों में चुनाव होने हैं, जबकि सात शहरी निकायों में दूसरे चरण में चुनाव होंगे। पहले चरण में होने वाले शहरी निकायों के चुनाव संबंधी मतदाता सूचियों को फाइनल करने का काम छह जनवरी तक पूरा कर लिया जाएगा, जिसके दो से तीन दिनों के बाद शहरी निकाय चुनाव का कार्यक्रम घोषित होगा। राज्य चुनाव आयुक्त के पास ऐसी कोई मांग कांग्रेस अथवा आम जनता की ओर से नहीं पहुंची कि शहरी निकाय चुनाव बैलेट पेपर से होने चाहिए। कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष चौधरी उदयभान ने कुछ दिन पहले कहा था कि पार्टी को ईवीएम पर कोई भरोसा नहीं है, इसलिए निकाय चुनाव बैलेट पेपर से कराए जाने चाहिए। राज्य चुनाव आयुक्त धनपत सिंह ने कहा कि किसी भी राजनीतिक दल ने इस मांग को लेकर कोई मांग पत्र नहीं दिया है। शहरी निकाय चुनाव ईवीएम से ही होंगे। राज्य चुनाव आयोग को एम-टू ईवीएम मिली हैं, जिनका इस्तेमाल पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनाव में किया गया था। ईवीएम में छेड़छाड़

रात में खेत की रखवाली करने गए किसान पर नकाबपोश लोगों ने बोला हमला

बदायूं मामला थाना उघैती ग्राम सोहरा जिला बदायूं का हैं अज्ञात चोरों ने एक व्यक्ति के जेब से रुपए निकालने का विरोध करने पर मारपीट व गर्दन पर चाकू मारकर घायल करने का आरोप मारपीट के दौरान एक व्यक्ति का नकाब हटने पर पीड़ित ने की पहचान खून से लथपथ हालत में पीड़ित पहुंच थाने एक नामजद व से तीन -चार अज्ञात लोगों के विरुद्ध पुलिस को तहरीर देकर लगाई गुहार उघैती थाना क्षेत्र के गांव सोरहा के खेतिहर इलाके का मामला हैं

बदायूं में तीन साल की बच्ची के साथ हैवानियत की हदें की थीं पार, अब कोर्ट ने सुनाई यह सजा

स्वजन ने बच्ची की तलाश की तो विनोद और उसकी बेटी ट्यूबवेल के कुंआ में बंद मिले। किबाड़ खोलने पर विनोद भाग गया और बेटी के लहुलूहान हालत में पड़ी मिली। वह कुछ बोलने की हालत में नहीं थी। पलब्ध साक्ष्यों का अवलोकन कर विशेष लोक अभियोजक अमोल जौहरी वीरेंद्र सिंह वर्मा प्रदीप भारती और बचाव पक्ष के अधिवक्ता की दलील सुनने के बाद दोषी को सजा सुनाई। कोर्ट ने आरोपी को उम्रकैद की सजा सुनाई है। जागरण संवाददाता, बदायूं : तीन साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म और आप्राकृति यौन शोषण करने के आरोपित को विशेष न्यायधीश पाक्सो दीपक यादव ने दोषी करार देते हुए दोहरे उम्रकैद की सजा सुनाई है। दुष्कर्म और कुकर्म दोनों धाराओं में अलग अलग सजा सुनाते हुए न्यायाधीश ने दोषी पर कुल दो लाख रुपये का जुमार्ना भी लगाया है।

जुमार्ना की सम्पूर्ण धनराशि पीड़िता को इलाज आदि को देने का आदेश दिया है।

साल 2020 की है घटना अभियोजन पक्ष के अनुसार वजीरगंज थाना क्षेत्र एक गांव निवासी महिला ने सात दिसंबर 2020 को पुलिस को शिकायती पत्र दिया था।

जिसमें उसने बताया था कि उसकी तीन साल की बेटी दोपहर तीन बजे दरवाजे के सामने अन्य बच्चों के साथ खेल रही थी। साथ में कई और बच्चे थे।

कुछ देर के बाद देखा तो बच्ची दरवाजे पर नहीं थी।

साथ में खेल रहे बच्चे भी अपने घर चले गए थे।

पूछताछ पर अन्य बच्चों ने बताया कि गांव का ही विनोद नाम का युवक बच्ची को ट्यूबवेल की ओर ले गया है। लहुलूहान हालत में मिली थी मासूम स्वजन ने बच्ची की तलाश की तो विनोद और उसकी बेटी ट्यूबवेल के कुंआ में बंद मिले।

किबाड़ खोलने पर विनोद भाग गया और बेटी के लहुलूहान हालत में पड़ी मिली।

वह कुछ बोलने की हालत में नहीं थी।

पुलिस ने बच्ची का चिकित्सकीय कराया गया तो उसके साथ दुष्कर्म और कुकर्म होने की बात सामने आई।

पुलिस ने दुष्कर्म और कुकर्म दोनों ही धाराओं में प्राथमिकी पंजीकृत कर विनोद को गिरफ्तार कर उसका डीएनए कराया।

फरीदाबाद : झाड़ि में मिला नवजात बच्ची का शव, कुत्तों ने नोचा

प्रात : किरण संवाददाता

फरीदाबाद, । शनिवार को यहां एक नवजात बच्ची का शव कपड़े में लिपटा हुआ झाड़ि में पड़ा हुआ मिला। बच्ची को कुत्तों ने नोचा हुआ था और उस पर एक निजी अस्पताल की स्लिप भी लगी मिली। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए बादशाह खान सिविल अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया है। पुलिस मामले में छानबीन कर रही है। फरीदाबाद के थाना एसजीएम नगर में तैनात जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर राजकुमार ने बताया कि केसी सिनेमा हॉल के पास झाड़ि में बच्ची का शव पड़ा मिला है। मोहिनी नाम की युवती ने झाड़ि में शव को पड़ा हुआ देखा था। मोहिनी की मां वहीं पर बीड़ी सिगरेट का खोखा लगाती है और वह अपनी मां के लिए खाना लेकर गई थी। युवती की नजर बच्ची के शव पर पड़ी और उसने इसकी सूचना पुलिस को दी। फरीदाबाद के थाना एसजीएम नगर में तैनात जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर राजकुमार ने बताया कि बच्ची के शव को कुत्तों ने नोच रखा था। फरीदाबाद के थाना एसजीएम नगर में तैनात जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर राजकुमार ने बताया कि बच्ची के शव को कुत्तों ने नोच रखा था। एसआई राजकुमार में बताया कि बच्ची का शव कुत्ते द्वारा नोचा हुआ था। नाल में किसी निजी अस्पताल की क्लिप भी लगी हुई है। डॉक्टरों ने उन्हें बताया कि बच्ची का शव लगभग दो से तीन दिन पुराना लग रहा है। अज्ञात माता पिता के खिलाफ मामल दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। बच्ची की माता पिता के तलाश के लिए आस पास के इलाकों में पूछताछ की जाएगी। जांच में आशा वर्करों की मदद भी ली जाएगी।

फरीदाबाद में विप्र फाउंडेशन का भव्य आयोजन संस्थापक सुशील जी ओझा का स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

फरीदाबाद, । देश की अग्रणी ब्राह्मण समाज की राष्ट्रीय संस्था विप्र फाउंडेशन ने उद्योग नगरी फरीदाबाद के सेक्टर 8 स्थित महाराणा प्रताप भवन में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में फाउंडेशन के संस्थापक सुशील ओझा विशेष रूप से पधारे। कार्यक्रम से पहले उन्होंने श्याम दरबार फरीदाबाद में श्याम भक्त राहुल शर्मा जी से आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम में सुशील ओझा का स्वागत जोर-शोर से किया गया। स्वागत के लिए फरीदाबाद के जोशी परिवार, कैलाश शर्मा,योगेश तिवारी, अमित सुरजगढिया, गोपाल भदानी, विमल खंडेलवाल जिला संयोजक व्यवसायिक प्रकोष्ठ भाजपा फरीदाबाद, मधुसूदन माटोलिया, पवन वशिष्ठ,पी.एल खंडेलवाल, एडवोकेट हिमांशु शर्मा और सीकर से आए धीरज जी शर्मा व समाज के वरिष्ठ विप्रजन उपस्थित रहे। मुख्य अतिथियों की उपस्थितिः इस अवसर पर विप्र फाउंडेशन के हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष कुलदीप वशिष्ट, राष्ट्रीय सचिव डॉ. रुचि चतुवेर्दी, जिला अध्यक्ष संजय वशिष्ठ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जितेंद्र भारद्वाज, और राजगढ़ से मुकेश रामपुरा सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए फरीदाबाद-बल्लभगढ़ के विधायक मूलचंद शर्मा जी के बड़े भाई टीपर चंद शर्मा, मुख्यमंत्री के पूर्व राजनीतिक सलाहकार अजय गौड़, पूर्व जिला अध्यक्ष गोपाल शर्मा, समाजसेवी भारत भूषण, उद्योगपति एवं वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा, कार्यक्रम में शामिल हुए। अजय गौड़ ने बताया कि विप्र फाउंडेशन का उद्देश्य समाज को सशक्त बनाना, संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखना, और जरूरतमंदों को सहायता प्रदान करना है। उनके कार्य समाज को नई दिशा और प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। सुशील जी ओझा का संदेशः कार्यक्रम में सुशील ओझा ने कार्यकताओं से फाउंडेशन की संगठनात्मक गतिविधियों और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने फरीदाबाद में विप्र फाउंडेशन द्वारा नए प्रकल्पों और समाज हित के लिए किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने उपस्थित सभी आयोजकों और कार्यकताओं का आभार व्यक्त किया। यह आयोजन ब्राह्मण समाज को संगठित करने और समाज के उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों को गति देने के उद्देश्य से किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने विप्र फाउंडेशन के प्रयासों की सराहना की और हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

हरियाणा में इन सरकारी नौकरियों में अब आधार कार्ड जरूरी, नायब सरकार ने प्रस्ताव को दी मंजूरी

हरियाणा सरकार ने प्रथम और द्वितीय श्रेणी की सरकारी नौकरियों में आधार कार्ड को अनिवार्य कर दिया है। यह कदम भर्ती प्रक्रिया में धोखाधड़ी और फजीर्वाड़े को रोकने के लिए उठाया गया है। इसके अलावा सरकारी कर्मचारियों और सेवानिवृत्त कर्मचारियों का डेटा मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (एचआरएमएस) पोर्टल पर एकत्र किया जाएगा। इस बाबत प्रस्ताव जारी कर दिया गया है। आवेदन के दौरान आधार कार्ड अपलोड जरूरी करने से भर्तियों में रुकेगा फजीर्वाड़ा मंत्रिमंडल ने हरियाणा लोकसेवा आयोग ग्रुप-ए व बी में आधार कार्ड प्रमाणिकता को दी मंजूरी सेवानिवृत कर्मियों का पूरा डाटा होगा अब एचआरएमएस पोर्टल पर रिकॉर्ड होगा सेवानिवृत कर्मियों का पूरा डाटा होगा अब एचआरएमएस पोर्टल पर रिकॉर्ड होगा राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़। हरियाणा में अब प्रथम और द्वितीय श्रेणी नौकरियों में आधार अनिवार्य होगा। भर्तियों में फजीर्वाड़ा व धोखाधड़ी को रोकने के लिए प्रदेश सरकार ने यह सख्त कदम उठाया है। इसके साथ ही सरकारी सेवा में कार्यरत कर्मियों व सेवानिवृत कर्मियों का डाटा मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (एचआरएमएस) पोर्टल पर जुटाया जाएगा। मंत्रिमंडल में प्रस्ताव पर लगी मुहर शनिवार को मंत्रिमंडल की बैठक में ग्रुप-ए व बी की भर्तियों में आवेदन के दौरान आधार कार्ड प्रमाणीकरण के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई। मुख्यमंत्री नायब सैनी ने बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि प्रथम और द्वितीय श्रेणी भर्तियों में आवेदन के दौरान अभ्यर्थियों द्वारा आधार कार्ड अपलोड करने से हरियाणा लोक सेवा आयोग के पास आवेदनकताओं का सटीक डाटा होगा। यह कदम धोखाधड़ी व फजीर्वाड़े पर भी अंकुश लगाने में आयोग के लिए मददगार साबित होगा। इससे भर्तियों की विश्वसनीयता बढ़ेगी और जनता का प्रतियोगी परीक्षाओं पर विश्वास भी बढ़ेगा। बलिदानियों के परिजनों को अब 50 लाख की बजाय मिलेंगे एक करोड़ रुपये, हरियाणा सरकार का बड़ा एलान एचआरएमएस पोर्टल पर दर्ज होगा रिकॉर्ड मुख्यमंत्री ने बताया कि मानव संसाधन विभाग के पास राजकीय सेवाओं में कार्यरत कर्मियों और सेवानिवृत कर्मियों का पूरा डाटा होगा। एचआरएमएस पोर्टल पर कर्मियों की सेवा का पूरा रिकॉर्ड होगा। इसी के आधार पर कर्मियों के हित में आगामी फैसले लिए जाएंगे। एचआरएमएस पोर्टल पर पहले यह डाटा था कि प्रदेश में कितने कर्मचारी कार्यरत हैं, लेकिन कितने सेवानिवृत हो चुके हैं, इसका डाटा नहीं था। अब कर्मियों की सेवा का रिकॉर्ड एक जगह एकत्रित होगा।

गुरुग्राम में मेट्रो के विस्तार को लेकर ताजा अपडेट, इन जगहों पर बनेंगे स्टेशन

प्रात : किरण संवाददाता

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी साइबर सिटी और आसपास मेट्रो का जाल बिछाने को लेकर 24 दिसंबर को जीएमडीए एवं जीएमआरएल के अधिकारियों के साथ गुरुग्राम में बैठक करेंगे। नाम के अनुरूप साइबर सिटी में अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी मुख्यमंत्री चर्चा करेंगे। यह बैठक शाम चार बजे से पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में आयोजित होगी। इसमें अन्य सभी विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहेंगे। 24 दिसंबर को जीएमडीए एवं जीएमआरएल के अधिकारियों के साथ गुरुग्राम में बैठक नाम के अनुरूप साइबर सिटी में अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी उटकरेंगे चर्चा जागरण संवाददाता, गुरुग्राम। साइबर सिटी और आसपास के इलाकों में विकास की रफ्तार ट्रैफिक के दबाव की वजह से धीरे-धीरे कम होती जा रही है। विकास की रफ्तार बनी ही न रहे, बल्कि तेज हो, इसके लिए सार्वजनिक परिवहन की सुविधा को बेहतर करने पर तत्काल जोर देने की आवश्यकता है। इसे लेकर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी साइबर सिटी और आसपास मेट्रो का जाल बिछाने के बारे में 24 दिसंबर को गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) एवं गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड (जीएमआरएल) के अधिकारियों के साथ बैठक कर मंथन करेंगे। पुराने गुरुग्राम में मेट्रो विस्तार को लेकर क्या दिक्कत आ रही है, अन्य किन-किन इलाकों में साथ-साथ मेट्रो विस्तार करने पर तत्काल प्रभाव से जोर देना चाहिए, इस बारे में विस्तार से चर्चा की जाएगी। मेट्रो विस्तार के लिए पास हो चुका है बजट इसके साथ नाम के अनुरूप साइबर सिटी में अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी मुख्यमंत्री विकास से संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ चर्चा करेंगे। लगभग 10 साल पहले पुराने गुरुग्राम में मेट्रो विस्तार की योजना बनाई गई थी। इसके लिए बजट भी पास हो चुका है।

भारत से सिम ले जाकर मलेशिया में बेचता था शख्स, ऐसे करता था ठगी; आरोपित गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम साइबर पुलिस ने तमिलनाडु से एक शख्स को गिरफ्तार किया है जो भारत से सिम कार्ड लेकर मलेशिया में बेचता था। आरोपी इन सिम कार्ड का इस्तेमाल विदेश में बैठकर भारत के लोगों को ठगने के लिए करता था। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान मलेशिया के कुआलालाम्पुर निवासी जामिल बिन मोहम्मद इकबाल के रूप में हुई है। भारत से सिम लेकर मलेशिया में बेचनेवाला शख्स गिरफ्तार। जागरण संवाददाता, गुरुग्राम। गुरुग्राम साइबर पुलिस ने शनिवार को तमिलनाडु से एक ऐसे शख्स को पकड़ा है, जो भारत से सिम लेकर उसे मलेशिया में बेच देता था। पुलिस ने बताया कि इन्ही सिम के जरिए आरोपी विदेश में बैठकर भारत के लोगों को ठगी का शिकार बनाता था। आरोपित की पहचान मलेशिया के कुआलालाम्पुर निवासी जामिल बिन मोहम्मद इकबाल के रूप में की गई। पुलिसे ने बताया कि विदेश में बैठे ठग भारत के लोगों से ठगी करने के लिए इन्हीं सिमों का इस्तेमाल करते थे। पुलिस ने शनिवार को आरोपित को तामिलनाडु के त्रिची से पकड़ा है। वह 19 दिसंबर को ही भारत आया था। वह अभी तक दो बार में डेढ़ सौ से ज्यादा सिम मलेशिया ले जा चुका है। आरोपित को सिम देने वाले दो लोगों को अगस्त में ही पकड़ा जा चुका है। शादी समारोह में शामिल होने पहुंचा था आरोपी इनसे जब पूछताछ की गई तो जामिल के बारे में जानकारी मिली थी। इसके बाद साइबर पुलिस ने लुक आउट सर्कुलर जारी करवाया था। एयरपोर्ट पर उतरते ही एयरपोर्ट पुलिस ने आरोपी को धर दबोचा और गुरुग्राम पुलिस को जानकारी दी। आरोपी एक शादी समारोह में हिस्सा लेने यहां पहुंचा था। फरवरी 2024 में साइबर ठगों के गिरोह के संपर्क में आया। उन्होंने इससे सिम की डिमांड की थी।

सिरफिरे जुनैद की एक हरकत ने तोड़ा दुल्हन बनने का अरमान! शादी टूटने से आहत युवती ने उठाया खौफनाक कदम

बदायूं। बिल्सी के एक मोहल्ले में पड़ोस में रहने वाले जुनैद ने झूठे आरोप लगाते हुए हिना (काल्पनिक नाम) की शादी तुड़वा दी। युवती ने इसे अपनी और परिवार की इस बेइज्जती समझ कर फंदा लगाकर जान दे दी। सुबह जब वह कमरे से बाहर नहीं आई तो स्वजन ने दरवाजा तोड़कर देखा जहां वह फंदे पर लटकी मिली। युवती ने एक सुसाइड नोट छोड़ा है। जिसमें उसने आरोपित युवक और उसके परिवार के लोगों को अपनी मौत का जिम्मेदार बताया है। युवती के स्वजन की ओर से आरोपित जुनैद और उसके परिवार के पांच अन्य सदस्यों के विरुद्ध आत्महत्या के लिए मजबूर करने और आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने के मामले में प्राथमिकी पंजीकृत कराई है।

आर्थिक आजादी के शिल्पकार

भारत की आर्थिक आजादी के शिल्पकार, लगातार 10 साल तक देश के प्रधानमंत्री रहे, कई मील-पत्थर योजनाओं के सूत्रधार, महान अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह दिवंगत हो गए। उन्होंने 92 साल की भरी-पूरी जिंदगी जी और देश को दूसरी आजादी दिलाई, इससे ज्यादा एक जिंदगी में और क्या किया जा सकता था? लिहाजा उनका देहावसान उनकी पार्थिव नियति ही है। भारत आजाद देश था, लेकिन औसत भारतीय के स्वप्न और आर्थिक आयाम अपेक्षाकृत आजाद नहीं थे। हम एक गरीब और कर्जदार देश थे। बहरहाल आज विकासशील देश हैं और विकसित बनने का लक्ष्य तय किया है। 1991 के दौर में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार मात्र एक अरब डॉलर रह गया था, लिहाजा आयात का घोर संकट था। तत्कालीन चंद्रशेखर सरकार को पेट्रोलियम और उर्वरक के आयात के लिए 40 करोड़ डॉलर जुटाने के लिए 46.91 टन सोना इंग्लैंड और जापान के बैंकों में गिरवी रखना पड़ा था। उस दौर में कांग्रेसी प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने डॉ. मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनाया और उसी के साथ आर्थिक उदारीकरण ने भारत की दूसरी आजादी का अध्याय लिखना आरंभ कर दिया। हालांकि डॉ. सिंह के पहले बजट के मसविदे को प्रधानमंत्री राव ने खारिज कर दिया था। उनकी उम्मीदें लीक से हटकर थीं। डॉ. सिंह के सामने आर्थिक चुनौतियां रखी गईं और बहुत थोड़े से वक्त में उन्होंने ऐसा बजट तैयार किया, जिसने भारत के आर्थिक भाग्य को ही संकटों और अभावों से मुक्त कर दिया। अर्थव्यवस्था खोल दी गई। विदेशी निवेशकों और कंपनियों के लिए देश के दरवाजे खोल दिए गए। डॉ. सिंह कहा करते थे-भारत किसी से, क्यों डरे? हम विकास के ऐसे चरण में पहुंच चुके हैं, जहां विदेशियों से डरने के बजाय हमें उनका स्वागत करना चाहिए। हमारे उद्यमी किसी से कमतर नहीं हैं। हमें अपने उद्योगपतियों पर पूरा भरोसा है। अंततः 24 जुलाई, 1991 के उस बजट ने आर्थिक उदारीकरण का जो दौर शुरू किया, उसके दो साल के भीतर ही विदेशी मुद्रा भंडार 10 अरब डॉलर, यानी 10 गुना अधिक, हो गया। लाइसेंस और इंस्पेक्टर राज का दौर समाप्त हुआ और 34 क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का ऑटोमैटिक रूट तैयार कर दिया गया। कंपनियों पर कई पाबंदियां उठा ली गईं। कॉरपोरेट के पूंजीगत मुद्दों पर नियंत्रक खत्म किया गया और सेबी को संवैधानिक शक्तियां दी गईं। सॉफ्टवेयर निर्यात के लिए आयकर अधिनियम की धारा 80 एचएचसी के तहत कर-छूट की घोषणा भी की गई। वित्त मंत्री के तौर पर डॉ. मनमोहन सिंह ने जिन आर्थिक सुधारों का सूत्रपात किया, उन्हें प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने भी निरंतर बनाए रखा, नतीजतन भारत दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनता चला गया। उन आर्थिक सुधारों की बुनियाद पर ही आज भारत विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और विदेशी मुद्रा का भंडार 650 अरब डॉलर से अधिक का है। वास्तव में डॉ. मनमोहन सिंह भारत की आर्थिक आजादी के शिल्पकार ही नहीं, कोई फरिश्ता थे, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, भारत सरकार में आर्थिक सलाहकार, रिजर्व बैंक के गवर्नर से लेकर प्रधानमंत्री तक की व्यापक जिम्मेदारियां और भूमिकाएं एक ही व्यक्ति नहीं निभा सकता। यकीनन वह एक दुर्लभ शख्सियत थे। प्रधानमंत्री के तौर पर डॉ. सिंह ने कई मील-पत्थर योजनाओं को क्रियान्वित किया। उस विरासत और जनवादी सोच को कौन भूल सकता है? प्रधानमंत्री सिंह ने 6-14 साल की उम्र के बच्चों के लिए अनिवार्य, मुफ्त शिक्षा का कानून बनाया। सरकारी पारदर्शिता और जवाबदेही के मद्देनजर सूचना का अधिकार कानून बनाया। खाद्य सुरक्षा को कानूनी रूप दिया। साल में कमोबेश 100 दिन के रोजगार की गारंटी वाले मनरेगा का कानून लागू किया। उन्हें नमन।

नम्रता और कर्मठता की प्रतिबद्धता मनमोहन सिंह

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डां मनमोहन सिंह ने 92 वर्ष की उम्र में दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में 26 दिसंबर को अंतिम सांस ली। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे थे। डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर 1932 को अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के एक गांव में हुआ था। एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ सिंह ने अपने जीवन में शिक्षा, अर्थशास्त्र और राजनीति में असाधारण उपलब्धियां हासिल कीं। डॉ मनमोहन सिंह ने 1948 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (यूके) से 1957 में अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1962 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के नफील्ड कॉलेज से अर्थशास्त्र में डिलिट की उपाधि अर्जित की। शिक्षा के प्रति उनका लगाव उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अध्यापन की ओर ले गया। अनुकरणीय, भारतीय राजनीति और आर्थिक सुधारों में उनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा। 1971 में डॉ. सिंह भारत सरकार से जुड़े और वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार बने। 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय का मुख्य आर्थिक सलाहकार नियुक्त किया गया। इसके बाद उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें वित्त मंत्रालय के सचिव, योजना आयोग के उपाध्यक्ष, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष जैसे पद शामिल हैं। समर्पण, 1991 से 1996 तक, डॉ. सिंह भारत के वित्त मंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने आर्थिक सुधारों की एक व्यापक नीति लागू की, जिसे विश्वभर में सराहा गया। इन सुधारों ने भारत को आर्थिक संकट से उबारकर एक नई दिशा दी। डॉ. मनमोहन सिंह 1991 में पहली बार राज्यसभा के सदस्य बने। उन्होंने असम का प्रतिनिधित्व पांच बार किया और 2019 में राजस्थान से राज्यसभा सदस्य बने। 1998 से 2004 तक, जब भारतीय जनता पार्टी सत्ता में थी, डॉ. सिंह राज्यसभा में विपक्ष के नेता रहे। उन्होंने 1999 में दक्षिण दिल्ली से लोकसभा चुनाव भी लड़ा, लेकिन सफलता नहीं मिली। सेवापथ, 2004 के आम चुनावों के बाद 22 मई को उन्हें भारत के चौदहवें प्रधानमंत्री बने। उन्होंने 2009 में दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की और देश के विकास में अहम भूमिका निभाई। वह जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और नरेंद्र मोदी के बाद चौथे सबसे लंबे समय तक पीएम पद पर रहने वाले प्रधानमंत्री थे। अभिभूत, मनमोहन सिंह भारत के पहले सिख प्रधानमंत्री भी थे। लेखक, राजनीतिज्ञ, विचारक और विद्वान के रूप में प्रसिद्ध डॉ. मनमोहन सिंह अपनी नम्रता, कर्मठता और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते रहे। स्तुत्य, अपने सार्वजनिक जीवन में विभिन्न पुस्तकें के डॉ. मनमोहन सिंह को दिए गए कई पुरस्कारों और सम्मानों में से सबसे प्रमुख भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म विभूषण (1987) था। इसके अलावा उन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस का जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार (1995), एशिया मनी अवार्ड (1993 और 1994), यूरो मनी अवार्ड (1993), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (1956) का एडम स्मिथ पुरस्कार, कैम्ब्रिज के सेंट जॉन्स कॉलेज में विशिष्ट प्रदर्शन के लिए राइट पुरस्कार (1955) भी मिला था। उन्हें जापानी निहोन किजई शिम्बुन एवं अन्य देशों द्वारा सम्मानित किया गया था। डॉ. मनमोहन सिंह को कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड तथा अन्य कई विश्वविद्यालयों द्वारा मानद उपाधियां भी प्रदान की गई थीं। वाहेगुरु जी उनकी आत्मा को सद्गति और देशवासियों को यह दुःख सहने की शक्ति दें।

नेहरू को छोटा करने की नहीं, उनके काम से होड़ करने की जरूरत

आजादी के पहले भी मैसूर के राजा कृष्णा वाडियार ने कृष्ण राजा सागर बांध का 1911 में निर्माण शुरू किया था जिसे 1932 में मैसूर की जनता को समर्पित किया गया। इसके बाद ही आजादी के बाद बने बांधों का सिलसिला शुरू होता है। आजादी के प्रथम वर्ष में भारत का कुल बजट मात्र 184 करोड़ रुपए था और पूरे देश में भुखमरी की स्थिति थी। 1943 में ही बंगाल के दुर्भिक्ष में 30 लाख लोग भूख से अपनी जान गँवा चुके थे। भुखमरी के इन हालातों में देश को आजादी मिली थी। यह स्पष्ट था कि खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाये बिना हम अपने लोगों का पेट नहीं भर सकते। उसके लिए सिंचाई चाहिए, नदियों पर बांध चाहिए किंतु हमारे पास धन भी नहीं था। ऐसे हालातों में भी 1947 में ही जवाहरलाल नेहरू ने उड़ीसा की महानदी पर हीराकुंड बांध की शुरूआत की, जिसे 1957 में देश को समर्पित किया गया।

भूपेन्द्र गुप्ता
लेखक

देश में आज विकास को लेकर नए-नए नरेटिव गढ़ने के अलावा इतिहास के पन्नों को कलंकित करने का चलन चल पड़ा है। संगठित रूप से आजादी के बाद की सरकारों के कामकाज और योगदान को नीचा दिखाने की आक्रामक कोशिशें हो रही.हैं। नई पीढ़ी में शोध के अभाव को देखकर उसे बरगलाने की चेष्टा की जा रही है। देश को उसके सही स्वरूप में पहचान कर देश के विकास की यात्रा की समझ और विकास की कल्पना को चोट पहुंचाई जा रही है। जिससे वास्तविक इतिहास को जानने से ही रोका जा सके। देश के नेताओं को सुविधानुसार मिस कोट किया जा रहा है। मध्य प्रदेश में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के दौरान ऐसी ही बातें रखी गई जिससे महसूस हो कि जवाहरलाल नेहरू के समय से ही विकास की योजनाओं की उपेक्षा की गई। यहां तक कहा गया कि देश में बड़े-बड़े बांध बनाने और जल संरक्षण को समझने का काम देश में अन्य लोगों ने किया है। जल संसाधनों के संदर्भ में प्रधानमंत्री जी ने घुमाकर यह भी बताया कि जलशक्ति को मजबूत करने के दूसरे नेताओं के प्रयासों को जवाहरलाल नेहरू के नाम पर चिपका दिया गया। क्या इस तरह का नेरेटिव बनाया जाना उचित है। क्या यह सत्य है या महज नेहरू जी को नीचा दिखाने और संसद में बाबासाहब का उपहास करने से पैदा हुए संकट से निकलने के लिये भाजपा की रणनीति है। इसे समझने के लिए बेहतर होगा कि हम देश में जल संरचनाओं के इतिहास को जानें और समझें। सभी जानते हैं कि डॉ बाबासाहेब अंबेडकर की मृत्यु 1956 में हो गई थी और वह नेहरू जी के मंत्रिमंडल में कानून मंत्री थे उनकी पूरी शक्ति संविधान की ड्राफ्टिंग, संविधान सभा के सभी सदस्यों के योगदान का संकलन कर संविधान को उसका स्वरूप देना था। न कि बांध बनवाना। तब भाजपा 2024 में बनने वाले दुहान बांध के बहाने युग पुरुषों को लड़वाने का नया काम क्यों शुरू कर रही है। भारत में नदियों को बांधने का इतिहास बहुत पुराना है। देश का सबसे पुराना बांध तमिलनाडु की कावेरी नदी पर बनाया गया था। जिसे कल्लणै बांध कहते हैं। इसे 150 ईश्वी से 100 ईश्वी के बीच में चोल राजा करिकल ने बनवाया था। इसका अर्थ है कि नदियों को बांधने और जल संरचनाओं को बचाने तथा संरक्षित करने के लिए भारत में बांध बनाने की तकनीकी और संकल्प शक्ति हजारों साल पहले ही आ चुकी थी। आजादी के पहले भी मैसूर के राजा कृष्णा वाडियार ने कृष्ण राजा सागर बांध का 1911 में निर्माण शुरू किया था जिसे 1932 में मैसूर की जनता को समर्पित किया गया। इसके बाद ही आजादी के बाद बने बांधों का सिलसिला शुरू होता है। आजादी के प्रथम वर्ष में भारत का कुल बजट मात्र 184 करोड़ रुपए था और पूरे देश में भुखमरी की स्थिति थी। 1943 में ही बंगाल के दुर्भिक्ष में 30 लाख लोग भूख से अपनी जान गँवा चुके थे। भुखमरी के इन हालातों में देश को आजादी मिली थी। यह स्पष्ट था कि खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाये बिना हम अपने लोगों का पेट नहीं भर सकते। उसके लिए सिंचाई चाहिए, नदियों पर बांध चाहिए किंतु हमारे पास धन भी नहीं था। ऐसे हालातों में भी 1947 में ही जवाहरलाल नेहरू ने उड़ीसा की महानदी पर हीराकुंड बांध की शुरूआत की, जिसे 1957 में देश को समर्पित किया गया। इस बांध से 47 लाख एकड़ फीट जल संग्रहण और 347 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ। इसके तत्काल बाद 1948 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तमिलनाडु में भवानी सागर बांध का शिलान्यास किया जो 1955 में पूरा हुआ। यह एक अर्दन डेम था जिसके माध्यम से 16 मेगावाट बिजली भी पैदा की जानी थी। इसी तरह पंजाब में सतलज नदी पर 1948 में ही भाखड़ा नंगल बांध की नींव डाली गई। यह उस समय तक का सबसे बड़ा बांध था जिसमें 75 लाख एकड़ फीट जल संग्रहण होना था और 1325 मेगावाट बिजली का उत्पादन होना था। जब 1963 में यह बांध देश को समर्पित किया गया तो इसके माध्यम से हरित क्रांति का आगाज हुआ। मैक्सिकन लाल गेहूं पर निर्भर भारत की जनता देशी खाद्यान्न की आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ी। कर्नाटक की तुंगभद्र नदी पर 1949 में कंपोजिट स्पिल वे डेम का शिलान्यास जवाहरलाल नेहरू ने किया जो 1953 में पूर्ण हुआ। इससे 127 मेगावाट बिजली का निर्माण होता था। उत्तरप्रदेश में 1953 में रिहंद बांध की शुरूआत की गई जो 1962 में देश को समर्पित किया गया इससे 300 मेगावाट बिजली का निर्माण शुरू हुआ। तेलंगाना में 1955 में कृष्णा नदी पर नागार्जुन सागर बांध की शुरूआत हुई जिसे 1967 में देश को समर्पित किया गया इस बांध से न केवल 93.72 लाख एकड़ फुट पानी सिंचाई के लिए मिला बल्कि 816 मेगावाट बिजली का भी उत्पादन हुआ। इसी तरह महाराष्ट्र की कोयना नदी पर 1956 में जवाहरलाल नेहरू ने कोयना बांध की शुरूआत की जिसे 1964 में देश को समर्पित किया गया। इस बांध से 24 लाख एकड़ फीट जल संग्रहण और 1960 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ। आज के झारखंड में 1957 में मैथोन बांध की शुरूआत की गई यह बांध 60 हजार किलोवाट बिजली का उत्पादन भी करता है। मध्य प्रदेश की नर्मदा नदी पर 1956 में ही तवा बांध जो एक स्पिलवे बांध है, का निर्माण शुरू हुआ जो 1974 में देश को समर्पित किया गया। आज देश में जिस सरदार सरोवर बांध की बार-बार चर्चा होती है उस सरदार सरोवर बांध की आधारशिला भी जवाहरलाल नेहरू ने 1961 में सरदार वल्लभ भाई पटेल के नाम पर रख दी थी जिसके माध्यम से आज मध्य प्रदेश महाराष्ट्र को बिजली और गुजरात को पानी मिल रहा है। तीनों प्रदेश इससे बनने वाली बिजली से रोशन हो रहे हैं। प्रथम प्रधानमंत्री मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने दो-दो युद्धों का सामना करने के बावजूद अपने 17 साल के कार्यकाल में उड़ीसा की महानदी, तमिलनाडु की भवानी, कर्नाटक की तुंगभद्रा, उत्तरप्रदेश की रिहन्द, पंजाब की सतलज, मध्यप्रदेश की नर्मदा, महाराष्ट्र की कोयना, झारखंड की बारकार, तेलंगाना की कृष्णा नदियों को बांध दिया था। वे एक मिशनरी की तरह जुनूनी की तरह इस काम में लगे क्या यह आसान काम था?नौ राज्यों की नौ नदियों को बांधकर 17 साल में देश को समर्पित करना भगीरथी कल्प था। नेहरू ने यह काम तब कर दिखाया जब न पोकलेन थी न जेसीबी थी न इतनी उन्नत तकनीकि थी नेहरू के पुरुषार्थ को छोटा करने का कोई भी प्रयत्न देश के पुरुषार्थ को छोटा करने का प्रयत्न है। आज नेहरू को छोटा करने की नहीं उनके काम से होड़ करने की जरूरत है।

उदारीकरण एवं आर्थिक सुधार के महासूर्य का अस्त होना...

जिससे एक सशक्त राष्ट्रनायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, भारत में नये अर्थ के निमार्ता, कुशल प्रशासक, दार्शनिक के साथ-साथ भारत को आर्थिक महाशक्ति का एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग है, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, दार्शनिक और चिंतक हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. सिंह के निधन पर कहा है कि जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करना आसान बात नहीं है। एक नेक इंसान के रूप में, एक विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहे, केंद्रीय वित्त मंत्री व प्रधानमंत्री- पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे।

ललित गर्ग
लेखक

भारत के धुरंधर अर्थशास्त्री, प्रशासक, कद्दावर नेता, दो बार प्रधानमंत्री रह चुके डॉ. मनमोहन सिंह का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनके निधन से आर्थिक सुधार का महासूर्य अस्त हो गया, भारतीय राजनीति में एक संभावनाओं भरा राजनीति सफर ठहर गया, जो राष्ट्र के लिये एक गहरा आघात है, अपूरणीय क्षति है। वे निश्चित ही आर्थिक सुधारों एवं उदारीकरण के नींव के पत्थर थे, मील के पत्थर थे। वे आर्थिक सुधार की बुलंद आवाज थे। उन्हें आर्थिक सुधार, भारत में वैश्विक बाजार व्यवस्था एवं उदारीकरण का जनक कहा जा सकता है। जिन्होंने न केवल देश-विदेश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन-जन के हृदय में स्थापित कर हमसे जुदा हो गये हैं। डॉ. सिंह यह नाम भारतीय इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त राष्ट्रनायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, भारत में नये अर्थ के निमार्ता, कुशल प्रशासक, दार्शनिक के साथ-साथ भारत को आर्थिक महाशक्ति का एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग है, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, दार्शनिक और चिंतक हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. सिंह के निधन पर कहा है कि जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करना आसान बात नहीं है। एक नेक इंसान के रूप में, एक विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहे, केंद्रीय वित्त मंत्री व प्रधानमंत्री- पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। वे भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार चलाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, पारदर्शी एवं सुशासन को सुदृढ़ किया। विलक्षण प्रतिभा, राजनीतिक कौशल, कुशल नेतृत्व क्षमता, बेवाक सोच, निर्णय क्षमता, दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता के कारण कांग्रेस के सभी नेता उनका लोहा मानते रहे, उनके लिये वे मार्गदर्शक ही नहीं, प्रेरणास्रोत भी है। वे बेहद नम्र इंसान थे और वह अहंकार से कोसों दूर थे। उनके प्रभावी एवं बेवाक व्यक्तित्व से भारतीय राजनीति एवं लोकतांत्रिक संस्थान चमकते रहे हैं। डॉ. सिंह ने भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजारों के लिए खोलने के लिए उदारीकरण सुधार लागू किए। साथ ही, उन्होंने लाइसेंस राज समाप्त कर, निजीकरण और राज्य नियंत्रण में कमी की। डॉ. सिंह द्वारा विदेशी निवेश को आकर्षित करने के साथ निर्यात को प्रोत्साहित किया गया। डॉ. सिंह का जन्म ब्रिटिश भारत के पंजाब में 26 सितम्बर 1932 को हुआ था। उनकी जन्मतिथि भी 26 एवं निधन तिथि भी 26 एक संयोग ही कहा जायेगा। उनकी माता का नाम अमृत कौर और पिता का नाम गुरुमुख सिंह था। देश के विभाजन के बाद सिंह का परिवार भारत चला आया। डॉ. सिंह की पत्न ी का नाम गुरशरण कौर है, जो कि एक गृहिणी और गायिका भी हैं। उनके तीन बेटियां हैं। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। बाद में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये। जहाँ से उन्होंने पीएच. डी. की। तत्पश्चात उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. भी किया। डॉ॰ सिंह ने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर काफी ख्याति अर्जित की। वे पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में प्राध्यापक रहे। इसी बीच वे संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन सचिवालय में सलाहकार भी रहे और 1987 तथा 1990 में जेनेवा में साउथ कमीशन में सचिव भी रहे। 1971 में डॉ॰ सिंह भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किये गये। इसके तुरन्त बाद 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया। इसके बाद के वर्षों में वे योजना आयोग के उपाध्यक्ष, रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष भी रहे हैं। भारत के आर्थिक इतिहास में हाल के वर्षों में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब डॉ॰ सिंह 1991 से 1996 तक भारत के वित्त मन्त्री रहे। डॉ. सिंह ने भारत के 13वें प्रधानमंत्री के रूप में लगातार दो कार्यकाल पूरे किए हैं। पहले कार्यकाल के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू किया। वहीं सूचना का अधिकार अधिनियम भी उनके कार्यकाल में आया। इसके अतिरिक्त उन्हें ऐतिहासिक भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता पर हस्ताक्षर के लिए भी जाना जाता है। दूसरे कार्यकाल में उन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास और सामाजिक कल्याण योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि, इस दौरान उन्हें 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला और राष्ट्रमंडल खेल घोटाले जैसे विवादों का भी सामना करना पड़ा। यह बात हम सभी जानते हैं कि उन्हें मौन पीएम भी कहा जाता था, हालांकि उन्होंने इस पर चुप्पी तोड़ते हुए सार्वजनिक रूप से इसका सटीक जवाब भी दिया था।

किसी एक की सल्तनत के अंत का आरंभ

पंकज शर्मा

अखिल भारतीय संत समिति के महासचिव जितेंद्रानंद सरस्वती से ले कर रामभद्राचार्य तक और चक्रपाणि जैसों से ले कर देवकीनंदन ठाकुर जैसों तक को मोहन भागवत की कही बात पर त्रिशूल ताने खड़ा देखने के पीछे की नीयत तो कोई भी समझ सकता है, मगर अविमुक्तेष्वरानंद सरीखे चैतन्य मनीषी को इस प्रसंग में भागवत-विरोधी छतरी के नीचे खड़ा देख कर किसी को हैरत हो रही हो, न हो रही हो, मैं तो अवाक हूं। मैं दो.साल से कह रहा था कि हिंदू हृदय सम्राट की पदवी के अलंकरण का सिंगारदान अब तलवार की म्यान में तब्दील हो चुका है, प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के उस में एक साथ विराजे रहने के दिन लद गए हैं और 2025 में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा लालकिले से देश को संबोधित करते-करते दोनों में से एक के लिए विदा लेने की नौबत आ जाएगी। मगर मेरी इस पेशीनगोई पर मुझे परायों की गाली-गलौज तो सुननी ही पड़ रही थी, अपने भी दूर की कौड़ी कह कर नाक-भौं सिकोड़ रहे थे। मैं मुसलसल कह रहा था कि भागवत-कथा के समापन का फैसला तो नरेंद्र भाई सितंबर-2015 के पहले हफ्ते में ही मन-ही-मन ले चुके थे और उस के बाद से तो वे सिर्फ.ह्यदुआ-सलाम बनी रहेह्न का दिखावा कर रहे हैं, लेकिन अपने को दक्षिण, वाम और मध्यमार्गी राजनीति का आचार्य मानने वाले मेरे लिखे-कहे को अयथातथ बता कर खारिज करते रहे। मगर अब आज का दृश्य क्या है? भागवत जी और नरेंद्र भाई के रिश्ते क्या अब आप को सास-बहू मंजिल की कगार तक पहुंच गए नहीं लग रहे हैं? रोज-रोज मंदिर-मस्जिद विवाद उठाने वालों को आड़े हाथों लेने के बाद से जिस तरह हिंदू धर्म के कई सर्वमान्य, अर्धमान्य और स्वयंभू संत-महात्मा भागवत जी पर पिल पड़े हैं, क्या वह आप को सायास नहीं लग रहा है? हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजने की प्रवृत्ति पर संघ-प्रमुख ने प्रहार कोई पहली बार तो किया नहीं है। तो फिर उन की ऐसी सलाह की चदरिया को इसी बार इतना दागदार करने की कोशिशें क्यों हो रही हैं? इसलिए हो रही हैं कि अगले बरस के अंतिम चार महीनों में भारत की राजनीति के करवट लेने के आसार बढ़ते जा रहे हैं। आठ महीने बाद इस महाभारत के अठारहवें दिन के युद्ध की शुरूआत होगी और तब अलग-अलग प्रहरों की उठापटक में यह तय होगा कि संघ आगे भी भाजपा के पितामह की भूमिका में ही बना रहेगा या उसे अपनी संतान का मोहताज बन कर जिंदगी गुजारनी पड़ेगी? अखिल भारतीय संत समिति के महासचिव जितेंद्रानंद सरस्वती से ले कर रामभद्राचार्य तक और चक्रपाणि जैसों से ले कर देवकीनंदन ठाकुर जैसों तक को मोहन भागवत की कही बात पर त्रिशूल ताने खड़ा देखने के पीछे की नीयत तो कोई भी समझ सकता है, मगर अविमुक्तेष्वरानंद सरीखे चैतन्य मनीषी को इस प्रसंग में भागवत-विरोधी छतरी के नीचे खड़ा देख कर किसी को हैरत हो रही हो, न हो रही हो, मैं तो अवाक हूं। स्थूल-बुद्धिधारकों को भी यह अच्छी तरह दीख रहा है कि भागवत के ताजा बयान पर बवाल कौन खड़ा करवा रहा है और क्यों खड़ा करवा रहा है। राजप्रासाद के दालान में चल रहे इस मल्लयुद्ध की परछाइयों के दिग्दर्शन के लिए किसी दिव्यदृष्टि की जरूरत नहीं है। बिना आंखों के भी यह देखा जा सकता है कि भागवत पर हो रही ढेलेबाजी के पत्थर किस छत पर रखे हैं। ऐसे में किसी अविमुक्त का महापातकी रुझान मेरी तो समझ में नहीं आ रहा। मुझे बस इतना समझ में आ रहा है कि संघ-प्रमुख के पास मदमस्त मतंग की चाल-ढाल नियंत्रित करने का जो अंकुश है, वह किसी भी हिंदू धर्म गुरु या उन के समूह के पास नहीं है। इसलिए कि किसी भी हिंदू मठाधीश के पास वह पैदल सेना नहीं है, जो मतदान-प्रबंधन की जमीनी कूवत रखती हो। मुझे नहीं लगता कि भागवत हिंदू धर्म की ठेकेदारी हासिल करने की ख़्वाहिश रखते होंगे, लेकिन हिंदू-मतों के अचला-संयोजन में वे किसी भी रामभद्राचार्य से कहीं ज्यादा प्रभावशाली हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पथ-संचलन शक्ति के सामने अखिल भारतीय संत समिति की कोई संरचित बिसात ही नहीं है। इसलिए हिंदुओं को संगठित करने की ठेकेदारी कोई भागवत को दे-न-दे, यह इजारेदारी तब तक उन्हीं के पास रहेगी, जब यही वजह है कि भागवत को संघ-प्रमुख की आसंदी से धकेलने की कवायद पिछले चार-पांच बरस से अपने उरूज पर है। 2024 के आम चुनाव के समय जब नरेंद्र भाई के इशारे पर भाजपा-अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने संघ की हैसियत यह कह कर कमतर दिखाने का अपकर्म किया कि अब भाजपा स्वयं-सक्षम है और उसे किसी भी चुनाव में संघ के सहारे की जरूरत नहीं है तो हम ने देखा कि किस तरह भागवत ने ऐसा उलट-पुराण पढ़ा कि नरेंद्र भाई धम्म से स्पष्ट बहुमत के नीचे गिर पड़े। रामलला का भव्य-दिव्य मंदिर जब बिना संघ-सहयोग के अयोध्या तक में भाजपा को जीत नहीं दिला पाया तो नरेंद्र भाई का अघोषित दूत बन कर जगत प्रकाश दौड़े-दौड़े नागपुर के संघ मुख्यालय पहुंचे और अपने कहे-कहाए की माफी मांगी। भागवत तब क्षमावंत नहीं होते तो क्या तकनीकी कलाकारी के बावजूद हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव नतीजे ऐसे आ पाते? संत समाज के बयानवीर भावनात्मक लहरों का कैसा ही उफान उठा दें, लेकिन अगर उन तरंगों को भाजपा के लिए वोट में बदलने का जिम्मा संभालने से संघ के स्वयंसेवक इनकार कर दें तो क्या होता है झ यह नरेंद्र भाई देख चुके हैं।

मनमोहन सिंह की अंत्येष्टि को लेकर कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए: सपा एवं बसपा

प्रात : किरण संवाददाता

लखनऊ,। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की प्रमुख मायावती ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अंत्येष्टि स्थल और स्मारक के चयन को लेकर केंद्र सरकार को घेरते हुए कहा कि इस मामले में कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। गृह मंत्रालय ने कहा था कि सिंह का अंतिम संस्कार शनिवार को पूरे राजकीय सम्मान के साथ नई दिल्ली के निगमबोध घाट पर पूर्वाह्न 11 बजकर 45 मिनट किया जाएगा। राजनीतिक दलों ने इसके बाद ही हमले करने शुरू कर दिए। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने शुक्रवार देर रात सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, देश के पूर्व प्रधानमंत्री (मनमोहन सिंह) जी की समाधि के संदर्भ में सम्मान की परंपरा का निर्वहन होना चाहिए। इस विषय पर न किसी राजनीति की आवश्यकता है, न होनी चाहिए। यादव ने कहा, डॉ. मनमोहन सिंह जी की समाधि राजघाट पर ही बननी चाहिए। भाजपा अपनी संकीर्ण सोच का अनुचित उदाहरण प्रस्तुत न करे। इतिहास भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) को उसके इस नकारात्मक नजरिये के लिए कभी माफ नहीं करेगा। पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने भी एक्सह पर एक ह्यपोस्टह्व के जरिए नसीहत देते हुए शनिवार को कहा कि केंद्र सरकार को देश के पहले सिख प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार उसी स्थान पर करना चाहिए और उनके सम्मान में उसी स्थान पर स्मारक बनवाना चाहिए जहां उनके परिवार की दिली इच्छा है। मायावती

ने कहा, इसके लिए कोई राजनीति करना ठीक नहीं है और इन मामलों में यदि केंद्र सरकार उनके परिवार एवं सिख समाज की भी भावनाओं का सम्मान करती है तो यह उचित होगा। पूर्व प्रधानमंत्री का बृहस्पतिवार की रात निधन हो गया था। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने शुक्रवार रात कहा था कि सरकार पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के स्मारक के लिए स्थान आवंटित करेगी और इस बारे में उनके परिवार तथा कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को सूचित कर दिया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय डॉ. मनमोहन सिंह के स्मारक के संबंध में तथ्य शीर्षक से देर रात जारी एक विज्ञप्ति में मंत्रालय ने कहा कि सरकार को कांग्रेस प्रमुख खरगे से सिंह के स्मारक के लिए स्थान आवंटित करने का अनुरोध प्राप्त हुआ है। कैबिनेट की बैठक के तुरंत बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने खरगे और मनमोहन सिंह के परिवार को सूचित किया कि सरकार स्मारक के लिए स्थान आवंटित करेगी। खरगे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर आग्रह किया था कि पूर्व प्रधानमंत्री सिंह का अंतिम संस्कार ऐसे स्थान पर किया जाए जहां उनका एक स्मारक बन सके। कांग्रेस ने शुक्रवार को आरोप लगाया था कि मनमोहन सिंह की अंत्येष्टि और स्मारक के लिए सरकार द्वारा स्थान नहीं ढूंढ पाना भारत के पहले सिख प्रधानमंत्री का जानबूझकर किया गया अपमान है।

बरेली में किसान की सोते समय गला दबाकर हत्या

बरेली,। बरेली जिले के ग्रामीण क्षेत्र के सिरौली थाना क्षेत्र के जगन्नाथपुर में एक किसान की सोते वक्त कथित तौर पर अज्ञात लोगों ने गला दबाकर हत्या कर दी। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार घटना शुक्रवार/शनिवार की दरमियानी रात ढाई बजे के आसपास हुई, जब ज्ञानी प्रसाद (62) अपने घर के बरामदे में सो रहे थे। उत्तरी क्षेत्र के अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) मुकेश चंद्र मिश्रा ने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची, तो देखा कि प्रसाद का शव बिस्तर पर पड़ा था और गले पर निशान होने के अलावा मुंह और नाक से खून निकल रहा था। अधिकारी ने कहा कि पुलिस मामले की जांच कर रही है और जल्द ही हत्यारों को पकड़ लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक के भाई नेकपाल ने बताया कि ज्ञानी प्रसाद की किसी से भी कोई दुश्मनी नहीं थी, फिर भी उनकी हत्या कर दी गई। उन्होंने कहा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद पुलिस को हत्यारों के खिलाफ तहरीर दी जाएगी

संक्षिप्त खबरें

अमेठी में बहन से छेड़खानी का विरोध करने पर भाई पर हमला, पुलिस पर लापरवाही का आरोप

अमेठी । अमेठी जिले के जगदीशपुर थाना इलाके में नौवीं कक्षा में पढ़ने वाली बहन से कथित छेड़छाड़ का विरोध करने पर एक युवक पर बदमाशों ने धारदार हथियार से हमला कर दिया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। परिवार के लोगों ने प्रभारी निरीक्षक और एक सिपाही पर इस मामले में लापरवाही के गंभीर आरोप लगाये है। हालांकि पुलिस ने आरोपों का खंडन किया है। पीड़िता ने बताया कि वह स्कूल जाती है तो कुछ लड़के उसके साथ अभद्र व्यवहार,व छेड़खानी करते हैं, जिसके बारे में परिजन को बताने पर परिवार के लोगों को जान से मारने की धमकी मिलने लगी।लड़की ने कहा कि इसकी शिकायत थाना जगदीशपुर में की गयी लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई और पुलिसकर्मी छेड़खानी का सबूत मांग रहे थे। छात्रा का आरोप है उन्हीं लोगों ने आज उसके भाई रंजीत (26) पर धारदार हथियार से हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और उसे इलाज के लिए जगदीशपुर सामुदायिक स्वा स्वह केन्द्री में भर्ती कराया गया है।

उत्तर प्रदेश के संभल में पुलिस चौकी निर्माण से पहले हुआ भूमि पूजन

संभल, । उत्तर प्रदेश के संभल में शाही जामा मस्जिद के पास स्थित खाली भूमि पर पुलिस चौकी के निर्माण के लिए शनिवार को भूमि पूजन हुआ। संभल एएसपी श्रीश चंद्र ने बताया कि सुरक्षा-व्यवस्था को देखते हुए पुलिस चौकी का निर्माण किया जा रहा है। एएसपी श्रीश चंद्र ने बताया कि इसके आस-पास पुलिसकर्मियों की आवासीय व्यवस्था भी की जाएगी। भूमि पूजन सम्पन्न हो गया है। अब लेआउट के अनुसार काम होगा। यहां पर पर्याप्त पुलिस बल मौजूद रहेगा जिससे सुरक्षा व्यवस्था मुस्तैद रहे। पंडित शोभित शास्त्री ने बताया कि किसी भवन के निर्माण से पहले हम लोग वास्तु मंडल देवता का पूजन करते हैं। यहां पर चौकी के निर्माण के लिए भूमि पूजन हुआ है। इसके निर्माण में कोई वास्तु दोष न रहे, भगवान से यही कामना की गई है। शुभ मुहूर्त में इसका स्थिर लग्न में पूजन हुआ है। बहुत शुभ नक्षत्र में इसका पूजन हुआ है। चौकी का नाम रखना प्रशासनिक निर्णय है। लेकिन सत्यव्रत रखते हैं तो अच्छा है।

वाराणसी में बारिश ने बढ़ाई ठंड, मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट

वाराणसी, । वाराणसी में मौसम ने अचानक ही करवट बदली है। देश के अन्य हिस्सों की तरह ही यहां भी बारिश होने लगी है। आगामी दिनों में पारा लुढ़ेगा इसे लेकर मौसम विभाग ने अलर्ट जारी कर दिया है। मौसम विभाग इसे पहाड़ों पर पड़ रही बर्फ और पश्चिमी विक्षोभ का असर बता रहा है। मौसम के अचानक करवट बदलने से आम लोगों का जीवन भी प्रभावित हुआ है। ठंज से बचने के लिए लोग ठंड से बचने के लिए अलाव और गर्म चाय का सहारा लेते हुए दिखाई दे रहे है। पौष स्नान करने वालों की तादाद में भी थोड़ी गिरावट आई है। इससे पुरोहित थोड़े मायूस हैं। घाट पर बैठे श्रद्धालुओं का इंतजार कर रहे हैं और कह रहे हैं आमदनी पर असर पड़ा है। वहीं, एक पर्यटक रश्मि शुक्ला ने कहा कि हमने गंगा के किनारे ठंड के बारे में जो सुना था वह सच हो रहा है। ठंड काफी है और लोगों को कंपकंपा रही है। मैं मध्य प्रदेश सतना की रहने वाली हूं। यहां बादल काफी है। धूप नहीं हवा चल रही है। आशीष कुमार का कहना है कि यहां बादल छाये हुए हैं और सर्द हवा चल रही है। हम लोग परिवार के साथ घूमने आए हैं। धूप होती तो अच्छा होता लेकिन इस ठंड में हम लोग घूम रहे हैं। परिवार संग धार्मिक नगरी पहुंचे अजय मिश्रा ने कहा कि वाराणसी में गलन है।

योगी ने अरुण जेटली की जयंती और कुशाभाऊ ठाकरे की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी

प्रात : किरण संवाददाता

लखनऊ,। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली की जयंती और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पूर्व अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने संदेश में कहा कि पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री, पद्म विभूषण अरुण जेटली जी की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! आत्मनिर्भर भारत-सशक्त भारत के निर्माण में उनके योगदान अविस्मरणीय और प्रेरणादायक हैं। ठाकरे का स्मरण करते हुए एक अन्य पोस्ट में मुख्यमंत्री योगी ने कहा कुशल संगठनकर्ता एवं असंख्य कार्यकताओं के प्रेरणास्रोत भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! भाजपा के दिग्गज नेता रहे अरुण जेटली का जन्म 28 दिसंबर, 1952 को हुआ था और लंबी बीमारी के बाद 24 अगस्त, 2019 को उनका निधन हो गया। जेटली वित्त मंत्री, रक्षा मंत्री समेत अन्य कई अहम पदों पर रहे। जनसंघ के संस्थापक सदस्य और भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे का जन्म 15 अगस्त 1922 में मध्य प्रदेश के धार इलाके में हुआ था। 28 दिसंबर 2003 को उनका निधन हो गया था।

मनमोहन सिंह के परिवार और सिख समाज की भावनाओं का सम्मान करे केंद्र सरकार : मायावती

प्रात : किरण संवाददाता

लखनऊ,। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नाम स्मारक बनाने के लिए केंद्र सरकार से मांग की। मायावती ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि केंद्र सरकार देश के पहले सिख प्रधानमंत्री रहे डा. मनमोहन सिंह के देहांत होने पर उनका अंतिम संस्कार जहां करें वहीं सम्मान में स्मारक आदि बनवाएं जहां उनके परिवार की दिली इच्छा है। उन्होंने आगे लिखा कि इसके लिए कोई भी राजनीति करना ठीक नहीं है और इन मामलों में केंद्र सरकार इनके परिवार की व सिख समाज की भी भावनाओं का जरूर सम्मान करे तो यह उचित होगा। मायावती का ये पोस्ट कांग्रेस की उस मांग के बाद आया है जिसमें उसने केंद्र से अंतिम संस्कार स्थल पर ही स्मारक बनाने की अपील की है। गौरतलब है कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह लंबे समय से बीमार चल रहे थे। तबीयत बिगड़ने के बाद गुरुवार को उन्हें दिल्ली एम्स में भर्ती कराया गया था। मनमोहन सिंह ने एम्स के आपातकालीन विभाग में अंतिम सांस ली। दिल्ली एम्स की ओर से आधिकारिक बयान जारी कर उनकी निधन की पुष्टि की गई थी। दिल्ली एम्स ने अपने आधिकारिक बयान में बताया कि वह उम्र संबंधी समस्याओं से जूझ रहे थे और 26 दिसंबर को वह घर पर अचानक बेहोश हो गए थे। इसके बाद घर पर उन्हें तत्काल उपचार दिया गया। उन्हें शाम 8.06 बजकर एम्स के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया। इन सब प्रयासों के बावजूद उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ और रात 9.51 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। ज्ञात हो कि मनमोहन सिंह साल 2004 से 2014 तक दो बार प्रधानमंत्री रहे थे। उनकी गिनती देश के बड़े अर्थशास्त्रियों में होती थी।

अखिल भारतीय किसान सभा ने की किसानों को उन्नत प्रजाति का गन्ना बीज दिलाने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा।अखिल भारतीय किसान सभा शाखा स्योहारा ने किसानों को उन्नत प्रजाति का गाना बीज दिलाने की ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक से मांग की। अखिल भारतीय किसान सभा शाखा स्योहारा के पदाधिकारीयो ने गन्ना विकास परिषद कार्यालय भूड़ कालोनी स्योहारा में पहुंचकर मांग पत्र के माध्यम से ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक वीरेंद्र नाथ से किसानों को उन्नत प्रजाति का गन्ना बीज दिलाने की मांग की। उन्होंने लिखित में अवगत कराया कि पिछले साल से लाल सड़न रोग के कारण किसने की गन्ना फसल बर्बाद हो रही है जिससे पैदावार बहुत कम हो रही है और मिल प्रबंधन ने भी

गन्ना मेली खाद के दाम दोगुने कर दिए हैं। जिस कारण किसानों की आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। और किसान अधिक परेशान हो रहा है। सत्र 2025 की गन्ना बुवाई के लिए अखिल भारतीय किसान सभा किसानों को उचित मूल्य पर उत्तम प्रजाति का गन्ना बीज दिलाने की मांग करती है। इस मौके पर इंद्र कुमार शर्मा मंडल अध्यक्ष, इसरार अली एडवोकेट कार्यकारी सदस्य जिला कमेटी, चौधरी जरीफ अहमद, कन्हैया सिंह, जाबिर अली, मतलब जलील उजैफ, शाहबाज, अल्तमश अली फरीद अहमद आदि उपस्थित रहे।

औरैया में दो महीने की गर्भवती पाई गई नाबालिग लड़की, दादा, पिता और चाचा गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

औरैया । उत्तर प्रदेश के औरैया जिले के बिधूना थाना कोतवाली क्षेत्र में एक नाबालिग लड़की के गर्भवती पाए जाने के बाद पुलिस ने उसके दादा, पिता और चाचा को गिरफ्तार किया है। पुलिस के एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। औरैया के अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) आलोक मिश्रा ने कहा कि लड़की ने शुक्रवार को एक महिला रिश्तेदार के साथ थाने पहुंचकर तहरीर दी, जिसके बाद प्राथमिकी दर्ज करके जांच शुरू की गई। मिश्रा ने कहा, पीड़िता ने पुलिस को बताया कि उसके दादा, पिता और चाचा पिछले कई महीनों से उसका यौन शोषण कर रहे थे। लड़की को मेडिकल जांच के लिए ले जाया गया और प्रथम दृष्टया यह पता चला है कि वह दो महीने की गर्भवती है। उन्होंने कहा, लड़की के आरोपी दादा, पिता और चाचा को गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्हें स्थानीय अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। एएसपी ने बताया कि भारतीय न्याय संहिता की धारा 64 (एफ) (किसी रिश्तेदार या अभिभावक द्वारा बलात्कार), 65 (1) (16 साल से कम उम्र की लड़की से बलात्कार), 232 (किसी व्यक्ति को झूठे साक्ष्य देने की धमकी देना) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। मिश्रा ने बताया कि यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम के तहत भी आरोप लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि मामले में कानूनी प्रक्रिया पूरी की जा रही है। पुलिस ने पीड़िता की उम्र करीब 13 वर्ष बतायी है।

गौशाला के गौवंश के लिए ठण्ड का सहारा बनी गोबर से बनी लकड़ियाँ

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। गौशाला मे संरक्षित गौवंश के गोबर से बनायीं गई गौ-काष्ठ (गोबर से बनी लकड़ी) इन दिनों भीषण ठण्ड मे गौशाला मे संरक्षित गौवंश को अपनी तपिश से सहारा प्रदान कर रही हैं। गौशाला मे जलने वाले अलाव मे इनका प्रयोग किया जा रहा है। नगर पालिका परिषद अमरोहा अधिशासी अधिकारी डॉ. बृजेश कुमार बताया की नगर पालिका परिषद अमरोहा द्वारा संचालित अस्थाई गौवंश आश्रय स्थल मे नगर के विभिन्न स्थानों से निराश्रित / बेसहारा गौवंश को पालिका की गौशाला संरक्षित किया जाता है। जिलाधिकारी महोदय द्वारा निर्देश दिए गए हैं की गौशाला मे संरक्षित गौवंश द्वारा उत्सर्जित गोबर से आय के स्रोत उत्पन्न कर, इससे अर्जित आय को गौशाला मे संरक्षित गौवंश के संरक्षण मे उपयोग किया जाये। जिलाधिकारी महोदय के आदेशों के अनुपालन मे नगर पालिका परिषद अमरोहा द्वारा पालिका गौशाला मे गौवंश के गोबर से विभिन्न वस्तुएँ बनाये जाने हेतु गौ-काष्ठ यूनिट की स्थापना की गयीं है, जिसमे गोबर से विभिन्न उत्पाद जैसे गौ- काष्ठ, दिए आदि बनाये जा रहे हैं, गौशाला मे गोबर से बनाये गए दियो को बाजार मे बिक्री के लिए तैयार किया गया है, जल्दी ही अमेजॉन एवं फ्लिपकार्ट जैसे ऑनलइन शॉपिंग प्लेटफार्म्स पर पालिका गौशाला मे गोबर से बने ये उत्पाद बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। वर्तमान मे भीषण ठण्ड एवं शीत लहरी के दृष्टिगत शासन द्वारा दिए गए निदेर्शों के क्रम मे पालिका द्वारा नगर के विभिन्न स्थानों पर अलाव जलवाये

जा रहे हैं। पालिका गौशाला मे संरक्षित गौवंश को इस भीषण ठण्ड मे सुरक्षित एवं स्वास्थ रखने हेतु गौशाला के समस्त शेड़ो को वाटरप्रूफ /एयरप्रूफ तिरपाल से कवर्ड किया गया है। तथा अलाव भी जलवाये जा रहे हैं, गौशाला के अलाव मे लकड़ी के साथ पालिका गौशाला मे गोबर से बने गौ-काष्ठ (गोबर की लकड़ी) जलाई जा रही है। गोबर से बनी यह स्टिक उत्तम स्तर की आग एवं गर्मी उत्पन्न कर रही है। गोबर की इस स्टिक से जलाये गए अलाव से एक ओर गौशाला मे संरक्षित गौवंश को राहत प्राप्त हो रही है वहीँ दूसरी ओर गोबर स्टिक की आग पर्यावरण के अनुकूल भी है। इस प्रकार गोबर से बनी लकड़ी का सदुपयोग गौशाला मे किया जा रहा है। पालिका अधिशासी अधिकारी द्वारा बताया गया की हमारे द्वारा किया गया यह प्रयोग अभी ट्रायल के प्रारंभिक स्तर पर है, इसकी उपयोगिता और आमजन की रूची के आधार पर इसका उत्पादन व्यापक स्तर पर किया जायेगा।

अवैध कालोनी पर चला जिला पंचायत का बुलडोजर

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा।ठाकुरद्वारा मार्ग पर बनी एक कालोनी पर जिला पंचायत व राजस्व विभाग का बुलडोजर चला गया। विभाग के अधिकारियों का दावा है कि स्योहारा में कई कालोनी ऐसी बन रही हैं कि उनके मानक भी पूरे नहीं हैं। ऐसी कालोनीयों को ध्वस्त किया जायेगा। बृहस्पतिवार की शाम जिला पंचायत विभाग से जे.ई.मौहम्मद नाजिम, अभियंता तिलक राज उपाध्याय, राजस्व निरीक्षक धर्मपाल सिंह पुलिस बल के साथ ठाकुरद्वारा रोड पर बन रही कॉलोनी पर पहुंचे। खसरा नंबर 338 में बन रही कॉलोनी में विभाग का कहना है कि मानक पूरे नहीं हैं जिस कारण कॉलोनी को धवस्त किया जा रहा है। जे.ई. मौहम्मद नाजिम ने बताया कि दस दिन के अभियान में स्योहारा में अवैध रूप से काटी जा रही अधोमानक कॉलोनियों पर शासन का बुलडोजर चलेगा। इस दौरान टीम को प्लाट स्वामियों का विरोध भी झेलना पड़ा।भूमि स्वामी, प्लाट स्वामियों व कॉलोनी काटने वालों का कहना है कि बिना कोई नोटिस दिये उनके प्लाट की चार दिवारियों को तोड़ दिया गया है। इस मौके पर लेखपाल अनिल कुमार, लेखपाल ब्रजमोहन सिंह व पुलिस बल मौजूद रहा। वहीं दूसरी और भूमि स्वामी ने बताया कि हमारी भूमि की धारा 82 के लिए कार्यवाही प्रक्रिया में है हमारी कॉलोनी पर संबंधित विभाग को बुलडोजर से तोड़फोड़ करने से पहले नोटिस देना चाहिए था जो कि हमे नहीं दिया गया।

अयोध्या में नववर्ष से पहले लगभग सभी होटल बुक, मंदिर ट्रस्ट ने दर्शन का समय बढ़ाया

अयोध्या। नए साल के आगमन के साथ ही भगवान श्री रामलला की जन्मभूमि अयोध्या में आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए जिला मुख्यालय के लगभग सभी होटल बुक हो गये हैं। इस बीच, राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने राम मंदिर के दर्शन का समय बढ़ा दिया है और अपेक्षित भीड़ को प्रबंधित करने के लिए व्यापक व्यवस्था लागू की है। इस साल 22 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। अयोध्या जिला मुख्यालय में लगभग सभी होटलों के कमरे बुक हो चुके हैं। अयोध्या में एक स्थानीय होटल के मालिक अंकित मिश्रा ने कहा, हम इस नए साल में श्रद्धालुओं का स्वागत करने को लेकर उत्सुक हैं। हमारे सभी कमरे 15 जनवरी तक के लिए पहले से बुक हो चुके हैं।शनिवार सुबह जब जांच की गयी, तो एक ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफॉर्म ने दिखाया कि कुछ होटलों और लॉज में अब भी कमरे उपलब्ध हैं, हालांकि कुछ होटल मांग में वृद्धि के कारण प्रति रात एक कमरे का 10,000 रुपये से अधिक शुल्क ले रहे हैं। इस साल की शुरूआत में हुए प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद से अयोध्या में धार्मिक पर्यटन में वृद्धि देखी गई है, जबकि चैत्र (मार्च-अप्रैल) में हिंदू नववर्ष का पारंपरिक महत्व है। स्थानीय पुजारी रमाकांत तिवारी ने कहा,बड़ी संख्या में भक्त धार्मिक स्थलों पर जाते हैं और एक जनवरी को पूजा-अर्चना करते हैं, ताकि साल की शुरूआत में रामलला का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के बारे में अयोध्या के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राजकरण नैयर ने कहा, राम मंदिर, हनुमानगढ़ी, लता चौक, गुप्तार घाट, सूरजकुंड और अन्य लोकप्रिय स्थानों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाएंगे। मंदिर ट्रस्ट ने भी खासकर 30 दिसंबर से जनवरी के पहले दो हफ्तों के बीच बढ़ती भीड़ को संभालने के लिए व्यापक तैयारी की है। ट्रस्ट के एक व्यक्ति ने कहा, सभी भक्तों के लिए एक सहज अनुभव सुनिश्चित करने के लिए दर्शन का समय बढ़ाया गया है और विशेष व्यवस्था की गई है। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सभी क्षेत्रों के सैकड़ों गणमान्य लोगों ने भाग लिया, जिससे अयोध्या और राज्य में पर्यटन में तेजी से बढ़ा। राज्य पर्यटन विभाग के अनुसार, 2022 में 32.18 करोड़ पर्यटक उत्तर प्रदेश आए जबकि 2024 के पहले छह महीनों पर्यटकों की संख्अया 32.98 करोड़ रही। प्रदेश सरकार ने पिछले सप्ताह एक बयान में कहा था कि पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि अयोध्या और काशी (वाराणसी) के महत्वपूर्ण योगदान के कारण हुई है। सरकार ने कहा, पिछले साल जनवरी में भव्य राम मंदिर के उद्घाटन के बाद, उत्तर प्रदेश में छह महीने के भीतर लगभग 11 करोड़ पर्यटकों की आमद हुई। अकेले जनवरी में, रिकॉर्ड तोड़ सात करोड़ पर्यटकों ने दौरा किया, जो किसी एक महीने में किसी भी स्थान पर आने वाले आगंतुकों की सबसे अधिक संख्या है।

थाना समाधान दिवस में सुनी फरियादियों की शिकायतें

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स व पुलिस अधीक्षक कुँवर अनुपम सिंह ने संयुक्त रूप से कोतवाली में थाना समाधान दिवस के अवसर पर फरियादियों की शिकायतों को सुना। जिलाधिकारी ने इस अवसर पर आये हुए फरियादियों की शिकायतों को गंभीरता के साथ एक एक कर सुना और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश संबंधित को दिया। जिलाधिकारी ने कहा कि थाना दिवस में आयी शिकायतों को गंभीरता से लिया जाए। कहा कि फरियादियों की शिकायतों को प्राथमिकता से लेते हुए उनके गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित हो किसी भी फरियादी को बार-बार ना दौड़ाया जाए एक बार में ही उसकी समस्या का निस्तारण समय से हो जाए। उन्होंने उपजिलाधिकारी अमरोहा को निर्देशित करते हुए कहा कि जमीन संबंधी शिकायतों को प्राथमिकता के साथ निस्तारण कराए जाए। उन्होंने कहा कि कहीं पर भी ग्राम समाज पैमाइश चकरोड अवैध कब्जे के मामले यदि है तो उन्हें प्राथमिकता के साथ निस्तारण कराया जाए इस अवसर पर उपजिलाधिकारी सदर क्षेत्राधिकारी शहर थाना अध्यक्ष अमरोहा सहित अन्य संबंधित मौजूद रहे।

पालिका टीम ने दिलाई सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने की शपथ

प्रात : किरण संवाददाता

गजरौला। अधिशासी अधिकारी दीपिका शुक्ला एवं स्वच्छता प्रभारी आदेश कुमार के दिशा निर्देशन में नगर पालिका परिषद द्वारा ह्यप्लास्टिक उन्मूलन 3.0ह्व अभियान के अंतर्गत पॉलिथीन जब्त की गई और उल्लंघनकताओं पर चालान जारी किए गए एवं सभी को सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने की शपथ भी दिलाई, साथ ही प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले नुकसान के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। एवं लोगों से पॉलीथिन की जगह कपड़े व कागज के थैली के प्रयोग करने के अपील की करी गई। इस पहल के तहत, नगर पालिका की टीम के द्वारा गजरौला के विभिन्न बाजारो में निरीक्षण किया रहा है, और सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर सख्ती से रोक लगाने के लिए दुकानदारों को चेतावनी भी दी जा रही है। इसके अतिरिक्त, आज शुक्रवार बाजार में पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में भी बताया गया , नगर पालिका ने नागरिकों से अपील की है कि वे प्लास्टिक का उपयोग न करें और स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें। इस अभियान का उद्देश्य गजरौला को प्लास्टिक मुक्त और स्वच्छ शहर बनाना है। इस मौके पर लिपिक इरशाद खान, सफाई प्रभारी अजय कुमार, ललित कुमार, रविंद्र सिंह, शुभम सिंघल, ऋतिक सिंघल, दीपू कुमार, गौरव कुमार, सुमित कुमार, कपिल कुमार सहित आदि टीम उपस्थित रही।

एम.क्यू .इंटर कॉलेज में तीन दिवसीय स्काउट एंड गाइड का समापन

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा। मुस्लिम कुदरत इंटर कॉलेज स्योहारा में चल रहे तृतीय स्काउट एंड गाइड शिविर का सफलतापूर्वक समापन हुआ। इस मौके पर प्रधानाचार्य मंसूर इशरत सिद्दीकी ने सभी स्काउट से परिचित होते हुए उन्हें स्काउट प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान का अपने जीवन में प्रयोग करने एवं देश सेवा में सहयोग देने का आह्वान किया। इस दौरान प्रशिक्षिका पुष्पा चौहान ने तीन दिवसीय शिविर में स्काउट की विभिन्न प्रकार के नियम जैसे तंबू लगाना , स्टेक्र बनाना ,गांठे लगना आदि के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई। स्काउट प्रभारी उवैस मतलूब ने तीनों दिन लगातार स्काउट गाइड प्रशिक्षण को सफल बनाने हेतु भरपूर सहयोग दिया और स्काउट के अनेक नियमों की जानकारी दी तथा स्काउट टोली का विभाजन किया। इस अवसर पर एनसीसी अधिकारी कैप्टन युनुस चौधरी, मास्टर फहीम अहमद, अभय कुमार, पी टी आई इकबाल हुसैन भूपेंद्र कुमार एवं अन्य अध्यापक उपस्थित रहे।

पीएम सूर्य घर योजना की बैठक कर प्रगति की ली जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में पी एम सूर्य घर मुफ्त विजली योजना योजना की प्रगति के सम्बंध में समीक्षा वैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने ढऊनेडा व सभी चयनित वेंडरों से लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति की जानकारी क्रमशः ली। निर्देशित करते हुए कहा कि यह सरकार की बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है इसमें लोगों को मोटिवेट कर अधिक से अधिक से रजिस्ट्रेशन कराकर लाभ दिया जाए। कहा कि जनपद का जो लक्ष्य दिया गया है उसके अनुसार रजिस्ट्रेशन कराया जाए। कहा की ग्राम प्रधान नगर अध्यक्ष वार्ड सदस्य सहित जनपद के सभी संगठनों का भी सहयोग प्राप्त कर लोगों का अभियान चलाकर रजिस्ट्रेशन कराया जाए। कहा की ग्राम और शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक वार्ड में कैम्प लगाकर अधिक से अधिक से आवेदन कराकर लक्ष्य पूर्ण किया जाए। कहा कि प्रति सप्ताह वैठक कर प्रगति की जान कारी ली जाएगी। इसके लिए सभी अधिकारी और वेंडर गंभीरता के साथ कार्य करें और लक्ष्य पूर्ण करें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अश्वनी कुमार मिश्र, जिला विकास अधिकारी सरिता दुवेदी, नेडा अधिशासी अभियंता विद्युत सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
नई दिल्ली, रविवार, 29 ,दिसंबर, 2024

संक्षिप्त खबरें

कपिल देव बैनामा लेखक संघ के अध्यक्ष बने

मोदीनगर, । तहसील में शनिवार को बैनामा लेखक संघ का चुनाव संपन्न हो गया। कपिल देव चौधरी को अध्यक्ष घोषित किया गया। उन्हें 48 मत मिले। वार्षिक चुनाव के लिए सुबह दस बजे से मतदान शुरू हुआ। अध्यक्ष पद पर राकेश उपाध्याय व कपिल देव चौधरी मैदान में थे। कुल 56 मतदाताओं में से 54 ने अपने मत का प्रयोग किया। कुलदीप त्यागी सचिव, इमरान खान उपाध्यक्ष और रघुराज तेवतिया को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस मौके पर रणवीर दहिया, नरेश अमराला, सोहनवीर सिंह नेहरा, रणवीर सिंह, पवन माहेश्वरी, विकास चौधरी, श्रीपाल, राजीव त्यागी, हरित और गिरीश त्यागी सहित अन्य बैनामा लेखक मौजूद थे।

डॉ. आंबेडकर पर टिप्पणी को लेकर प्रदर्शन

मोदीनगर,। संसद में डॉ. भीमराव आंबेडकर पर केंद्रीय गृहमंत्री की टिप्पणी पर रोष जताते हुए आजाद समाज पार्टी के कार्यकताओं ने तहसील पर प्रदर्शन किया। साथ ही, राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन उपजिलाधिकारी को सौंपा। मोदीनगर विधानसभा क्षेत्र के अध्यक्ष देवेंद्र सिंह के साथ कार्यकर्ता तहसील पहुंचे और प्रदर्शन किया। मौके पर मनोज भारती, देवेंद्र सिंह, ओमप्रकाश, आनंद, दयाशंकर, विक्रम, अनिल, सचिन, मुकेश, कमलेश, अजय, बाबी, राजू, विजय और अंकित सहित अन्य लोग मौजूद थे।

आठवीं के छात्र ने ट्रेन दुर्घटनाएं रोकने वाला सेंसर बनाया

गाजियाबाद, । आठवीं के छात्र समीर ठाकुर ने एक ऐसा सेंसर बनाया है जिससे रेलवे ट्रैक पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। इसमें ज्यादा खर्चा भी नहीं होगा, मात्र एक सेंसर इंस्टॉल करने से ही यह ट्रैक पर मौजूद किसी भी पशु या इंसान होने का पता लगाकर खुद ही ट्रेन को रोक देगा। यह कारनामा करने वाले समीर अभी पटेल नगर स्थित स्प्रिंग डेल पब्लिक स्कूल के आठवीं के छात्र हैं, जिन्होंने शनिवार को स्कूल में आयोजित विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी में इस प्रोजेक्ट को पेश कर अपने कौशल और वैज्ञानिक प्रतिभा का परिचय दिया। स्कूल निदेशक राकेश जैन ने बताया कि छात्रों ने ग्लोबल वार्मिंग, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग, प्रदूषण के कारक, प्रभाव एवं दुष्प्रभाव, कबाड़ से बनाई सजावटी वस्तुएं, वॉल हैंगिंग और पेपर फोल्डिंग, गणित के मजेदार गेम आदि विभिन्न मॉडल से रचनात्मकता दिखाई। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मॉडल विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। दो दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन जेके गौड़ ने किया। प्रधानाचार्या रेनु जैन ने कहा कि मॉडल बनाने से बच्चों में रचनात्मकता आती है। इस अवसर पर एनसी जैन, विजय गौड़, जोगिंदर, दीपा गुप्ता, सौम्या जैन, प्रभजीत कौर, पूनम रावत और आंचल अरोड़ा उपस्थित रहे।

जेकेजी इंटरनेशनल स्कूल में लगा रक्तदान शिविर

ट्रांस हिंडन, ।इंदिरापुरम स्थित जेकेजी इंटरनेशनल स्कूल में रोटरी वरदान ब्लड बैंक की ओर से शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। रोटेरियन प्रशांत राज शर्मा व अनूप गुप्ता ने इसकी शुरूआत की। बड़ी संख्या में लोगों और छात्रों ने रक्तदान किया। विद्यालय के चेयरमैन जेके गौड़ ने कहा कि बच्चों में रक्तदान को लेकर जागरूकता और संवेदनशीलता के लिए हर छह माह पर आयोजन होते हैं। अशोक अग्रवाल, सुरेंद्र शर्मा , वरुण गौड़, प्रधानाचार्या निधि गौड़ ज्योत्सना, अद्विका सिंघल, अदिति मित्रा व आरुष आदि का योगदान रहा।

न्यायखंड व अभयखंड में दूषित पानी आने से लोग परेशान

ट्रांस हिंडन, । इंदिरापुरम स्थित न्यायखंड दो व अभयखंड एक में शनिवार को दूषित पानी की आपूर्ति हुई। दूषित पानी आने से दो हजार से अधिक लोग प्रभावित हुए। इससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। लोगों को मजबूरन बाहर से बोतलबंद पानी मंगाकर काम चलाना पड़ा। बिना पानी के रोजमर्रा के काम प्रभावित हुए। गंगाजल में सीवर का पानी मिक्स होने के कारण इंदिरापुरम में दूषित पानी की आपूर्ति हुई। इससे लोगों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी। सुबह के समय पानी नहीं मिलने से नौकरीपेशा लोगों को दफ्तर जाने में देरी हो गई। स्थानीय निवासी सुमन देवी ने बताया कि पिछले दो दिन से दूषित पानी आ रहा है। शिकायत के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। दूषित पानी की वजह से लोगों ने बाजार से बोतलबंद पानी खरीदकर घरेलू कामकाज किए। लोगों का कहना है कि आए दिन कॉलोनी में गंदे पानी आने की समस्या बनी हुई है। अभयखंड के स्थानीय निवासी संदीप कुमार ने बताया कि कॉलोनी में बार-बार दूषित पानी की समस्या बनी हुई है।

योगी सरकार ने पशुपालन विभाग की 1500 एकड़ भूमि यूपीसीडा को स्थानांतरित की

सीएम योगी के महत्वाकांक्षी ललितपुर फार्मा पार्क के निर्माण ने पकड़ी रफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ,। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में सरकार तेजी से आगे बढ़ रही है। इस क्रम में बुंदेलखंड क्षेत्र के ललितपुर जिले में बल्क ड्रग फार्मा पार्क विकसित करने की प्रक्रिया ने रफ्तार पकड़ ली है। यह पार्क देश की फार्मा जरूरतों को पूरा करने और भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। फार्मा पार्क के लिए सैदपुर ग्राम पंचायत में पशुपालन विभाग के स्वामित्व वाली 2000 एकड़ भूमि में से करीब 1500 एकड़ भूमि को राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) को निःशुल्क हस्तानान्तरित किया है। भूमि का हस्तांतरण होने के बाद अब तेजी के साथ परियोजना अगले चरण में प्रवेश करेगी। इस भूमि पर दवा कंपनियां फैक्ट्रियां स्थापित करके यहां दवाइयों का निर्माण करेंगी। इस भूमि पर फार्मा पार्क विकसित करने के लिए वर्ल्ड क्लास कॉमन इंफ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटीज (सीआईएफ) तैयार की जाएंगी। यह परियोजना न केवल ललितपुर बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगी। उच्च गुणवत्ता वाली, किफायती दवाओं के उत्पादन पर योगी सरकार का जोर ललितपुर में प्रस्तावित बल्क ड्रग फार्मा पार्क राज्य और देश के लिए फार्मास्यूटिकल उत्पादों के निर्माण में एक पावर हाउस के रूप में कार्य करेगा। इस परियोजना का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली, किफायती दवाओं का उत्पादन करना है। बल्क ड्रग प्रोडक्शन के क्षेत्र में यह पार्क भारत की आत्मनिर्भरता को मजबूती प्रदान करेगा। ललितपुर बल्क ड्रग फार्मा पार्क पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मोड पर विकसित किया जाएगा। इस परियोजना के तहत ग्लोबल फार्मा सेक्टर के लीडर्स को आकर्षित करने के लिए एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (ईओआई) पहले ही जारी कर दी गई है। फार्मा पार्क में होगा वर्ल्ड क्लास बुनियादी ढांचा और बेहतर कनेक्टिविटी फार्मा पार्क को सड़क और रेल नेटवर्क के माध्यम से विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे और उत्कृष्ट कनेक्टिविटी से जोड़ा जा रहा है। इसके तहत लॉजिस्टिक्स की सुविधाजनक आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सड़कें और रेल लिंक तैयार किए जाएंगे। इस परियोजना के तहत ललितपुर और आसपास के क्षेत्रों में औद्योगिक टाउनशिप, सेक्टोरल स्पेसिफिक इंडस्ट्रियल पार्क्स और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होगा। इसके साथ ही, परियोजना के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों रोजगार के अवसर सृजित होंगे। फार्मा पार्क को पर्यावरण संरक्षण के मानकों का पालन करते हुए विकसित किया जाएगा। इसमें केमिकल डिस्चार्ज के निस्तारण के लिए जीरो लिक्विड डिस्चार्ज जैसी स्टैंडर्ड प्रैक्टिस को अपनाया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्पष्ट विजन है कि उत्तर प्रदेश को न केवल औद्योगिक रूप से विकसित किया जाए बल्कि उसे भारत की फार्मा जरूरतों का केंद्र भी बनाया जाए। बल्क ड्रग फार्मा पार्क इसी दृष्टिकोण का एक हिस्सा है, जो प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

गाजियाबाद के कवि नगर में रेस्त्रां के बाहर गाड़ी पार्क करने को लेकर मारपीट, तीन गिरफ्तार

गाजियाबाद, । गाजियाबाद के कवि नगर स्थित रेस्त्रां के बाहर गाड़ी पार्क करने को लेकर मारपीट हो गई। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। पुलिस ने वीडियो की जांच करके आरोपी आयुष, नीतीश और अभिषेक को गिरफ्तार कर लिया। एसीपी अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि सोशल मीडिया के माध्यम से एक वायरल वीडियो प्राप्त हुआ, जिसमें कुछ युवकों द्वारा एक अन्य युवक के साथ मारपीट करते हुए देखा जा रहा था। इस वीडियो के संदर्भ में जब जांच की गई, तो यह तथ्य सामने आया कि यह घटना थाना कविनगर क्षेत्र स्थित आरडीसी के इलाके की है। एसीपी अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि कार चालक पर लाठी डंडों और लात से हमला करने वाले तीन युवकों को गिरफ्तार किया गया है। इनके नाम आयुष त्यागी पुत्र कुमरेश त्यागी (निवासी रामबाग कालोनी- गोविंदपुरम), हर्ष शर्मा उर्फ नितीश शर्मा (पुत्र सुरेंद्र शर्मा निवासी आई ब्लॉक गोविंदपुरम) और अभिषेक रस्तोगी पुत्र अरविंद रस्तोगी (निवासी घोंडा कालोनी- दिल्ली) हैं। तीनों आरडीसी से गिरफ्तार किया गया है। वहीं, मारपीट में शामिल अन्य युवकों की भी तलाश की जा रही है। उन्होंने कहा कि वीडियो में दिख रही मारपीट के संबंध में तत्काल कार्रवाई करते हुए संबंधित पुलिस विभाग ने विभिन्न धाराओं में दर्ज किया और आरोपियों की पहचान की। इस मामले में आगे की जांच और कार्रवाई के लिए पूछताछ की जा रही है और साक्ष्यों के आधार पर उचित वैधानिक कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है, ताकि आरोपी कानून के दायरे में आकर दंडित हो सकें।

फरीदाबाद के नवनियुक्त पुलिस आयुक्त सतेंद्र कुमार गुप्ता ने संभाला पदभार

प्रात: किरण, संवाददाता

फरीदाबाद, । फरीदाबाद के नवनियुक्त पुलिस कमिश्नर बने सतेंद्र कुमार गुप्ता ने शनिवार को अपना पदभार संभाल लिया। पुलिस आयुक्त कार्यालय पहुंचने पर फरीदाबाद पुलिस के संयुक्त पुलिस आयुक्त राजेश दुग्गल द्वारा उनका स्वागत किया गया। इस दौरान पुलिस उपायुक्त मुख्यालय अभिषेक जोरवाल व अन्य पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि आईपीएस सतेंद्र कुमार गुप्ता उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के रहने वाले हैं। बीटेक की पढ़ाई के बाद वे वर्ष 2004 में भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी बने। उनको वर्ष 2016 में बहादुरी के लिए पुलिस मेडल फॉर गैलंट्री तथा वर्ष 2023 में उत्कृष्ट सेवा के लिए पुलिस मेडल से नवाजा गया। अपनी 20 वर्ष की सेवा के दौरान वे हरियाणा के सोनीपत, सिरसा, भिवानी, फतेहाबाद, हिसार आदि जिलों में पुलिस अधीक्षक के पद पर नियुक्त रहे। गुरुग्राम में पुलिस उपायुक्त ईस्ट और गुप्तचर विभाग में भी उन्होंने अपनी सेवाएं दी हैं। वर्ष 2022 में पुलिस महानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत होने उपरांत पुलिस महानिरीक्षक करनाल रेंज के पद पर नियुक्त रहे तथा 2 वर्ष से अधिक के कार्यकाल के बाद उनको पुलिस आयुक्त सोनीपत लगाया गया। नवनियुक्त पुलिस आयुक्त ने पदभार ग्रहण करने उपरांत पुलिस अधिकारियों व थाना प्रबंधकों के साथ गोष्ठी की तथा आगे की रणनीति बारे विचार विमर्श किया। उन्होंने कहा कि साइबर अपराध को नियंत्रित करने के लिए जागरूकता के साथ-साथ तकनीकी आधार पर सटीक कार्रवाही करना प्राथमिकता रहेगी, महिला विरुद्ध अपराध को कम करने के लिए पुलिस की उपस्थिति को और बेहतर किया जाएगा, अपराध की रोकथाम के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे तथा अपराधियों को बक्शा नहीं जाएगा, साथ ही जिला की यातायात व्यवस्था को भी दुरुस्त किया जाएगा। नव नियुक्त पुलिस आयुक्त, आमजन के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार और अपराधियों के प्रति खौफ के रूप में जाने जाते है और फरियादियों की फरियाद सुनकर उन्हें शीघ्र न्याय दिलाना तथा अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने शहरवासियों को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शांतिपूर्ण तरीके से नववर्ष मनाया जाए, फरीदाबाद पुलिस द्वारा पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था के बंदोबस्त कर लिए गए हैं, शरारती तत्वों को बक्शा नहीं जाएगा, उन्होंने आमजन से अपील की है कि शराब पीकर वाहन न चलाएं।

योगी सरकार ने पशुपालन विभाग की 1500 एकड़ भूमि यूपीसीडा को स्थानांतरित की

- यूपी को फार्मा इंडस्ट्री हब बनाने की ओर अग्रसर योगी सरकार

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ,। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में सरकार तेजी से आगे बढ़ रही है। इस क्रम में बुंदेलखंड क्षेत्र के ललितपुर जिले में बल्क ड्रग फार्मा पार्क विकसित करने की प्रक्रिया ने रफ्तार पकड़ ली है। यह पार्क देश की फार्मा जरूरतों को पूरा करने और भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। फार्मा पार्क के लिए सैदपुर ग्राम पंचायत में पशुपालन विभाग के स्वामित्व वाली 2000 एकड़ भूमि में से करीब 1500 एकड़ भूमि को राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) को निःशुल्क हस्तानान्तरित किया है। भूमि का हस्तांतरण होने के बाद अब तेजी के साथ परियोजना अगले चरण में प्रवेश करेगी। इस भूमि पर दवा कंपनियां फैक्ट्रियां स्थापित करके यहां दवाइयों का निर्माण करेंगी। इस भूमि पर फार्मा पार्क विकसित करने के लिए वर्ल्ड क्लास कॉमन इंफ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटीज (सीआईएफ) तैयार की जाएंगी। यह परियोजना न केवल ललितपुर बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगी। उच्च गुणवत्ता वाली, किफायती दवाओं के उत्पादन पर योगी सरकार का जोर ललितपुर में प्रस्तावित बल्क ड्रग फार्मा पार्क राज्य और देश के लिए फार्मास्यूटिकल उत्पादों के निर्माण में एक पावर हाउस के रूप में कार्य करेगा। इस परियोजना का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली, किफायती दवाओं का उत्पादन करना है। बल्क ड्रग प्रोडक्शन के क्षेत्र में यह पार्क भारत की आत्मनिर्भरता को मजबूती प्रदान करेगा। ललितपुर बल्क ड्रग फार्मा पार्क पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मोड पर विकसित किया जाएगा। इस परियोजना के तहत ग्लोबल फार्मा सेक्टर के लीडर्स को आकर्षित करने के लिए एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (ईओआई) पहले ही जारी कर दी गई है। फार्मा पार्क में होगा वर्ल्ड क्लास बुनियादी ढांचा और बेहतर कनेक्टिविटी फार्मा पार्क को सड़क और रेल नेटवर्क के माध्यम से विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे और उत्कृष्ट कनेक्टिविटी से जोड़ा जा रहा है। इसके तहत लॉजिस्टिक्स की सुविधाजनक आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सड़कें और रेल लिंक तैयार किए जाएंगे। इस परियोजना के तहत ललितपुर और आसपास के क्षेत्रों में औद्योगिक टाउनशिप, सेक्टोरल स्पेसिफिक इंडस्ट्रियल पार्क्स और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होगा। इसके साथ ही, परियोजना के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों रोजगार के अवसर सृजित होंगे। फार्मा पार्क को पर्यावरण संरक्षण के मानकों का पालन करते हुए विकसित किया जाएगा। इसमें केमिकल डिस्चार्ज के निस्तारण के लिए जीरो लिक्विड डिस्चार्ज जैसी स्टैंडर्ड प्रैक्टिस को अपनाया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्पष्ट विजन है कि उत्तर प्रदेश को न केवल औद्योगिक रूप से विकसित किया जाए बल्कि उसे भारत की फार्मा जरूरतों का केंद्र भी बनाया जाए। बल्क ड्रग फार्मा पार्क इसी दृष्टिकोण का एक हिस्सा है, जो प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

महाकुंभ में पहली बार होगा ड्रोन शो, यूपी टूरिज्म करेगा अगुवाई

प्रात: किरण, संवाददाता

महाकुंभ नगर, । उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ 2025 का आयोजन होने जा रहा है। इसके लिए तैयारियां काफी तेज गति से हो रही है। इसी क्रम में यूपी टूरिज्म विभाग महाकुंभ में पहली बार ड्रोन शो करवाने जा रहा है। महाकुंभ मेला क्षेत्र में संगम नोज पर यह अद्भुत नजारा श्रद्धालुओं को शाम के समय आकाश में देखने को मिलेगा। महाकुंभ का आयोजन प्रत्येक बारह वर्ष पर होता है। इस साल महाकुंभ 13 जनवरी से प्रारंभ होकर 26 फरवरी तक चलेगा। महाकुंभ को लेकर तैयारियां अंतिम दौर में हैं। यूपी टूरिज्म विभाग महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को नए अनुभव देने का प्रयास कर रहा है। महाकुंभ में यूपी टूरिज्म जहां एक ओर फ्लोटिंग रेस्टोरेंट, वाटर एक्टिविटी, हॉट एयर बैलून, लेजर लाइट शो जैसी गतिविधियां करवा रहा है, तो वहीं दूसरी ओर महाकुम्भ में पहली बार ड्रोन शो का भी आयोजन होने जा रहा है। इस संबंध में जिला पर्यटन अधिकारी अपराजिता सिंह ने कहा कि महाकुंभ की शुरूआत और समापन के समय संगम नोज पर ड्रोन शो का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह महाकुंभ के यात्रियों और प्रयागराज वासियों के लिए एक नया और अनोखा अनुभव होगा। लगभग 2000 लाइटिंग ड्रोन प्रयाग महात्म्य और महाकुंभ की पौराणिक कथाओं का प्रदर्शन करेंगे। इसमें समुद्र मंथन और अमृत कलश निकलने के दृश्य का प्रदर्शन होगा। साथ ही प्रयाग के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व को भी दर्शाया जाएगा। महाकुंभ 2025 कई मायनों में अनोखा और अनूठा साबित होने जा रहा है। इस दिशा में यूपी टूरिज्म नये-नये प्रयोग कर रहा है। जनवरी के पहले सप्ताह से काली घाट, यमुना की लहरों पर म्यूजिकल फाउंटेन लेजर शो शुरू होने जा रहा है। जो प्रयागराज आने वाले पर्यटकों के लिए एक अनोखा अनुभव होगा। साथ ही महाकुंभ के दौरान लाइटिंग ड्रोन शो भी पर्यटकों और प्रयागराज वासियों के लिए विशिष्ट अनुभव होगा। इसमें लगभग 2000 लाइटनिंग ड्रोन आपस में सिंक्रोनाइज होकर संगम नोज के आकाश पर अद्भुत दृश्य और रंग बिखेरेंगे। ये सभी रंग और दृश्य धार्मिक और आध्यात्मिक भाव के होंगे। ज्ञात हो कि महाकुंभ की परिकल्पना को साकार करते हुए प्रयागराज में मंदिरों, गंगा जी के घाट, पार्क से लेकर सड़कों, फ्लाई ओवरों का निर्माण और सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। इसके साथ ही महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को कई नये और अनोखे अनुभव भी प्राप्त होंगे।

फरीदाबाद : पिस्टल व कारतूस सहित आरोपी गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

फरीदाबाद, । अपराध शाखा डीएलएफ पुलिस टीम ने अवैध रुप से पिस्टल व कारतूस सहित एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार अपराध शाखा टीम तिगांव क्षेत्र में गश्त पर थी। गश्त के दौरान अपने गुप्त सूत्रों से प्राप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी सुमित को गांव ढहकौला से गिरफ्तार किया है। आरोपी से मौके पर पिस्टल व कारतूस बरामद किया गया है। आरोपी के खिलाफ थाना तिगांव में अवैध हथियार रखने की धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। गिरफ्तार आरोपी सुमित(27) गांव ढहकौला तिगांव का रहने वाला है। आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि आरोपी पिस्टल व कारतूस को गुरुग्राम के ग्वाल पहाड़ी एरिया में किसी रिंकू नाम के व्यक्ति से 45000 रुपए में खरीद कर लाया था। आरोपी रिंकू के बारे में नाम के अलावा और कुछ नहीं जानता। आरोपी को मामले में अधिक पूछताछ के लिए अदालत में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

भाजपा के सक्रिय सदस्य बने ठाकुर उमेश भाटी

प्रात: किरण, संवाददाता

फरीदाबाद, । भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं सामजसेवी ठाकुर उमेश भाटी ने भाजपा की सक्रिय सदस्यता का फॉर्म भरा और भाजपा के सक्रिय सदस्य बने । यह प्रक्रिया फरीदाबाद कार्यालय अटल कमल पर शनिवार को भाजपा जिला अध्यक्ष राजकुमार वोहरा के उगवाई में शनिवार को पूरी हुई। इस अवसर पर टिपर चंद शर्मा, जिला महामंत्री सुरेन्द्र जांगड़ा, मनोज वशिष्ठ, मास्टर लाखन सिंह,आदि मौजूद थे। जिला अध्यक्ष राजकुमार वोहरा ने कहा कि भाजपा के संगठन पर्व को कार्यकर्ता उत्सव की तरह मना रहे हैं। भाजपा की साधारण सदस्यता के साथ सक्रिय सदस्यता बनाने का अभियान सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के साथ-साथ मंडल एवं बूथ के कार्यकर्त्ता भी सक्रिय सदस्य बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि संगठन के चुनाव की तैयारियों में कार्यकर्त्ता पूरी तरह से लगे हुए हैं और संगठन के चुनाव के लिये कार्यकर्त्ता उत्साहित हैं। सक्रिय सदस्य बनने के बाद उमेश भाटी ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की केंद्र सरकार और नायब सिंह सैनी जी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार ने लगातार योजनाओं के माध्यम से प्रदेश की जनता को सशक्त करने का काम किया है। बिना पर्ची, बिना खर्ची युवाओं को नौकरी मिल रही है। भाजपा ने सुशासन और पारदर्शिता के साथ सरकार चलाई जिसका परिणाम रहा कि केंद्र के साथ प्रदेश में भी तीन बार लगातार जनता ने भाजपा को चुना है और फरीदाबाद में आगामी नगर निगम चुनाव में भी फरीदाबाद में भी जनता के आशीर्वाद से कमल खिलेगा। हरियाणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बडोली द्वारा शुरू किये गये सक्रिय सदस्यता अभियान में भाग लेकर सभी कार्यकर्त्ता भाजपा के सक्रिय सदस्य बन रहे है और संगठन पर्व में भाग लेकर पार्टी को और अधिक मजबूत कर रहे है।

सेवा और रोजगार के समन्वय का क्षेत्र है नर्सिंग : प्राची यादव

गोरखपुर, । महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में मिशन शक्ति फेज-5 के अंतर्गत शनिवार को ह्यनर्सिंग में सेवा और रोजगार के विभिन्न अवसरह्ण विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता मिशन शक्ति की नोडल अधिकारी प्राची यादव ने नर्सिंग सेवा और रोजगार के समन्वय का क्षेत्र है और इसमें आगे बढ़ने की अनेक संभावनाएं हैं। प्राची यादव ने कहा कि नर्सिंग एक महान पेशा है जिसमें समर्पण, करुणा और उच्च गुणवत्ता वाली रोगी देखभाल के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में कुशल नर्सों की मांग पहले से कहीं अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि 2035 तक वैश्विक स्तर पर 12.9 मिलियन नर्सों की जरूरत होगी। यह जरूरत नर्सों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में करियर बनाने का एक बड़ा अवसर प्रस्तुत करती है। उन्होंने परंपरागत नर्सिंग पेशे के साथ हीनर्सिंग में उभरते रुझान के बारे में भी बताया। प्राची यादव ने कहा कि नर्सिंग के क्षेत्र में टेलीहेल्थ एवं एआई जैसी प्रौद्योगिकी का आगमन होने से इसमें रोजगार के अवसर और अधिक बढ़ेंगे। व्याख्यान में नर्सिंग कॉलेज की सभी शिक्षिकाये एवं जीएनएम प्रथम वर्ष की छात्राएं उपस्थित रहीं।

काशी में महाकुम्भ बाद होगा ज्योतिष सम्मेलन,सुरक्षा में ज्योतिष की भूमिका पर होगा विमर्श

प्रात: किरण, संवाददाता

वाराणसी, ।प्रयागराज महाकुंभ के बाद काशी नगरी में ज्योतिष सम्मेलन होगा। सम्मेलन में ज्योतिषविद राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से ज्योतिष की भूमिका पर मंथन करेंगे। शनिवार को दशाश्वमेध स्थित शास्त्रार्थ महाविद्यालय में एक माह तक चले ज्योतिष ज्ञान शिविर के समापन पर यह जानकारी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.पवन कुमार शुक्ल ने दी। उन्होंने बताया कि महाकुम्भ के पश्चात फरवरी माह में एक बड़ा ज्योतिष सम्मेलन आयोजित करने की योजना है। जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि में ज्योतिष शास्त्र शीर्षक होगा। इसमें देश के अनेक संभागों से ज्योतिर्विदों की प्रतिभागिता सुनिश्चित होगी। अनेक उलझे प्रश्नों का ज्योतिष के माध्यम से समाधान किया जाएगा। इसके पहले शिविर में ज्योतिर्विद आचार्य संजय उपाध्याय ने कहा कि धर्म,कर्म,पाप व पुण्य आदि की धारणाएं व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित है, किंतु वैज्ञानिक व आध्यात्मिक अवधारणा में ज्योतिष को सर्वोपरि विज्ञान के रूप में माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र को मानने या न मानने का निर्णय व्यक्तिगत विश्वास और अनुभव पर आधारित होता है। यदि इसे मार्गदर्शन और सचेत करने वाली विद्या के रूप में देखा जाए,तो यह कई लोगों के लिए उपयोगी हो सकती है। राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी इस पर शोध होना चाहिए। बतौर मुख्य अतिथि श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के अपर कार्यपालक अधिकारी निखिलेश मिश्र ने कहा कि ज्योतिष शास्त्र हमें भविष्य में होने वाली शुभाशुभ घटनाओं के लिए तैयार कर सकता है। जीवन में घटनाएं समय अनुसार ही घटित होती हैं,भले ही हम और आप ज्योतिष शास्त्र को मानें अथवा न मानें,परंतु इसके बोध से आत्म अनुशासन को प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम के प्रारंभ में राष्ट्रपति से पुरस्कृत पूर्व प्राचार्य डॉ. गणेश दत्त शास्त्री,वरिष्ठ अधिवक्ता आनंद नारायण मिश्र व केंद्रीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित कमलाकांत उपाध्याय ने माँ वाग्देवी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन किया। इसके बाद संस्था के बटुकों ने सामूहिक रूप से मंगलाचरण का पाठ किया। स्वागत करते हुए संस्था के प्राचार्य डॉ.पवन कुमार शुक्ल ने बताया कि पिछले एक माह से यह शिविर निःशुल्क रूप से चल रहा था। लगभग 60 से ज्यादा बच्चों ने इसमें प्रतिभाग कर पंचांग व कुंडली निर्माण की बारीकियों को सीखा। इन प्रतिभागियों में प्रमाण पत्र भी वितरित किया गया।

मीरजापुर: चोरी हुए ट्रक बरामद, तीन गिरफ्तार, दो पुलिसकर्मी निलंबित

प्रात: किरण, संवाददाता

मीरजापुर, । जिले के अदलहाट क्षेत्र में पुलिस की संयुक्त टीम ने चेकिंग के दौरान बालू, गिट्टी और भस्सी से लदे 37 ट्रकों को जब्त कर हाजीपुर मंडी में खड़ा कराया था। निगरानी की जिम्मेदारी उप निरीक्षक मुनीम गुप्ता और हेड कांस्टेबल सोम्मर यादव को दी गई थी। हालांकि, 26 दिसंबर की रात चोरी-छिपे 17 ट्रक वहां से भाग निकले। अदलहाट पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए शनिवार तीन आरोपियों बाल किशुन यादव, सूरज और सुनील यादव को गिरफ्तार कर सात ट्रकों को बरामद कर लिया। लापरवाही के कारण पुलिस अधीक्षक अभिनंदन ने उप निरीक्षक और हेड कांस्टेबल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर विभागीय जांच का आदेश दिया है। शेष आरोपियों की गिरफ्तारी और ट्रकों की बरामदगी के लिए प्रयास जारी है।

सामाजिक संस्थाएं जरूरतमंदों की मदद करें: धनेश अदलक्खा

फरीदाबाद, । एन.एच.पांच नम्बर जे ब्लॉक में शिवमती धमार्थ चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वाधान में आज जरूरतमंदों को सूखा राशन व गर्म शॉल वितरित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बडखल क्षेत्र के विधायक धनेश अदलक्खा व विशिष्ट अतिथि के रूप में नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डा. अनिल शर्मा ने शिरकत की। इस अवसर पर ट्रस्ट की अध्यक्ष डाक्टर विंध्या गुप्ता व अशोक गुप्ता ने आए हुए सभी अतिथियों का बुक्के व स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। इस मौके पर विधायक धनेश अदलक्खा ने जरूरतमंदों को सूखा राशन वितरित करते हुए कहा कि सभी समाजसेवी संस्थाओं को आगे आकर जरूरतमंदों व गरीबों की सेवा करना चाहिए। शिक्षा से जुड़ी संस्थाएं स्कूलों के छात्रों को गोद लेकर उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान करवाए तथा स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी संस्थाएं लोगों के स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए स्वास्थय जांच शिविर लगवाए। इसी तरह रक्तदान शिविर लगाने के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्था शिविर लगाए ताकि लोगों को जरूरत के समय में रक्त उपलब्ध हो सकें। इस मौके पर शिवमती धमार्थ ट्रस्ट की प्रैसीडेंट डा. विंध्या गुप्ता ने बताया कि वह प्रत्येक वर्ष अपनी प्रिय सास शिवमती की पुण्य तिथि पर जरूरतमंदों को कम्बल वितरण, राशन वितरण करती आ रही है। इसी कड़ी में 60 लोगों को यह राशन वितरित किया गया है। इस मौके पर उद्योगपति सुनील सिवाच, अनिल गुप्ता, इन्द्र कुमार, प्रियंका शर्मा, मनीषा, सोनम, मोनिका, दर्शना ने अपना सहयोग दिया।

बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी बेबी जॉन

वरुण धवन की फिल्म बेबी जॉन क्रिसमस के मौके पर 25 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। ओपनिंग डे पर अभिनेता की फिल्म बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने में असफल रही है। एक हिट की तलाश में वरुण धवन की इस फिल्म के कलेक्शन को देखकर ऐसा लग रहा है कि अभिनेता का यह इंतजार अभी और लंबा होने वाला है। आइए जानते हैं कि बेबी जॉन ने दूसरे दिन कितनी कमाई की है।

पिछले पांच फिल्मों की ऐसी रही ओपनिंग

बेबी जॉन वरुण धवन की पिछले पांच सालों में सबसे बड़ी ओपनिंग है। इससे पहले, उनकी 2019 में रिलीज हुई फिल्म कलंक ने अपने पहले दिन 21.60 करोड़ रुपये कमाए थे। स्ट्रीट डांसर 3डी (2020), जुग जुग जीयो (2022), और भेड़िया (2022) वरुण की पिछली कुछ थिएट्रिकल रिलीज दोहरे अंकों की ओपनिंग हासिल करने में विफल रहीं।

दूसरे दिन गिरा कलेक्शन

क्रिसमस की छुट्टियों में रिलीज होने के लाभ के बावजूद, फिल्म को वर्तमान में सिनेमाघरों पर हावी होने वाली ब्लॉकबस्टर फिल्मों से कड़ी टक्कर मिल रही है, जिसमें अल्लू अर्जुन की पुष्पा 2 और डिज्नी की मुफासा- द लायन किंग शामिल हैं। दूसरे दिन बॉक्स ऑफिस पर प्रदर्शन धीमा रहा। सैकनिल्क डेटा के अनुसार, बेबी जॉन ने सुबह के शो से लगभग 3.07 करोड़ रुपये कमाए है। दूसरे दिन फिल्म के कुल कलेक्शन से पता चलता है कि यह अभी भी दर्शकों का ध्यान खींचने के लिए संघर्ष कर रही है।

इतना रहा कलेक्शन

फिल्म का अब तक का कुल कलेक्शन 14.32 करोड़ रुपये है। 180 करोड़ रुपये के भारी-भरकम बजट में बनी फिल्म का दूसरे दिन का कलेक्शन देखकर ऐसा लग रहा है कि यह जल्द ही सिनेमाघरों को अलविदा कह देगी। हालांकि, वीकेंड पर फिल्म की कमाई में उछाल आने की उम्मीद है।

इस फिल्म की है रीमेक

बता दें कि यह फिल्म एटली की 2016 की तमिल ब्लॉकबस्टर थेरी पर आधारित है। बेबी जॉन में कहानी डीसीपी सत्य वर्मा (वरुण धवन) की है, जो राजनेता बब्बर शेर के साथ दुखद टकराव के बाद बेबी जॉन उपनाम अपनाता है।

क्या है सामंथा रुथ का हॉलीडे प्लान? बताया कैसी मना रहीं हैं छुट्टियां

सामंथा रुथ प्रभु इस साल वरुण वरुण धवन के साथ सीरीज सिटाडेल- हनी बनी में नजर आईं। प्राइम वीडियो पर यह सीरीज नवंबर में रिलीज हुई। फिलहाल सामंथा छुट्टियां मना रही हैं। क्रिसमस और नए साल की छुट्टियां वे किस तरह मना रही हैं? अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर फैंस के साथ इसकी झलक साझा की है। उन्होंने कई सारी तस्वीरों के जरिए इतना जता दिया है कि फिलहाल वे पूरी तरह आराम करने के मूड में हैं।

कोई प्लान नहीं होना ही है प्लान

सामंथा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट साझा किया है। इसमें कई सारी तस्वीरें हैं। पहली तस्वीर में वे सुकून की नींद लेती नजर आ रही हैं। इसके अलावा उन्होंने तस्वीरों में कुछ प्राकृतिक नजारों की झलक पेश की है और कुछ में मोटिवेशनल कोट्स साझा किए हैं। इसके साथ कैप्शन लिखा है, शायद बस घर पर सुकून से बैठना भर काफी है। भागदौड़ में कुछ देर के लिए शायद कुछ ठहराव मिले। इस बहुत व्यस्त दुनिया में एक सादगी भरा जीवन और कुछ शांति की जरूरत है। शायद जिंदगी में किसी योजना का न होना ही वास्तव में योजना का हिस्सा है। इस पर आश्चर्य हो सकता है। लेकिन, आप ऐसा कर सकते हैं।

खुद को दे रही हैं भरपूर वक्त

सामंथा ने अपने पोस्ट के जरिए साफ कर दिया है कि फिलहाल उनकी कोई योजना नहीं है। और छुट्टियों के लिए किसी योजना का नहीं होना ही उनकी प्लानिंग है और वे इसी तरह अपनी छुट्टियां मना रही हैं। अभिनेत्री के पोस्ट से इतना तो साफ है कि फिलहाल जीवन में सकारात्मकता और सुकून उनकी प्राथमिकता है। वे प्रार्थना, प्रकृति और खुद को वक्त दे रही हैं। तस्वीरों में उन्होंने अपने पूजा घर की झलक भी दिखाई है, जहां गणपति बप्पा की मूर्ति के आगे दीए जल रहे हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो सामंथा राज और डीके की सीरीज रक्त ब्रह्मांड में नजर आएंगी।

फिल्म 'बरोज' के लिए कलीरॉय जियाफेटा को मिल रही तारीफ

सिनेमा के दो कलाकारों की एक अनोखी प्रेम कहानी आपने शायद नहीं ही सुनी होगी। ये प्रेम कहानी है अभिनेता गुलशन देवैया और उनकी पत्नी कलीरॉय जियाफेटा की। दोनों दशक भर पहले मिले, तलाकशुदा हुए और अब फिर एक हो गए हैं। कलीरॉय जियाफेटा इस हफ्ते रिलीज हुई मलयालम फिल्म 'बरोज' की हीरोइन हैं। फिल्म हिंदी में भी डब होकर रिलीज हो रही है।

आपकी पैकिंग देखकर लग रहा है कि आप लंबी छुट्टियों पर जाने वाली हैं?

'ओमर्टा', 'बार्ड ऑफ ब्लड' और 'द एम्पायर' में काम करने के साथ साथ मैंने हिंदुस्तान के बारे में काफी कुछ जाना है। लेकिन, मेरी अपनी जन्मभूमि (एथेंस, ग्रीस) मुझे नया साल मनाने के लिए बुलाती रहती है और मैं वहीं जा भी रही हूं लेकिन मुझे अपनी कर्मभूमि मुंबई से भी बेहद प्यार है।

लोग आपको बहुत मिस करेंगे आपकी नई फिल्म 'बरोज' देखकर?

मेरी इस हफ्ते रिलीज हुई फिल्म 'बरोज' का निर्देशन मलयालम सिनेमा के महान अभिनेता मोहनलाल ने किया है। उनके साथ एक ही जगह पर खड़े होना ही अलग अनुभव है और फिर उनके निर्देशन में फिल्म करने की अनुभूति जैसी रही है, मैं बता नहीं सकती। फिल्म चूंकि एक फंतासी फिल्म है लिहाजा इसकी शूटिंग के दौरान हमें काल्पनिक किरदारों को अपने सामने होने की कल्पना करके ही अभिनय करना पड़ा।

क्या है फिल्म 'बरोज' में आपका किरदार

मेरे किरदार का नाम इस फिल्म में टेरेसा डि गामा है। मुझे अक्सर एक पूरी तरह से भले इंसान का किरदार करने के मौके कम ही मिले हैं। देखा जाए तो विदेशी कलाकारों के लिए विविधता लिए हुए किरदार लिखे भी भारतीय सिनेमा में कम ही जाते हैं। तो फिल्म 'बरोज' का ये किरदार एक ताजी हवा के झोंके जैसा आया और मैंने इसे तुरंत लपक लिया।

टेरेसा ने कॉस्ट्यूम काफी कमाल के पहने हैं इस फिल्म में..

कॉस्ट्यूम्स यानी परिधान एक ऐसी चीज है, जिससे हर लड़की को प्यार होता ही है। बचपन में हमारे माता-पिता हमें बार्बी डॉल जैसा सजाते हैं, फिर बड़े होकर हम खुद किसी की प्रिंसेज होने का ख्वाब संजोते हैं। इस बार मुझे बड़े परदे पर ऐसा ही कुछ करने का मौका मिला और सजना, संवरना किस युवती को अच्छा नहीं लगता, खासकर त्यौहारी मौसम में।

श्रुति हासन ने साझा किया कुली में रजनीकांत के साथ काम करने का अनुभव

श्रुति हासन इन दिनों रजनीकांत के साथ अपनी आने वाली फिल्म कुली पर काम कर रही हैं। लोकेश कनगराज द्वारा निर्देशित इस एक्शन-थ्रिलर में अभिनेत्री प्रीति की भूमिका निभाती नजर आएंगी। अब श्रुति ने रजनीकांत के साथ काम करने के अपने अनुभव को साझा किया और अपने पिता कमल हासन के साथ उनके बंधन के बारे में बात की। श्रुति ने कहा- रजनीकांत साथ काम करना वाकई बहुत बढ़िया है, पिछले कुछ दिनों या महीनों से हम साथ में शूटिंग कर रहे हैं, उनके साथ काम करना वाकई बहुत अच्छा अनुभव है। दुनिया में दयालुता दुर्लभ है और जब कोई ऐसा व्यक्ति, जिसने इतना कुछ हासिल किया हो और महान मुकाम हासिल किया हो, वह दयालु बना रहता है तो यह बहुत खास लगता है। श्रुति ने बताया कि उन्होंने रजनीकांत के बारे में सिर्फ दूसरों से ही सुना था, लेकिन उनके साथ काम करना शुरू कर दिया।

राम चरण के लिए गेम चेंजर साबित होगा बिग बॉस 18

साउथ सुपरस्टार राम चरण इन दिनों अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म गेम चेंजर को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। वे इन दिनों लगातार फिल्म के प्रचार में जुटे हुए हैं, जिसके लिए उन्होंने कई अलग-अलग योजनाएं बनाई हैं। वहीं, अब राम चरण ने गेम चेंजर का प्रचार करने के लिए एक दिलचस्प प्लेटफॉर्म चुना है। चलिए जानते हैं कि अब राम चरण कहां फिल्म का प्रचार करेंगे।

भाईजान के साथ नजर आएंगे राम चरण

गेम चेंजर का प्रमोशनल टूर अमेरिका में शुरू हो चुका है और बहुत जल्द भारत में भी प्रमोशन शुरू हो जाएगा। इस बीच खबर आ रही है कि राम चरण मुंबई में बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के रियलिटी शो बिग बॉस 18 में शामिल होंगे। वह सलमान के रियलिटी शो में गेम चेंजर का प्रमोशन करेंगे।

आधिकारिक एलान का इंतजार

सलमान और राम चरण का रिश्ता काफी पुराना है और असल जिंदगी में भी दोनों के बीच काफी करीबी रिश्ता है, इसलिए प्रशंसकों के लिए दोनों सितारों को एक साथ स्क्रीन पर देखना किसी ट्रीट से कम नहीं होगा। वहीं, अब इस जानकारी को लेकर आधिकारिक एलान का इंतजार है। उम्मीद है जल्द ही शो के निर्माता भी प्रोमो जारी करेंगे।

सुकुमार ने की फिल्म की तारीफ

इससे पहले अमेरिका के डलास में फिल्म के प्रचार कार्यक्रम में निर्देशक सुकुमार ने दावा किया कि राम चरण ने फिल्म में इतना अच्छा अभिनय किया है कि उन्हें उम्मीद है कि अभिनेता को इसके लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिलेगा। इस दौरान उन्होंने कहा, मैं आपको एक रहस्य बताता हूं। मैंने यह फिल्म चिरंजीवी सर के साथ देखी, गेम चेंजर, इसलिए मैं पहली समीक्षा देना चाहता हूं। पहला भाग, कमाल का। इंटरवल, ब्लॉकबस्टर। मेरा विश्वास करो। दूसरा भाग, फ्लैशबैक एपिसोड ने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए, अद्भुत। मैंने इसे शंकर की जेंटलमैन और इंडियन जितना ही एन्जॉय किया।

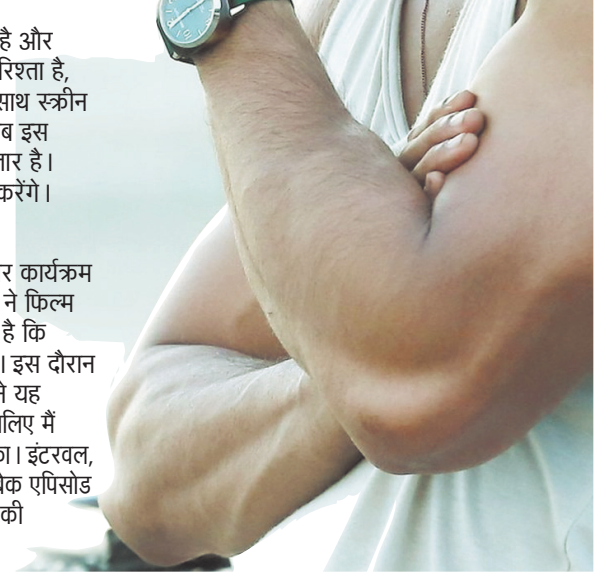

ऑस्कर से लापता लेडीज के बाहर होने पर बोलीं शहाना

भारत की तरफ से फिल्म लापता लेडीज को ऑस्कर अवॉर्ड्स में आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में भेजा गया। हालांकि, अंतिम सूची में यह फिल्म जगह बनाने से रह गई। सोशल मीडिया पर इसे लेकर लोगों ने अलग-अलग प्रतिक्रिया दी। भारत की ऑस्कर के लिए फिल्मों की चयन प्रक्रिया पर सवाल उठाया गया। इस पर अब अभिनेत्री शहाना गोस्वामी ने प्रतिक्रिया दी है।

शहाना की फिल्म संतोष का ऑस्कर में चयन हो गया है। मालूम हो कि संतोष फिल्म को यूके के तरफ से ऑस्कर भेजा गया है। शहाना से जब पूछा गया कि फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया ने अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता पायल कपाड़िया की फिल्म ऑल वी इमेजिन ऐज लाइट की बजाय लापता लेडीज को चुना। इस पर आपकी कुछ कहेंगी? शहाना ने कहा कि उन्हें तक नही मालूम कि ऑस्कर के लिए चयन कैसे हुआ? ईमानदारी से बताऊं तो मुझे नहीं पता कि फिल्मों को कैसे चुना जाता है। मुझे लगता है कि यह एनएफडीसी ही तय करता है, लेकिन मुझे नहीं पता कि तरीका क्या हैं या आवेदन प्रक्रिया क्या है? इसलिए मुझे नहीं लगता कि फिल्म के चयन पर मुझे कोई टिप्पणी करनी चाहिए।

सोशल मीडिया पर चलीं चर्चाओं पर कही ये बात

लापता लेडीज के ऑस्कर से बाहर होने के बाद से ही सोशल मीडिया पर चर्चा चल रही है। इस पर शहाना ने कहा कि ऐसी प्रतिक्रियाएं इंसान का स्वभाव हैं। उन्होंने कहा कि जब इसे चुना गया, तो लोग खुशी से झूम उठे। उन्होंने कहा, लापता लेडीज ने उम्दा प्रदर्शन किया है। सिनेमाघरों में भले ही यह सुस्त चली, लेकिन ओटीटी पर इसे कमाल का रेस्पॉन्स मिला। शहाना ने आगे कहा कि यह बता पाना मुश्किल होता है कि एक फिल्म दूसरी से बेहतर कैसे हुई? मैं शुक्रगुजार हूं कि लापता लेडीज इतनी आगे बढ़ी और वैश्विक स्तर पर दक्षिण एशियाई महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बारे में जागरूकता पैदा की उस पर चर्चा हुई। एक शॉर्ट फिल्म, अनुजा को शॉर्टलिस्ट किया गया है। दक्षिण एशियाई महिलाओं और उनके काम को मान्यता मिल रही है, यह भी एक उपलब्धि है। हालांकि, हमें अपने काम को मान्यता दिलाने के लिए किसी मंच की जरूरत नहीं, लेकिन फिल्मों का चुना जाता आश्चर्यजनक है। अब लोग हमारी फिल्में ज्यादा देखेंगे।

शहाना ने पुलिस ऑफिसर का रोल किया है अदा

फिल्म संतोष ऑस्कर 2025 के लिए शॉर्टलिस्ट हो गई है। इसमें भारतीय कलाकारों ने भी काम किया है। संध्या सूरी के निर्देशन में बनी यह फिल्म उत्तर भारत की कहानी पर आधारित है, लेकिन इसका निर्माण ब्रिटेन, जर्मनी, भारत और फ्रांस के तमाम निर्माताओं ने मिलकर किया है। इसे यूके की तरफ से ऑस्कर की तरफ से भेजा गया है। शहाना गोस्वामी ने फिल्म में पुलिस अफसर की भूमिका अदा की है। फिल्म संतोष का प्रीमियर कान फिल्म फेस्टिवल में भी हो चुका है। संतोष फिल्म को ब्रिटेन में व्यापक स्तर पर रिलीज किया गया था।

गेम चेंजर के साथ फतेह के क्लैश पर सोनू सूद ने तोड़ी चुप्पी

सोनू सूद और जैकलीन फर्नांडीज की फिल्म फतेह 10 जनवरी 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। फिल्म का बॉक्स ऑफिस पर राम चरण और कियारा आडवाणी की फिल्म गेम चेंजर से क्लैश होने वाला है। सोनू ने फतेह की राम की राजनीतिक एक्शन थ्रिलर फिल्म से बड़े पर्दे पर होने वाली क्लैश के बारे में बात की। अभिनेता ने उम्मीद जताई कि दोनों फिल्में टिकट खिड़की पर अच्छा प्रदर्शन करेंगी। सोनू ने कहा- जब एक ही दिन दो या तीन फिल्में रिलीज हुई और उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया, अच्छी फिल्में हमेशा अच्छा प्रदर्शन करती। सोनू ने एयरपोर्ट पर चिरंजीवी से मुलाकात और फतेह के ट्रेलर पर उनकी प्रतिक्रिया को याद किया। सोनू ने बताया- जब उन्होंने फतेह का ट्रेलर देखा तो उन्होंने कहा कि यह कुछ ऐसा है, जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखा।

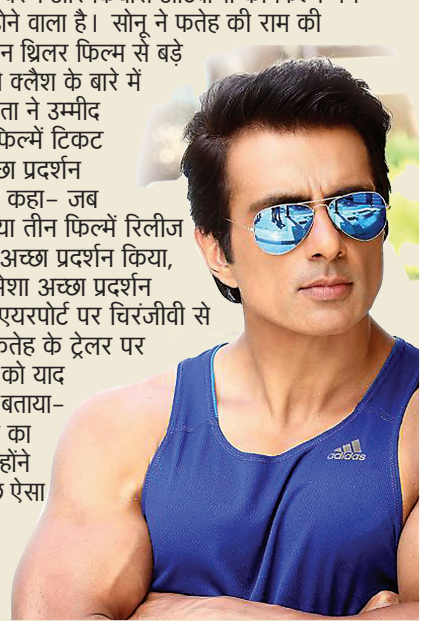

हर 10 मिनट में 50 लाख से ज्यादा की एक कार बिकी

, लग्जरी गाड़ियों के मामले में साल 2024 में बन गया रेकॉर्ड

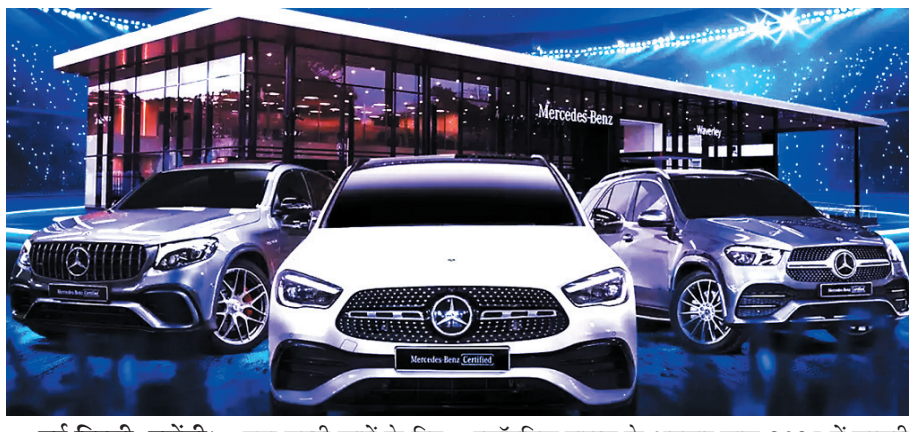

नई दिल्ली, एजेंसी। क्या सस्ती कारों के दिन लदने वाले हैं साल 2024 में लग्जरी कारों की डिमांड कुछ ऐसा ही इशारा कर रही है। आंकड़े बताते हैं कि इस साल हर घंटे ऐसी 6 लग्जरी कारों की बिक्री हुई जिनकी कीमत 50 लाख रुपये से ज्यादा थी। यानी हर 10 मिनट में एक लग्जरी कार बिक्री है। इन कारों में ऑडी और मर्सिडीज-बेंज जैसे बड़े ब्रांड की कार शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक 5 साल पहले हर घंटे लग्जरी कारों की बिक्री की संख्या मात्र दो थी। ऐसे में इन 5 वर्षों में इसमें तीन गुना की तेजी आई है। इससे पता चलता है कि संपन्न वर्ग का विस्तार हो रहा है। इकॉनमिक टाइम्स के अनुसार साल 2025 में लग्जरी कार निर्माता दो दर्जन से ज्यादा नई गाड़ियां लॉन्च करने की तैयारी कर रहे हैं।

कैसा होगा साल 2025

इंडस्ट्री के जानकारों के मुताबिक साल 2025 में लग्जरी कारों की बिक्री में और तेजी आने की उम्मीद है। माना जा रहा है कि साल 2025 में लग्जरी कारों की बिक्री 50 हजार का आंकड़ा पार कर जाएगी। अगर ऐसा होता है तो यह पहली बार होगा।

साल 2024 में कैसी रही स्थिति

इस साल भी लग्जरी कारों की बिक्री में काफी तेजी आई है। मर्सिडीज-बेंज कारों की बिक्री की संख्या साल 2024 में 20 हजार हो जाएगी। कंपनी ने सितंबर तक नौ महीनों में बिक्री में 13 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जो 14,379 यूनिट थी। वहीं जनवरी से सितंबर के दौरान बीएमडब्ल्यू इंडिया की बिक्री करीब 5 प्रतिशत बढ़कर रेकॉर्ड 10,556 वाहन हो गई। ऑडी इंडिया ने कहा कि वह अगले साल बिक्री को फिर से बढ़ाने के लिए तैयार है।

क्यों बढ़ रही लग्जरी कारों की बिक्री

देश में अरबपतियों की संख्या में तेज आ रही है। नाइट फ्रैंक की द वेल्थ रिपोर्ट 2024 के अनुसार अल्ट्रा-रिच भारतीयों की संख्या 2023 में 13263 से 2028 में 50 प्रतिशत बढ़कर 19908 हो जाने की उम्मीद है। भारत के बाद चीन (47 प्रतिशत), तुर्की (42.9 प्रतिशत) और मलेशिया (35 प्रतिशत) का स्थान होगा। इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स के मुताबिक देश में अरबपतियों की संख्या बढ़ने से लग्जरी कारों की बिक्री में तेजी आई है।

जस्टडायल ने 2024 में उपभोक्ताओं के सर्च के रूझानों पर डाली रोशनी

मुंबई, एजेंसी। भारत के नंबर 1 लोकल सर्च इंजन जस्टडायल ने 'हाओ इंडिया सर्च्ड इन 2024' रिपोर्ट का अनावरण किया है, जिसमें 2024 में भारतीयों के द्वारा सर्च के रूझानों पर रोशनी डाली गई है। इस साल के आंकड़े हेल्थकेयर, फिटनैस, ट्रैवल, फूड, एजुकेशन जैसी कैटेगरीज़ में सर्च के रूझानों को दर्शाते है। रिपोर्ट से साफ है कि स्वास्थ्य, सुविधाओं और आरामदायक अनुभवों की तरफ उपभोक्ताओं का झुकाव बढ़ रहा है। टियर 1 और टियर 2 शहरों में सर्च के रूझान एकदम विपरीत पाए गए हैं, टियर 2 में सर्च की संख्या टियर 1 शहरों में तुलना में 112 फीसदी अधिक रही, जिससे स्पष्ट है कि डिजिटल फुटप्रिन्ट महानगरों के दायरे से आगे बढ़ रहा है। विश्लेषण से पता चलता है कि कुछ कैटेगरीज़ जैसे हेल्थकेयर, वैलनैस, एजुकेशन और लेज़र की तरफ शहरी एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों का झुकाव बना हुआ है, हालांकि इन क्षेत्रों में विकास के आंकड़े और प्राथमिकताएं अलग पाई गई हैं। हेल्थकेयर और मेडिकल सर्विसेज़ कैटेगरी में सर्च में 24 फीसदी सालाना बढ़ोतरी हुई है, यह सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाले सेक्टरों में से एक है। हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स की बात करें तो गायनेकोलोजिस्ट और ऑब्स्टेट्रिशियन की मांग 22 फीसदी बढ़ी है। इससे स्पष्ट है कि महिलाओं के स्वास्थ्य की ओर झुकाव बढ़ रहा है। इसके अलावा ईएनटी स्पेशलिस्ट की सर्च में 21 फीसदी और डेंटिस्ट की सर्च में 19 फीसदी बढ़ोतरी स्पेशलाइज्ड मेडिकल केयर की ओर बढ़ते झुकाव को दर्शाती है। अस्पतालों और डायग्नॉस्टिक सेंटरों की मांग भी बढ़ी है, शहरी एवं ग्रामीण भारत हेल्थकेयर के सुलभ समाधानों को प्राथमिकता दे रहा है। इसी तरह वैलनैस और पर्सनल केयर सेक्टर में 7 फीसदी सालाना की बढ़ोतरी देखी गई है, भारतीय लोग अपनी देखभाल को महत्व दे रहे हैं। इसके अलावा रिलेक्सेशन थेरेपी, ब्यूटी स्पा, ब्यूटी पार्लर, सैलून, स्किनकेयर क्लिनिक की सर्च भी बढ़ी है, इस दृष्टि से खासतौर पर दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, बैंगलोर और चेन्नई में बढ़ोतरी हुई है। स्किनकेयर विकास का मुख्य क्षेत्र रहा है, जहां 15 फीसदी की बढ़ोतरी प्रीवेन्टिव केयर और वैलनैस की ओर बढ़ते रूझानों को दर्शाती है।

यूपीआई के जरिए पेमेंट कर सकेंगे प्रीपेड कार्डधारक, आरबीआई ने दिया बड़ा तोहफा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने प्रीपेड कार्ड धारकों को बड़ी सौगात दी है। दरअसल, रिजर्व बैंक ने थर्ड पार्टी वाले मोबाइल एप्लिकेशन के जरिये यूपीआई भुगतान करने और भुगतान पाने की अनुमति दे दी है। बता दें कि रिजर्व बैंक के इस निर्णय से गिफ्ट कार्ड, मेट्रो रेल कार्ड और डिजिटल वॉलेट जैसे प्रीपेड भुगतान उपकरणों धारकों को अधिक सुविधा होगी।

क्या है आरबीआई के सर्कुलर में- रिजर्व बैंक ने सर्कुलर में कहा कि थर्ड पार्टी वाले यूपीआई ऐप के जरिये पूर्ण-केवाईसी वाले पीपीआई से यूपीआई पेमेंट को सक्षम करने का निर्णय लिया गया है। इसी तरह पीपीआई को यूपीआई पेमेंट पाने की भी मंजूरी होगी। आरबीआई ने कहा- एक पीपीआई जारीकर्ता अपने ग्राहक को यूपीआई हैंडल से जोड़कर केवल अपने पूर्ण-केवाईसी वाले पीपीआई धारकों को यूपीआई भुगतान करने में सक्षम करेगा। जारीकर्ता के

एप्लिकेशन पर पीपीआई से यूपीआई लेनदेन ग्राहक के मौजूदा पीपीआई पहचान का उपयोग करके प्रमाणित किया जाएगा। मतलब है कि इस तरह के लेनदेन को यूपीआई प्रणाली तक पहुंचने से पहले पूर्व-अनुमोदित किया जाएगा। आरबीआई ने कहा कि भुगतान प्रणाली प्रदाता के रूप में पीपीआई जारीकर्ता को किसी भी बैंक या किसी अन्य पीपीआई जारीकर्ता के ग्राहकों को अपने साथ नहीं जोड़ना चाहिए। फिलहाल किसी बैंक खाते से यूपीआई भुगतान उस बैंक या किसी थर्ड पार्टी एप्लिकेशन प्रदाता के यूपीआई एप्लिकेशन का उपयोग करके किया जा सकता है। हालांकि पीपीआई से यूपीआई भुगतान केवल पीपीआई जारीकर्ता द्वारा प्रदान किए गए मोबाइल एप्लिकेशन का उपयोग करके ही किया जा सकता है। पीपीआई ऐसे उपकरण हैं जो वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद, वित्तीय सेवाओं के संचालन और उसमें संग्रहीत मूल्य के विरुद्ध धनप्रेषण सुविधाओं को सक्षम करते हैं। वहीं यूपीआई, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम द्वारा मोबाइल फोन के जरिये अंतर-बैंक लेनदेन की सुविधा के लिए विकसित एक त्वरित वास्तविक समय भुगतान प्रणाली है।

अडानी की कंपनी खरीदेगी 8 टैक्सी जहाज, 450 करोड़ का सौदा

नई दिल्ली, एजेंसी। अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन ने शुक्रवार को कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड से आठ हार्बर टग खरीदने का ऐलान किया है। हार्बर टग ऐसा जहाज होता है जो बंदरगाहों में बड़े जहाजों को खींचने, धकेलने या मोड़ने के लिए इस्तेमाल होता है। इसे आप बंदरगाह का टैक्सी भी कह सकते हैं। यह मेक इन इंडिया पहल का हिस्सा है। इस प्रोजेक्ट की कुल कीमत लगभग 450 करोड़ रुपये है। इन टग्स की डिलीवरी दिसंबर 2026 से मई 2028 के बीच होने की उम्मीद है। इस कदम से गौतम अडानी की कंपनी भारतीय बंदरगाहों पर अपनी कार्यक्षमता और सुरक्षा बढ़ाना चाहती है। आठ हार्बर टग की खरीद के लिए यह ऑर्डर देश में इस सेक्टर में अब तक सबसे बड़ा है। अडानी पोर्ट्स के अनुसार, नए टग बंदरगाह सेवाओं में बेहतर सहायता और विश्वसनीयता प्रदान करके जहाज संचालन को बढ़ाएंगे। ये टग्स बंदरगाहों में जहाजों की आवाजाही में मदद करेंगे। इससे कामकाज और भी आसान हो जाएगा।

अडानी पोर्ट्स ने क्या कहा- कंपनी के पूर्णकालिक निदेशक और सीईओ अश्वनी गुप्ता ने कहा कि कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड से खरीद कंपनी की भारत में समुद्री बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने कहा, कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड से खरीद के लिए यह सहयोग भारत में समुद्री बुनियादी ढांचे को बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है और हमारे देश के पीएसयू में हमारे विश्वास को प्रदर्शित करता है। विश्व स्तरीय स्थानीय विनिर्माण क्षमताओं का लाभ उठाकर हमारा उद्देश्य मेक इन इंडिया पहल में योगदान करना है।

क्या होगा फायदा

यह खरीद एपीएसईजेड और कोचिन शिपयार्ड के बीच पिछले कॉन्ट्रैक्ट्स को फॉलो करती है। इसमें ओशन स्पार्कल लिमिटेड के लिए दो 62-टन बोलार्ड पुल अजीमुथिंग स्टर्न ड्राइव टग का निर्माण शामिल है। दोनों टग समय से पहले डिलीवरी किए गए थे। अब पारादीप पोर्ट और न्यू मंगलोर पोर्ट पर चालू हैं। इसके अतिरिक्त, तीन और, स्ठ टग का निर्माण वर्तमान में चल रहा है। इससे एपीएसईजेड से कुल ऑर्डर 13 टग हो गया है। एएसडी खास तरह के जहाज होते हैं जो अपनी जगह पर घूमकर जहाजों को बेहतर तरीके से कंट्रोल कर सकते हैं। यह समझौता एपीएसईजेड के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इससे कंपनी को अपने बंदरगाहों पर जहाजों की आवाजाही को और भी सुचारू बनाने में मदद मिलेगी। साथ ही, यह मेक इन इंडिया पहल को भी बढ़ावा देगा और देश में रोजगार के अवसर पैदा करेगा। यह कदम एपीएसईजेड की लंबी अवधि की रणनीति का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य भारतीय बंदरगाहों की क्षमता और दक्षता में सुधार करना है।

चालू खाता घाटे में आई मामूली गिरावट, विदेशी मुद्रा भंडार पर लगा झटका

नई दिल्ली, एजेंसी। देश का चालू खाता घाटा (कैड) 2024-25 की जुलाई-सितंबर तिमाही में मामूली घटकर 11.2 अरब डॉलर रहा। यह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 1.2 प्रतिशत है। वहीं, वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही के दौरान कैड 11.3 अरब डॉलर यानी जीडीपी का 1.3 प्रतिशत था। इस बीच, विदेशी मुद्रा भंडार के मोर्चे पर झटका लगा है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के

मुताबिक विदेशी मुद्रा भंडार घट गया है।

अप्रैल-सितंबर के दौरान कैड आंकड़े- चालू खाता घाटा यानी कैड अप्रैल-सितंबर (2024-25 की पहली छमाही) के दौरान, 21.4 अरब डॉलर यानी जीडीपी का 1.2 प्रतिशत रहा, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 20.2 अरब डॉलर (जीडीपी का 1.2 प्रतिशत) था। आरबीआई आंकड़ों के अनुसार वस्तु व्यापार घाटा 2024-25 की दूसरी तिमाही में बढ़कर 75.3 अरब डॉलर हो गया, जो 2023-24 की इसी तिमाही में 64.5 अरब डॉलर था। आरबीआई ने कहा कि नेट विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) मद में 2024-25 की दूसरी तिमाही में 2.2 अरब डॉलर की निकासी हुई, जबकि 2023-24 की इसी अवधि में 0.8 अरब डॉलर की निकासी हुई थी। विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) के तहत नेट फ्लो 2024-25 की दूसरी तिमाही में बढ़कर 19.9 अरब डॉलर हो गया, जो उससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 4.9 अरब डॉलर था।

विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट- देश का विदेशी मुद्रा भंडार 20 दिसंबर को समाप्त सप्ताह में 8.48 अरब डॉलर घटकर 644.39 अरब डॉलर रहा।

आरबीआई की रिपोर्ट, दो साल से उच्च ब्याज दरों के स्थिर होने के बावजूद पर्सनल लोन में वृद्धि

नई दिल्ली, एजेंसी। दो साल से उच्च ब्याज दरों के स्थिर होने के बावजूद पर्सनल लोन के तहत आने वाले हाउसिंग, क्रेडिट कार्ड और शिक्षा कर्ज में 23 फीसदी से ज्यादा की वृद्धि हुई है। आरबीआई के आंकड़ों के मुताबिक, हाउसिंग के एवज में कर्ज मार्च, 2024 तक सबसे अधिक 36 फीसदी बढ़कर 27,18,715 करोड़ रुपये पहुंच गया।मार्च, 2023 तक यह 19,91,164 करोड़ रुपये था। कुल पर्सनल लोन 20 फीसदी बढ़कर 53.31 लाख करोड़ के स्तर पर पहुंच गया है।

इसी तरह, क्रेडिट कार्ड बकाया 25.6 फीसदी बढ़कर 2.57 लाख करोड़ और शिक्षा कर्ज 23.7 फीसदी बढ़कर 1.19 लाख करोड़ पहुंच गया।कंज्यूमर ड्यूरेबल खरीदने को लिया गया कर्ज 13.4 फीसदी, फिक्स्ड डिपॉजिट के बदले कर्ज 2.2 फीसदी, ऑटो लोन 17.4 फीसदी और गोल्ड लोन 14.8 फीसदी बढ़ा है। कुल कर्ज में पर्सनल लोन का हिस्सा 2023-24 में बढ़कर 27 फीसदी पहुंच गया, जो

2022-23 में 20 फीसदी था। कृषि कर्ज 15.4 फीसदी से बढ़कर मार्च, 2024 में 20 फीसदी पहुंच गया।उद्योग कर्ज बढ़कर 8.5 फीसदी पहुंच गया।

आपसे पैसे लेकर बैंक ऐसे चलाते हैं अपना कारोबार

बैंकों का कारोबार मूलरूप से आपसे जमा लेकर उसी को किसी अन्य को कर्ज देकर चलता है। आपसे कम ब्याज पर पैसा लेकर दूसरों को ज्यादा ब्याज पर देते हैं। सरकारी बैंकों के फंड की लागत 2022-23 में 4.1 फीसदी रही थी और उनकी कमाई 7.5 फीसदी रही। 2023-24 में लागत बढ़कर 5 फीसदी तो हो गई, लेकिन कर्ज से कमाई भी बढ़कर 8.41 फीसदी पर पहुंच गई। निजी बैंकों का भी यही हाल है। उनकी लागत मार्च, 2024 में 5.4 फीसदी थी लेकिन कर्ज से कमाई 10.4 फीसदी रही थी।

बड़े कर्ज लेने वालों का हिस्सा घटा

रिपोर्ट के अनुसार, कुल उधारी में शेडयूल्ड कमर्शियल बैंकों से बड़ी उधारी लेने वालों का हिस्सा घट गया है। मार्च, 2024 में इनका हिस्सा 43.9 फीसदी रहा जो मार्च, 2023 में 46.5 फीसदी रहा था।

एक साल में 1.10 करोड़ से अधिक नए क्रेडिट कार्ड जारी- देश में एक साल में 1.10 करोड़ से अधिक नए क्रेडिट कार्ड जारी हुए हैं। नवंबर, 2023 में कुल 9.60 करोड़ कार्ड थे, जो इस साल नवंबर में बढ़कर 10.72 करोड़ हो गए। निजी बैंकों की हिस्सेदारी 71 फीसदी व सरकारी बैंकों की 23.82 फीसदी है। क्रेडिट कार्ड से कुल लेनदेन का मूल्य 1.70 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया।

डेबिट कार्ड में सरकारी बैंकों का दबदबा- नवंबर, 2024 तक 99.36 करोड़ डेबिट कार्ड थे। इसमें सरकारी बैंकों का हिस्सा 64.67 फीसदी व निजी बैंकों का 24.94 फीसदी है।

सूक्ष्म-छोटे उद्योगों को भी मिला ज्यादा ऋण

रिपोर्ट के मुताबिक, सूक्ष्म एवं छोटे उद्योगों का हिस्सा 13.1 से बढ़कर 14.7 फीसदी, मध्यम इकाइयों का 12.3 फीसदी से बढ़कर 13.3 फीसदी और बड़ी कंपनियों को दिए जाने वाला कर्ज का हिस्सा 3.5 फीसदी से बढ़कर 6.4 फीसदी के स्तर पर पहुंच गया है।इसी प्रकार, कुल कर्ज में सेवा क्षेत्र का हिस्सा 23.5 फीसदी रहा, जो 2023 मार्च में 19.5 फीसदी रहा था।

बजट 2025 से पहले आई बड़ी खबर, मिडिल क्लास को मिल सकती है बड़ी राहत

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार आगामी बजट में मिडिल क्लास को राहत देने के लिए इनकम टैक्स दरों में कटौती पर विचार कर रही है। हालांकि, टैक्स छूट की सटीक सीमा का निर्धारण अभी नहीं हुआ है। इस पर अंतिम निर्णय 1 फरवरी 2025 को बजट पेश किए जाने से पहले लिया जाएगा। अनुमान लगाए जा रहे हैं कि मिडिल क्लास को राहत देने के लिए केंद्र सरकार आगामी बजट 2025-26 में 15 लाख रुपए तक की इनकम वाले व्यक्तियों के लिए इनकम टैक्स में कटौती कर सकती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, सरकार के इस कदम का मकसद धीमी विकास दर के बीच अर्थव्यवस्था में कंजम्पशन को बढ़ावा देना है।

अर्थशास्त्रियों ने दिए बड़े सुझाव- देश के कई बड़े इकोनॉमिस्ट्स ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नागरिकों पर आर्थिक बोझ को कम करने के लिए इनकम टैक्स के रेट्स में कटौती करने का भी आग्रह किया है। पीएम मोदी ने नीति आयोग की एक बैठक में इकोनॉमिस्ट्स और क्षेत्रीय एक्सपर्ट्स से मुलाकात कर आगामी बजट के लिए उनके विचार और सुझाव सुने। बैठक में इकोनॉमिस्ट्स और क्षेत्रीय एक्सपर्ट्स ने कथित तौर पर सरकार को आगामी बजट में इनकम टैक्स में कटौती, कस्टम ड्यूटी को रेशनलाइज करने और निर्यात को समर्थन देने के उपायों को शामिल करने का सुझाव दिया है।

मेलबर्न में भारतीय टीम की शानदार वापसी

ऑस्ट्रेलिया के 474 रन के जवाब में बनाए 358/9, नीतीश का शतक

मेलबर्न (एजेंसी)। मेलबर्न में जारी बॉक्सिंग डे टेस्ट के तीसरे दिन का खेल खत्म हो चुका है। टीम इंडिया ने इस मैच में जबरदस्त वापसी की है और खेल खत्म होने तक अपनी पहली पारी में नौ विकेट गंवाकर 358 रन बना लिए हैं। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 474 रन बनाए थे। इस लिहाज से भारत अभी भी 116 रन पीछे है। नीतीश रेड्डी ने बेहतरीन शतक जड़ा। वह फिलहाल 105 रन बनाकर नाबाद हैं। उन्होंने अब तक 176 गेंद की अपनी पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया है।

शतक के बाद पिता के सामने बाहुबली अंदाज, फ्लावर नहीं फायर हैं नीतीश रेड्डी..

भारत ने तीसरे दिन 194 रन जोड़े

भारत ने शनिवार को पांच विकेट पर 164 रन से आगे खेलना शुरू किया और 194 रन जोड़े। इस दौरान भारत ने चार और विकेट गंवाए। शनिवार को ऋषभ पंत, रवींद्र जडेजा, जसप्रीत बुमराह और वॉशिंगटन सुंदर आउट हुए। नीतीश ने नौवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे वॉशिंगटन सुंदर के साथ आठवें विकेट के लिए 127 रन की साझेदारी निभाई। सुंदर और नीतीश दोनों ने 150-150 गेंद खेलीं।टेस्ट क्रिकेट में ऐसा पहली बार हुआ जब किसी टीम के आठवें और नौवें नंबर के बल्लेबाज ने 150+ गेंदें खेली हों। दोनों ने संयुक्त रूप से 285 गेंदें खेलीं यानी करीब 48 ओवर बल्लेबाजी की। सुंदर 162 गेंद में एक चौके की मदद से 50 रन बनाकर आउट हुए। इससे पहले यशस्वी जायसवाल 82 रन, रोहित शर्मा तीन, केएल राहुल 24 रन, विराट कोहली 36 रन और ऋषभ पंत 28 रन और रवींद्र जडेजा 17 रन बनाकर आउट हुए थे। जसप्रीत बुमराह और आकाश दीप खाता नहीं खोल सके।

नीतीश रेड्डी का पहला अंतरराष्ट्रीय शतक

नीतीश ने 171 गेंद में बोलैंड की गेंद पर चौका लगाकर शतक लगाया। यह उनके अंतरराष्ट्रीय करियर का पहला शतक है। उन्होंने टेस्ट में पहली बार पचास से ज्यादा रन बनाए और उस पारी को शतक में बदल दिया। नीतीश इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट में शतक लगाने वाले तीसरे सबसे युवा भारतीय बन गए हैं। उनसे आगे सिर्फ सचिन तेंदुलकर और ऋषभ पंत हैं। नीतीश के लिए यह शतक इसलिए भी खास है क्योंकि उनके पिता मुतयाला रेड्डी दर्शक दीर्घा में मौजूद हैं और यह मैच देख रहे हैं। अपने पिता के सामने शतक लगाने के बाद नीतीश भावुक भी हो गए।

दोनों टीमें एक-एक बदलाव के साथ उतरीं

इस मैच के लिए दोनों टीमों में एक-एक बदलाव हुआ था। ऑस्ट्रेलिया ने जोश हेजलवुड की जगह स्कॉट बोलैंड और भारत ने शुभमन गिल की जगह वॉशिंगटन सुंदर को मौका दिया। कंगारुओं की शुरुआत अच्छी रही थी और 19 साल के डेब्यूटांट सैम कोंस्टास ने उस्मान ख्वाजा के साथ पहले विकेट के लिए 89 रन की साझेदारी निभाई। कोंस्टास ने अपने डेब्यू मैच में ही आक्रामक बल्लेबाजी की और बुमराह को निशाने पर लिया। उन्होंने अर्धशतक जमाया। हालांकि, इसके बाद रवींद्र जडेजा की गेंद पर एल्बीडब्ल्यू आउट हो गए। कोंस्टास 65 गेंद में छह चौके और दो छक्के की मदद स 60 रन बनाकर आउट हुए।

● **ख्वाजा-लाबुशेन ने अर्धशतक लगाया** - इसके बाद ख्वाजा ने स्टीव स्मिथ के साथ दूसरे विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी निभाई। ख्वाजा ने टेस्ट करियर का 27वां अर्धशतक लगाया। वह 121 गेंद में छह चौके की मदद से 57 रन बनाकर बुमराह की गेंद पर आउट हुए। वहीं, हेड खाता नहीं खोल सके। उन्हें बुमराह ने क्लीन बोल्ड किया। बुमराह ने फिर मिचेल मार्श को भी सस्ते में निपटा दिया। वह चार रन बना सके। लाबुशेन ने 145 गेंद में सात चौके की मदद से 72 रन की पारी खेली। यह उनके टेस्ट करियर का 22वां अर्धशतक रहा।

ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी

ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 474 रन पर समाप्त हुई। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया के लिए शुरुआती तीन बल्लेबाजों ने अर्धशतक जड़े। इसके बाद स्टीव स्मिथ ने टेस्ट करियर का 34वां शतक लगाया। कप्तान पैट कमिंस ने 49 रन की पारी खेली। दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया ने छह विकेट पर 311 रन से आगे खेलना शुरू किया। हालांकि, भारतीय गेंदबाजों को दूसरे दिन चार विकेट के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी। ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को 163 रन जोड़े और चार विकेट गंवाए। स्मिथ 140 रन बनाकर आउट हुए। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने सबसे ज्यादा चार विकेट लिए। वहीं, रवींद्र जडेजा को तीन विकेट मिले। आकाश दीप को दो विकेट मिले, जबकि सुंदर ने एक विकेट लिया।

● **स्टीव स्मिथ ने 34वां टेस्ट शतक जड़ा** - स्टीव स्मिथ ने गाबा के बाद मेलबर्न टेस्ट में भी शतक जड़ा। उन्होंने टेस्ट करियर का 34वां शतक जड़ा। स्मिथ ने शानदार बल्लेबाजी की। यह भारत के खिलाफ टेस्ट में उनका 11वां शतक रहा और वह टीम इंडिया के खिलाफ सबसे ज्यादा टेस्ट शतक लगाने वाले बल्लेबाज भी बन गए। कमिंस ने स्मिथ के साथ सातवें विकेट के लिए 112 रन की साझेदारी निभाई। कमिंस के साथ-साथ जडेजा ने मिचेल स्टार्क को क्लीन बोल्ड किया। स्टार्क 15 रन बना सके।

दोनों टीमों की प्लेइंग-11

● **भारत :** रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, नीतीश रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज।
● **ऑस्ट्रेलिया :** उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, ट्रेविस हेड, मिचेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिचेल स्टार्क, नाथन लियोन और स्कॉट बोलैंड।

नीतीश के शतक से पहले काफी चिंतित थे पिता मुतयाला रेड्डी

● **बोले - यह हमारे परिवार के लिए खास अहसास**

भारतीय टीम के ऑलराउंडर नीतीश रेड्डी ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच के तीसरे दिन पहली पारी में शतक जड़ा और भारतीय टीम को मुश्किल से उबारा। पर्थ टेस्ट से डेब्यू करने वाले नीतीश का इस प्रारूप में यह पहला सैकड़ा है। नीतीश ने जब शतक जड़ा तो दर्शक दीर्घा में उनके पिता मुतयाला रेड्डी मौजूद थे जो अपनी खुशी छिपा नहीं सके। मुतयाला ने कहा कि जब नीतीश शतक के करीब थे, उस वक्त भारत का सिर्फ एक विकेट शेष था और वह इससे चिंतित हो गए थे कि नीतीश ऐसा कर सकेंगे या नहीं। नीतीश के लिए यह शतक इसलिए भी खास है क्योंकि उनके पिता मुतयाला रेड्डी दर्शक दीर्घा में मौजूद रहे। अपने पिता के सामने शतक लगाने के बाद नीतीश भावुक भी हो गए।

नीतीश रेड्डी है स्टार क्रिकेटर

सुनील गावस्कर, शास्त्री बोले- उन्हें ऊपर भेजा जाए

महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने नीतीश कुमार रेड्डी को भारतीय क्रिकेट का स्टार करार दिया। नीतीश ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चल रहे चौथे टेस्ट में अपना पहला टेस्ट शतक जमाकर टीम को मुश्किल स्थिति से उबारा था। बल्लेबाजी ऑलराउंडर तीसरे दिन स्टंप्स तक 105 रन बनाकर नाबाद पवेलियन लौटे। उन्होंने वाशिंगटन सुंदर के साथ 8वें विकेट के लिए 127 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी भी की। ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 474 बनाए थे। जवाब में भारतीय टीम 385/9 रन बना चुकी है। रेड्डी ने शतक लगाकर भारत ने फॉलो-ऑन के खतरे को टाल दिया है। उनका प्रदर्शन देखकर भारत के पूर्व मुख्य कोच और हरफनमौला खिलाड़ी रवि शास्त्री ने टीम इंडिया प्रबंधन से उन्हें ऊपरी क्रम पर बल्लेबाजी देने की मांग की है।गावस्कर ने कहा कि वह भारतीय क्रिकेट के स्टार हैं। यह पहला टेस्ट शतक है और वह निकट भविष्य में और भी शतक बनाने जा रहा है। मैं भविष्य में उसे रनों के बीच देखने की उम्मीद कर रहा हूं।

सस्ते में आउट होने के कारण ऋषभ पंत पर भड़के सुनील गावस्कर, बोले - बेवकूफी भरा शॉट खेला

मेलबर्न (एजेंसी)। भारतीय टीम के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज सुनील गावस्कर भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत पर भड़क गए। पंत ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच के तीसरे दिन पहली पारी में सस्ते पर आउट हुए। इस पर गावस्कर को काफी गुस्सा आया और उन्होंने कमेंट्री करने के दौरान पंत को बेवकूफ तक कह दिया। पंत को बोलैंड ने लियोन के हाथों कैच कराया। पंत 28 रन बना सके।

शुरुआत से ही घबराए हुए दिखे पंत - पंत जब आउट हुए उस वक्त भारत मुश्किल स्थिति से गुजर रहा था और उन्होंने बोलैंड की गेंद पर स्कूप शॉट खेला जिस पर कई प्रशंसक और विशेषज्ञों ने सवाल खड़े किए हैं। गावस्कर भी इसलिए पंत पर गुस्सा हुए और उन्होंने इस बल्लेबाज के लिए कठिन शब्दों का प्रयोग किया। पंत तीसरे दिन शुरुआत से ही घबराए हुए लग रहे थे और वह दो बार आउट होने से बचे थे। पंत ने बोलैंड की फूल लैंथ गेंद पर विकेटकीपर के पीछे स्कूप शॉट खेलने का फैसला किया और गेंद बल्ले से ठीक से लगी नहीं और थर्ड मैन पर खड़े फील्डर ने कैच लेकर उन्हें आउट किया।

● **यह विकेट गंवाने जैसा शॉट** - जैसे ही पंत आउट हुए गावस्कर गुस्से से बौखला गए और उन्होंने कहा, बेवकूफ, बेवकूफ, बेवकूफ... वहां पहले से ही दो फील्डर तैनात हैं और इसके बाद भी आपने यह शॉट खेलने का फैसला किया। आपने पिछला शॉट मिस किया था और देखें कि कहां कैच आउट हुए। यह तो अपना विकेट गंवाना जैसा है। वो भी तब जब टीम इन हालात में है। हालात को भी समझना चाहिए था। आप यह नहीं कह सकते कि यह आपका स्वाभाविक खेल है। यह आपका स्वाभाविक खेल नहीं है। यह बेवकूफाना शॉट था। आपने टीम को निराश किया है। उसे ड्रेसिंग रूम में नहीं जाना चाहिए। पंत को दूसरे ड्रेसिंग रूम में जाना चाहिए।

श्रीलंका ने आखिरी 40 गेंदों में गंवाए 8 विकेट, न्यूजीलैंड से जीता मुकाबला गंवाया

माउंट माउंगानुई (एजेंसी)। माउंट माउंगानुई के बे ओवल के मैदान पर कई उतार-चढ़ाव भरे मैच में आखिरकार न्यूजीलैंड की टीम श्रीलंका के खिलाफ पहला टी20 मुकाबला जीतने में सफल रही। न्यूजीलैंड की टीम ने पहले खेलते हुए 20 ओवरों में डेरिल मिचेल के 62 तो माइकल ब्रेसवेल के 59 रनों की बदौलत 172 रन बनाए थे। जवाब में खेलने उतरी श्रीलंकाई टीम एक समय 121 रन पर एक विकेट गंवाकर खेल रही थी। लेकिन कीवी गेंदबाज जैकब डफी ने एक ही ओवर में तीन विकेट लेकर श्रीलंका की लय बिगाड़ दी। श्रीलंकाई बल्लेबाजों पर ऐसा दबाव बनाया कि उन्होंने आखिरी 40 गेंदों में ही 8 विकेट गंवा दिए। इस तरह न्यूजीलैंड ने यह मुकाबला 8 रन से अपने नाम कर लिया।

न्यूजीलैंड: 172-8 (20 ओवर)

कीवी टीम को ओपनिंग पर आए टिम रॉबिन्सन 11 और रचिन रवींद्र 8 अच्छी शुरूआत नहीं दे पाए। चैपमैन 15 तो ग्लेन फिलिप्स 8 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। स्कोर जब 65 रन पर पांच विकेट हो चुका था तब डेरिल मिचेल ने माइकल ब्रेसवेल ने 100 से ज्यादा की पार्टनरशिप की और स्कोर 172 तक ले गए। मिचेल ने 42 गेंदों पर 62 तो ब्रेसवेल ने 33 गेंदों पर 4 चौके और 4 छक्कों की मदद से 59 रन बनाए।

श्रीलंका: 164-8 (20 ओवर)

पाथुम निसांका और कुसल मेंडिस ने अपनी टीम को अच्छी शुरूआत दी और पहले विकेट के लिए 121 रन जोड़े। निसांका 60 गेंदों पर 7 चौके और तीन छक्कों की मदद से 90 तो कुसल मेंडिस ने 36 गेंदों पर 6 चौके और 1 छक्के की मदद से 46 रन बनाए। इसके बाद श्रीलंका ने लगातार विकेट गंवाए। कुल परेरा, कुमांदु मेंडिस खाता नहीं खोल पाए। पुछले बल्लेबाज स्कोर 164 तक ही ले जा सके जिससे श्रीलंका को 8 रन से हार झेलनी पड़ी।

मैच जीतकर न्यूजीलैंड के कप्तान मिशेल सैंटनर ने कहा कि ऐसा लग रहा था कि नई गेंद में कुछ कमी थी। उनके बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने अच्छी गेंदबाजी की। एक बार जब गेंद पुरानी हो गई तो यह थोड़ा बेहतर हो गई। जब आप क्लंप में विकेट खोते हैं तो यह थोड़ा कठिन होता है। हमें पता था कि दूसरी पारी के लिए हमारे पास थोड़ी गति है। उनके सलामी बल्लेबाजों ने वास्तव में अच्छा खेला। मैच गंवाने के बाद श्रीलंकाई कप्तान चरित असालंका ने कहा कि परिणाम से बहुत निराश हूं, हमें वास्तव में बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए था। सलामी बल्लेबाजों ने वास्तव में अच्छी बल्लेबाजी की। हमें उम्मीद है कि हम अच्छी वापसी करेंगे। मैंने सोचा कि हम गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में थोड़ा बेहतर कर सकते थे। वापसी करना चाहता हूं और अगले गेम में वास्तव में अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं।

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

● **श्रीलंका** - पथुम निसांका, कुसल मेंडिस (विकेटकीपर), कुसल परेरा, कामिंदु मेंडिस, चैरिथ असलांका (कप्तान), भानुका राजपक्षे, वानिंदु हसरंगा, बिनुरा फर्नांडो, महीश थीक्षाना, मथीशा पथिराना, नुवान तुषारा
● **न्यूजीलैंड** - टिम रॉबिन्सन, रचिन रवींद्र, डेरिल मिशेल, मार्क चैपमैन, ग्लेन फिलिप्स, माइकल ब्रेसवेल, मिशेल हे (विकेटकीपर), मिशेल सेंटनर (कप्तान), मैट हेनरी, जैकरी फॉल्क्स, जैकब डफी

रोहित शर्मा की ओपनिंग पर उखड़े संजय मांजरेकर, कही यह बातें

मेलबर्न (एजेंसी)। भारत के पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने मध्यक्रम में खराब प्रदर्शन के बाद कप्तान रोहित शर्मा के ओपनिंग करने के फैसले की आलोचना की है। उन्होंने साफ कहा कि भारतीय क्रिकेट के साथ यह सबसे बड़ा मुद्दा है कि वह बड़े खिलाड़ी फार्म में आ जाएं, यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। रोहित बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में अब तक तीन पारियों में सिर्फ 19 रन बना पाए हैं। वह ओपनिंग पर आए लेकिन 4 ही रन बनाकर पवेलियन लौट गए।

मांजरेकर ने कहा कि एक मुद्दा जो भारतीय क्रिकेट संस्कृति मार्क से गहराई से जुड़ा हुआ है, वह यह है कि... भारत में वे सभी प्रतिष्ठित

खिलाड़ी, रनों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। फिर हम सुनिश्चित करने के लिए उन्हें ऊपर भेज देते हैं कि वह शायद फॉर्म में वापस आ जाए। हम प्रतिष्ठित खिलाड़ियों को सर्वोत्तम प्रकार का मंच या अवसर देने के लिए सभी प्रकार के समायोजन करते हैं। ऐसी स्थिति जहां केएल राहुल दोनों टीमों के लिए सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाज हैं, को पद से हटा दिया गया। उन्हें नंबर 3 पर बल्लेबाजी करने के लिए उतारा गया ताकि रोहित शर्मा को फॉर्म में आने का मौका दिया जा सके।

उन्होंने कहा कि केएल राहुल ओपनिंग पर बहुत अच्छे रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में ओपनिंग करना आसान नहीं है। जयसवाल और केएल राहुल ने ऑस्ट्रेलिया में भारत के लिए रिकॉर्ड साझेदारी की थी, लेकिन भारत एक बड़े नाम वाले खिलाड़ी को सफल बनाने के लिए उस साझेदारी को तोड़कर काफी खुश है।

जसप्रीत बुमराह का दावा- 12 गेंदों में 6 बार कोंस्टास का विकेट लेने से चूका

मेलबर्न (एजेंसी)। आस्ट्रेलिया के 19 वर्ष के नए बल्लेबाज सैम कोंस्टास ने भले ही उनके स्पैल में दो छक्के लगाए लेकिन भारत के चैम्पियन तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने शनिवार को कहा कि उन्हें कभी लगा नहीं कि वह विकेट से दूर हैं। बुमराह ने कहा कि चौथे टेस्ट के पहले दिन कोंस्टास से रोचक मुकाबला रहा। उन्होंने कहा कि वह पहले 2 ओवर में छह सात बार ऐसे मौके बने जब वह उसे आउट कर सकते थे। कोंस्टास ने 65 गेंद में 62 रन बनाए और बुमराह को 2 छक्के भी जड़े। टेस्ट क्रिकेट में तीन साल में पहली बार किसी बल्लेबाज ने बुमराह की गेंद पर छक्का लगाया।

बुमराह ने कहा कि मैं चीजों को उस तरह से नहीं देखता। मैं अच्छी गेंदबाजी कर रहा हूं और नतीजे मेरे पक्ष में है लेकिन अलग अलग जगहों पर मैंने बेहतर गेंदबाजी की है। क्रिकेट में यही होता है कि कई बार आपको विकेट मिलते हैं लेकिन कई बार अच्छी गेंदबाजी करने पर भी विकेट नहीं मिलते। सब कुछ बराबर चलता है। उन्होंने कहा कि मैंने 12 साल से अधिक टी20 क्रिकेट खेला है और इसका अच्छा खासा अनुभव है।

बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में इस साल अब तक 24 विकेट ले चुके बुमराह ने कहा कि रोचक बल्लेबाज (कोंस्टास)। मुझे लगा नहीं कि मैं विकेट से दूर हूं। शुरू में मुझे लगा कि पहले दो ओवर में छह सात बार उसे आउट कर सकता हूं लेकिन क्रिकेट में ऐसा ही होता है। कई बार विकेट मिल जाती है और जब नहीं मिलती तो आप उसी व्यक्ति की आलोचना करते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे नई चुनौतियों का सामना करना पसंद है।

केविन पीटरसन ने माना शोमैन है विराट कोहली- उनके बिना यह टेस्ट सीरीज बोरिंग होती

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में बॉक्सिंग डे टेस्ट में विराट कोहली की ऑन-फील्ड नाटकीयता ने सुर्खियां बटोर ली हैं। उनका उग्र टकराव, महंगा रन-आउट मिश्रण और बल्ले के साथ उनका लचीलापन। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन, कोहली के समर्थन में आगे आए और खेल में थिएटर लाने के लिए 36 वर्षीय खिलाड़ी की प्रशंसा की। यह ड्रामा चौथे टेस्ट के शुरुआती दिन शुरू हुआ जब मैदान पर एक उग्र क्षण के दौरान कोहली ऑस्ट्रेलियाई नवोदित सैम कोनस्टास से टकरा गए। 19 वर्षीय कोन्स्टास ने इस घटना से विचलित हुए बिना, कोहली के साथ शब्दों का आदान-प्रदान किया, जिससे तनाव बढ़ गया। जैसे ही कोहली कोनस्टास से भिड़ने के लिए पीछे मुड़े, अंपायर माइकल गफ और उस्मान ख्वाजा को स्थिति को शांत

करने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा।

पीटरसन ने एक्स पर पोस्ट किया- विराट नीचे थिएटर बना रहे हैं! आइए चलें! कल्पना करें कि शोमैन के बिना यह कितना उबाऊ होगा! और उन्होंने अपने करियर में अपने रनों से सब कुछ अर्जित किया है! कई लोग अपने सफल अंतरराष्ट्रीय करियर का अंत उन्होंने जो हासिल किया है उसके एक-चौथाई के साथ करेंगे...। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने कोहली पर मैच फीस का 20 फीसदी जुर्माना लगाया और उन्हें इस घटना के लिए एक डिमेरिट अंक दिया। हालाँकि जुर्माना अपेक्षाकृत हल्का था, इस घटना ने राय को विभाजित कर दिया, कुछ ने कोहली की आक्रामकता की निंदा की और अन्य ने इसे उनकी प्रतिस्पर्धी भावना के हिस्से के रूप में बचाव किया।

संक्षिप्त समाचार

कांकेर में तेज रफ्तार का कहर, 2 लड़कियों समेत 5 छात्रों की मौत; दुर्ग में ट्रेन के आगे कूदा प्रेमी जोड़ा

कांकेर/दुर्ग, एजेंसी। छत्तीसगढ़ में अलग-अलग जगहों पर दो दर्दनाक हादसा सामने आया है। कांकेर में सड़क हादसे में 2 लड़कियों समेत 5 लोगों की मौत हो गई। वहीं, दुर्ग जिले में एक प्रेमी जोड़े ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर के अंतागढ़ में सड़क हादसे में शुक्रवार को पांच लोगों की मौत हो गई। तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने दो बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में तीन युवक और दो युवतियों की मौत हो गई है। सभी कॉलेज के छात्र बताए जा रहे हैं। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। उधर, छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले की भिलाई के सुपेला थाना क्षेत्र में एक प्रेमी जोड़े ने आत्महत्या कर ली। प्रेमी जोड़े ने गुरुवार देर रात मुंबई हावड़ा रेल मार्ग पर गीतांजलि एक्सप्रेस ट्रेन के आगे कूदकर अपनी जान दे दी। मृतक युवती की पहचान चरोदा की रहने वाली श्रेया फर्नांडिस और युवक का नाम सेक्टर-9 का निवासी राहुल सिंह है। राहुल पहले से शादीशुदा था। श्रेया एयरटेल कंपनी में काम करती थी वहीं राहुल सुपेला में ही मोबाइल फाइनेंस का काम करता था। इसी बीच दोनों एक दूसरे से संपर्क में आ गए थे और एक दूसरे को चाहने लगे थे। इस बीच घर वालों ने राहुल की शादी कहीं और कर दी।

श्रीनगर-जम्मू राजमार्ग पर फंसे लोगों की मदद के लिए उमर अब्दुल्ला ने अधिकारियों को दिए निर्देश

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बर्फबारी के कारण श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर फंसे लोगों की मदद के लिए शुक्रवार को अधिकारियों को निर्देश दिए। बर्फबारी के कारण राजमार्ग पर कई वाहन फंस गए हैं। यह राजमार्ग घाटी को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाला एकमात्र मार्ग है। अब्दुल्ला ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''काजीगुंड और सुरंग के बीच सड़क की वर्तमान स्थिति के बारे में डीसी अनंतनाग से बात की। बर्फीले मौसम के कारण यातायात बाधित हो गया है। दोनों दिशाओं में फंसे वाहन धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं और जहां आवश्यक है वहां सहायता की जा रही है।'' उन्होंने कहा कि उपायुक्त अपनी टीम के साथ मौके पर हैं और स्थिति पर नजर रख रहे हैं। उन्होंने कहा, '' मैंने उन्हें यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि परिवारों और बच्चों को ले जाने वाले वाहनों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अगर जरूरत पड़ी तो रात भर रहने की व्यवस्था की जाएगी...।'' इससे पहले मुख्यमंत्री जम्मू से राजमार्ग के रास्ते यहां आए और कहा कि सड़क की स्थिति काफी खतरनाक है। उन्होंने कहा, ''बनिहाल से श्रीनगर तक लगातार बर्फबारी हो रही थी। स्थिति काफी खतरनाक थी। मुझे पता चला है कि सुरंग और काजीगुंड के बीच करीब 2000 वाहन फंसे हुए हैं। उन्होंने कहा, ''मेरा कार्यालय दक्षिण कश्मीर में प्रशासन के संपर्क में है। बर्फ हटाने का काम पूरा हो चुका है लेकिन सड़कों पर बर्फ है भारी वाहनों को जाने की अनुमति दी जा रही है और बाकी फंसे वाहनों को निकालने के प्रयास जारी हैं।

किसानों का 30 दिसंबर को 'पंजाब बंद' का ऐलान, सड़क, रेल सेवाओं पर पड़ेगा असर

पटियाला, एजेंसी। न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी को लेकर लगातार प्रदर्शन कर रहे किसानों ने किसान मजदूर संघर्ष समिति के बैनर तले पंजाब बंद का ऐलान किया है। समिति के नेता श्रवण सिंह पंढेर ने गुरुवार को कहा कि 30 दिसंबर को पंजाब बंद का आह्वान किया गया है। इस बंद में हमें विभिन्न लोगों और समूहों का समर्थन मिल रहा है। खन्नूर बॉर्डर पर मीडिया से बात करते हुए पंढेर ने कहा कि पंजाब बंद 30 दिसंबर की सुबह 7 बजे से शाम 4 बजे तक मनाया जाएगा। हमें कई यूनियनों और समूहों से समर्थन मिल रहा है। 30 तारीख को पूरे दिन पंजाब में सरकार और निजी कार्यालय दोनों बंद रहेंगे। इसके अलावा रेल और सड़क यातायात भी रोका जाएगा। इससे पहले मंगलवार को पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने केंद्र सरकार पर किसानों की तरफ ध्यान न देने को लेकर जमकर निशाना साधा।

हरियाणा राज्य चुनाव आयोग ने कांग्रेस को दिया झटका, अब ईवीएम से ही होंगे निकाय चुनाव

चंडीगढ़, एजेंसी। हरियाणा के राज्य चुनाव आयुक्त धनपत सिंह ने स्पष्ट कर दिया है कि निकाय चुनाव ई.वी.एम. से ही होंगे। हरियाणा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष उदयभान ने कुछ दिन पहले कहा था कि पार्टी को ई.वी.एम. पर कोई भरोसा नहीं है, इसलिए निकाय चुनाव बैलेट पेपर से करवाए जाने चाहिए। राज्य चुनाव आयुक्त कहा कि किसी भी राजनीतिक दल ने इस मांग को लेकर कोई मांगपत्र नहीं दिया है। राज्य में शहरी निकाय चुनाव ई.वी.एम. से ही होंगे। राज्य चुनाव आयोग को एम-टू ई.वी.एम. मिली हैं, जिनका प्रयोग पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनाव में किया गया था। उन्होंने इस बात को खारिज किया कि ई.वी.एम. में किसी तरह की छेड़छाड़ की जा सकेगी। जून 2022 में शहरी निकाय और अक्तूबर-नवम्बर 2022 में पंचायत चुनाव भी ई.वी.एम. के माध्यम से ही कराए गए थे।

राज्य चुनाव आयुक्त ने शहरी निकाय चुनाव की तैयारियों के मद्देनजर सभी जिला उपायुक्तों से कहा है कि वे 6 जनवरी तक हर हाल में मतदाता सूचियों का अंतिम प्रकाशन सुनिश्चित कर लें, ताकि चुनाव कार्यक्रम घोषित करने में किसी तरह का विलंब नहीं हो सके। धनपत सिंह ने बताया कि 27 शहरी निकायों में वार्डबंदी और आरक्षण की प्रक्रिया को पूरा कर लिया गया है। वोटर लिस्ट तैयार करने की प्रक्रिया जिला उपायुक्तों के माध्यम से पूरी की जा रही है। पहले चरण में गुरुग्राम, फरीदाबाद व मानेसर के सामान्य तथा अम्बाला व सोनीपत नगर निगमों के उपचुनाव होंगे। रोहतक और हिसार नगर निगमों में

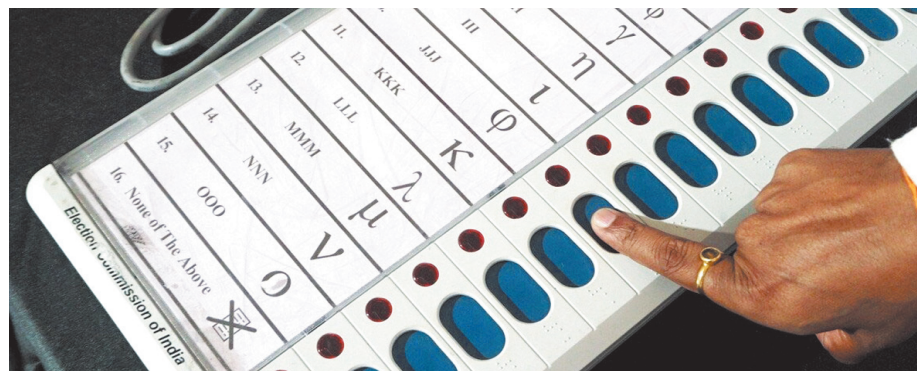

वार्डबंदी का काम हालांकि पूरा हो चुका है, लेकिन करनाल, यमुनानगर, पानीपत के साथ इन दोनों नगर निगमों के चुनाव दूसरे चरण में करवाए जाएंगे। राज्य चुनाव आयुक्त ने बताया कि थानेसर नगर परिषद की वार्डबंदी का काम पूरा हो गया है, लेकिन इसके चुनाव दूसरे चरण में होंगे। कालांवाली के चुनाव भी दूसरे चरण में होंगे, जबकि सोहना के उपचुनाव पहले चरण में कराए जाएंगे। सोहना का केस हाईकोर्ट में चल रहा था, जो कि पीड़ित के पक्ष में नहीं गया है। अम्बाला, पटौदी, जाखल मंडी और सिरसा नगर परिषदों के चुनाव पहले चरण में होंगे। हरियाणा में निकाय चुनाव से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों के स्थानांतरण पर प्रदेश सरकार ने रोक लगा दी है। मतदाता सूचियों को अंतिम रूप देने में जुटे किसी कर्मचारी-अधिकारी को अब स्थानांतरित नहीं किया जाएगा। स्थानांतरण जरूरी हुआ तो हरियाणा राज्य चुनाव आयोग से अनुमति के बाद ही ऐसा किया जाएगा। मुख्य सचिव कार्यालय की राजनीतिक शाखा ने इस संबंध में सभी प्रशासनिक सचिवों, विभागाध्यक्षों, बोर्ड-निगमों के प्रबंध निदेशक, मंडलायुक्त और उपायुक्तों को निर्देश जारी कर दिए हैं। हरियाणा में पहले चरण में होने वाले शहरी निकाय चुनाव के लिए 6 जनवरी को अंतिम मतदाता सूचियां प्रकाशित कर दी जाएंगी। शुक्रवार को रिवाइजिंग अथॉरिटी एस.डी.एम., डी.आर.ओ. और नगराधीश द्वारा आपत्तियों का निपटान का काम पूरा कर लिया गया। अब 31 दिसम्बर तक रिवाइजिंग अथॉरिटी के निर्णय के विरुद्ध उपायुक्तों के पास अपील की जा सकेगी। उपायुक्त 3 जनवरी तक इन अपीलों का निपटान करेंगे तथा 6 जनवरी को फाइनल मतदाता सूचियां जारी कर दी जाएंगी।

नए साल पर महाराष्ट्र में शिक्षकों को झटका, देरी से मिलेगी सैलरी; लड़की बहिन योजना बना कारण

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में नए साल पर शिक्षकों को बड़ा झटका लगने जा रहा है। दिसंबर का वेतन देरी से मिलने की संभावना है। इसका एक कारण लड़की बहिन योजना से सरकार पर पड़ने वाला वित्तीय बोझ बताया जा रहा है। आपको बता दें कि शिक्षकों को 1 से 5 तारीख के बीच वेतन का भुगतान किया जाता है। प्राथमिक शिक्षकों, माध्यमिक शिक्षकों के साथ-साथ अर्ध-सरकारी स्कूलों और सरकारी स्कूलों के सभी शिक्षकों को एकसाथ वेतन दिया जाता है। इसके लिए सभी आवश्यक दस्तावेज 15 तारीख तक पूरे कर लिए जाता है।

न्यूज रिपोर्ट के मुताबिक, शिक्षकों के वेतन के लिए कल प्रावधान किया गया है। इससे पहले योजनाओं पर होने वाले खर्च के लिए प्रावधान किया जा रहा है। यही कारण है कि शिक्षकों के वेतन में देरी हो सकती है। इसका मतलब यह है कि नए साल में शिक्षकों के वेतन में 2 से 3 दिन की देरी हो सकती है। आमतौर पर 1 से 5 तारीख के बीच सैलरी दी जाती है।

नये साल में शिक्षकों के वेतन में दो से तीन दिन की देरी होने की संभावना है। लड़की बहिन योजना के कारण राज्य के खजाने पर वित्तीय बोझ पड़ने के कारण शिक्षकों के वेतन का प्रावधान रुका हुआ था। यह राशि देर रात स्थानांतरित की गई। शिक्षकों का वेतन हमेशा 15 तारीख तक स्थानांतरित कर दिया जाता है। बताया जा रहा है कि बेटी बचाओ योजना की दिसंबर की किस्त के भुगतान में देरी हुई है। शिक्षा विभाग अब जल्द से जल्द वेतन भुगतान करने में जुट गया है। नए साल की शुरुआत में सोलापुर जिले के माध्यमिक विभाग के लगभग 13,000 शिक्षकों को एक ही तारीख पर वेतन का भुगतान नहीं किया जाएगा। 13,000 शिक्षकों के वेतन पर लगभग 90 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। सामान्यतः वेतन की राशि 20 तारीख को वेतन अधीक्षक को प्राप्त हो जाती है। इसके बाद, इन वेतन का बंटवारा किया जाता है। एक निश्चित तिथि तक शिक्षकों को भुगतान कर दिया जाता है।

दिल्ली में आप-कांग्रेस की तनातनी में कूदे संजय राउत, बताया असली दुश्मन कौन; सलाह भी दी

मुंबई, एजेंसी। दिल्ली में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच जारी तनातनी में शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत भी कूद पड़े हैं। उन्होंने दोनों दलों को सलाह देते हुए कहा कि उन्हें समझना चाहिए कि उनका असली दुश्मन कौन है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले 'इंडिया' गठबंधन के दो सहयोगी दल आप और कांग्रेस आमने-सामने आ गए हैं। दोनों दलों के बीच जारी गतिरोध के बीच शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने दोलों दलों को सलाह दी है। राउत ने कहा कि दोनों दलों को यह समझना चाहिए कि उनका असली दुश्मन कौन है। उनका यह इशारा भाजपा की ओर माना जा रहा है।

राउत ने पत्रकारों से कहा कि कांग्रेस और आप राज्य स्तर पर अलग-अलग चुनाव लड़ते हैं और उनके विचार भिन्न हो सकते हैं। लेकिन, उन्हें विपक्षी गठबंधन के हिस्से के रूप में अपने रिश्तों को ध्यान में रखना चाहिए। राउत ने कहा कि आप और कांग्रेस की लड़ाई पुरानी है। दोनों दलों को दिमाग में रखना चाहिए कि वे 'इंडिया' गठबंधन के घटक के रूप में मिलकर कुछ चुनाव लड़ चुके हैं। कहा कि दोनों दलों को यह बात दिमाग में रखनी होगी कि उनकी लड़ाई एक दूसरे के खिलाफ है या भाजपा से है। हमारा दुश्मन कौन है, कांग्रेस या भाजपा अगर

किसी को यह बात नहीं पता तो सबकुछ बेकार है। दिल्ली कांग्रेस ने बुधवार को 12-सूत्री श्वेतपत्र जारी किया था। इसमें अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी और भाजपा पर वादे पूरे नहीं करने और कुप्रबंधन को लेकर निशाना साधा गया था।

इस परआप ने बृहस्पतिवार को कहा था कि अगर कांग्रेस अपने नेताओं के बयानों को लेकर उनके खिलाफ 24 घंटे में अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं करती तो उसे 'इंडिया' से बाहर निकलवाने पर जोर दिया जाएगा। दिल्ली में सत्तारूढ़ पार्टी ने कांग्रेस पर राजधानी में होने वाले चुनाव के लिए भाजपा से सांठगांठ करने का आरोप भी लगाया।

राउत ने कहा कि कांग्रेस को राष्ट्रीय राजधानी में पिछले तीन लोकसभा और विधानसभा चुनावों में कोई सफलता नहीं मिली है।

राम मंदिर की तर्ज पर बन रहा हनुमान गढ़ी का पश्चिमी द्वार, चौखट पर पहुंचते ही दिखेगा दिव्य नजारा

अयोध्या, एजेंसी। राम मंदिर के तर्ज पर हनुमान गढ़ी मंदिर का पश्चिमी द्वार को तैयार किया जा रहा है. इसे प्राचीन इतिहास और वैदिक परंपरा के मुताबिक स्वरूप दिया जा रहा है. यह राम मंदिर के सिंह द्वार के ठीक सामने होगा. इसकी चौड़ाई लगभग 20 फीट और ऊंचाई 51 फीट रखी गई है. इसके साथ ही इस मार्ग से होकर गुजरने के लिए श्रद्धालु सभी सुविधा उपलब्ध होगी. इसके लिए के.टी.प्रोजेक्ट कंपनी को जिम्मेदारी दी गई है. राम मंदिर के निर्माण के बाद श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में आवागमन जारी है. राम मंदिर में दर्शन करने के लिए लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन अयोध्या पहुंचते हैं. इस दौरान प्रसिद्ध हनुमानगढ़ी मंदिर में भी भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है. इस भीड़ के चलते दर्शन के दौरान श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना एक बड़ी चुनौती बन गई है.

इसको देखते हुए मंदिर परिसर के विस्तार की योजना पर काम शुरू कर दिया गया. मंदिर के पश्चिम दिशा का द्वार विकसित किया जा रहा है. धार्मिक मान्यता है कि त्रेता युग में श्रीराम जब लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्या पहुंचे थे, तो उनके साथ हनुमान जी भी आए थे. वहां श्रीराम ने राजमहल की सुरक्षा के लिए उन्हें रामकोट के मुख्य द्वार पर स्थित इस टीले पर रहने के लिए जगह दी थी. हनुमान जी श्री राम

जन्मभूमि की ओर देखते हुए विराजमान हैं.

हनुमानगढ़ी मंदिर गद्दी नशीन के उत्तराधिकारी महेश दास ने कहा कि श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए मंदिर प्रशासन हनुमानगढ़ी का विकास तीन चरणों में करा रहा है. पहले चरण में निकास द्वार के निर्माण का काम चल रहा है. इसमें सीढ़ियों का चौड़ीकरण 20 फीट तक किया जा रहा है. निकास द्वार को भी चौड़ा किया जाएगा. साथ ही 51 फीट ऊंचे नए निकास द्वार का निर्माण किया जाएगा. इसमें रामानंदीय संप्रदाय के संस्थापक रामानंद की मूर्ति भी रहेगी. इसकी अनुमानित लागत लगभग 5 करोड़ है. उन्होंने कहा कि दूसरे चरण में हनुमान जी के गर्भगृह के पास की परिक्रमा को 20 फीट चौड़ा किया जाएगा. साथ ही मंदिर परिसर में स्थित अन्य मंदिरों को किले की आखिरी दीवार तक शिफ्ट किया जाएगा, जिससे गर्भगृह के पास 20 से 25 फीट का अतिरिक्त दायरा मिल सकेगा. वहीं तीसरे चरण में गद्दी नशीन द्वारा आरती के दौरान एक कर्व आकार की चौड़ाई दी जाएगी और प्रवेश द्वार को भी विकसित करेंगे. इसके साथ ही विकलांग और बुजुर्ग श्रद्धालुओं के लिए लिफ्ट भी बनाई जा रही है.

टेक्नोवेशन अबू धाबी में इनोवेशन से स्मोक-फ्री फ्यूचर का लक्ष्य पाने की दर पर जोर डाला गया

अबू धाबी, एजेंसी। फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल (पीएमआई) ने हाल ही में अबू धाबी में अपने 10वें टेक्नोवेशन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में इनोवेशन, टेक्नोलॉजी और विज्ञान द्वारा धूम्रपान (स्मोकिंग) की दरों को तेजी से कम करने में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका पर फोकस किया गया। यदि ऐसा होगा, तो सभी का भविष्य बेहतर बनेगा। पीएमआई के एक्जीक्यूटिव्स ने बताया कि नो-कम्बस्टन टेक्नोलॉजी के जरिये पारंपरिक तंबाकू की तुलना में कम नुकसान पहुंचाने के लिए डिजाइन किये गये विकल्पों तक पहुंच होने से स्मोक-फ्री फ्यूचर को पाने में मदद मिलेगी।

आयोजन में बात करते हुए, फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल के सीईओ यासिक ओल्ज़ाक ने कहा, ''सिगरेट के विकल्पों को प्रतिबंधित करना 'समय की बर्बादी' है, क्योंकि इसके प्रमाण हमारे सामने हैं कि उत्पाद के विभिन्न प्रारूप इस समस्या को तेजी से दूर करने में मददगार होते हैं। सिगरेट की बिक्री को जारी रखते हुए, लोगों को कम हानिकारक विकल्पों से वंचित रखना लगभग अनैतिक है। दुनिया के 1 बिलियन स्मोकर्स को सूचना का अधिकार होना चाहिये और यह भी कि वे कम हानिकारक विकल्प चुन सकें। ऐसे विकल्पों को अपनाने वाले देशों, जैसे कि उदाहरण के लिये जापान में पिछले 10 वर्षों में सिगरेट पीने में 45त्न से भी ज्यादा कमी आई है। अब से 10 वर्ष बाद जापान धूम्रपान से मुक्त होगा, जबकि भारत में ज्यादा स्मोकर्स होंगे। भारत तेजी से धूम्रपान छोड़ने का मौका गंवा देगा और इसका कारण होगा विज्ञान पर आधारित नीतियों को नहीं अपनाना।''

उनकी बात को आगे बढ़ाते हुए, फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल में कॉमनवेल्थ ऑफ इंडिपेंडेन्ट स्टेट्स एण्ड मिडिल ईस्ट एण्ड अफ्रीका रीजन के साउथ एण्ड साउथईस्ट एशिया प्रेसिडेंट फ्रेड डे विल्डे ने कहा, ''अपनी युवा और बढ़ती आबादी के साथ ग्लोबल साउथ का भविष्य को आकार देने में बड़ा योगदान रहेगा। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, दुनिया के 1 बिलियन स्मोकर्स में से 80त्न उभरते देशों में रहते हैं। धुएं से मुक्त भविष्य की ओर बढ़ने में तेजी लाने और पारंपरिक तंबाकू के इस्तेमाल से होने वाला नुकसान कम करने के लिये हम इन क्षेत्रों में सिगरेट पीने के कम हानिकारक विकल्पों को किफायती एवं सुलभ बनाकर उन्हें उपभोक्ताओं की पसंद के मुताबिक बनाना चाहते हैं। जून 2024 तक 27 देशों के लगभग 6.1 मिलियन लोगों ने कम हानिकारक विकल्पों को अपना लिया था। हालांकि यह सिर्फ शुरूआत है, क्योंकि दुनिया के वैध आयु वाले आधे से ज्यादा निकोटिन कंज्यूमर इन क्षेत्रों में रहते हैं।'' धुएं से मुक्त दुनिया की कल्पना बताते हुए, फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल में ग्लोबल कम्युनिकेशंस के वाइस प्रेसिडेंट तोमासो डी जियोवन्नी ने कहा, ''पीएमआई जल्दी से जल्दी सिगरेट की जगह कम हानिकारक विकल्पों को देना चाहती है। यह विकल्प सिगरेट की तुलना में वैज्ञानिक आधार पर ज्यादा सुरक्षित प्रमाणित हुए हैं। यह पूरी तरह से जोखिम से मुक्त नहीं हैं, लेकिन सिगरेट के मुकाबले हानिकारक रसायनों से संपर्क में आना काफी कम कर सकते हैं। हमारा मानना है कि अगर आप धूम्रपान नहीं करते हैं।

जयशंकर ने ट्रंप के एनएसए माइकल वाल्ट्ज से मुलाकात की, द्विपक्षीय संबंधों और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा

वॉशिंगटन, एजेंसी। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिका में अपनी आधिकारिक यात्रा के दौरान निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के नामित उम्मीदवार माइकल वाल्ट्ज से मुलाकात की। इस मुलाकात में दोनों नेताओं ने भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय साझेदारी और वैश्विक मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। जयशंकर वर्तमान में 24-29 दिसंबर तक अमेरिका दौरे पर हैं। यह भारतीय सरकार और ट्रंप प्रशासन के बीच पहली उच्च-स्तरीय व्यक्तिगत बैठक थी। भारतीय विदेश मंत्री ने शुक्रवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, आज शाम वाल्ट्ज से मिलकर खुशी हुई। हमने भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों और वैश्विक मुद्दों पर एक व्यापक चर्चा की। मैं उनके साथ आगे काम करने के लिए उत्सुक हूं। फ्लोरिडा के छठवें कांग्रेसनल जिले के तीन बार के सांसद माइकल वाल्ट्ज ट्रंप के 20 जनवरी को अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करने के बाद एनएसए के रूप में अपनी जिम्मेदारी संभालेंगे। वाल्ट्ज भारत-अमेरिका संबंधों से परिचित हैं। वह संसद में भारत कॉकस के रिपब्लिकन सह-चेयरमैन हैं। वह अगस्त में भारत का दौरा कर चुके हैं और लाल किले में स्वतंत्रता दिवस के समारोह में भी शामिल हुए थे। इसके अलावा, उन्होंने भारत के पक्ष में कई विधेयकों को समर्थन दिया है। 12 नवंबर को ट्रंप ने वाल्ट्ज को अपने एनएसए के रूप में नियुक्त करने की घोषणा की थी। इससे पहले दिन में, जयशंकर ने कहा कि उन्होंने वाशिंगटन डीसी में भारतीय दूतावास और महावाणिज्यदूतों के साथ दो दिन का एक महत्वपूर्ण सम्मेलन खत्म किया।

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में ट्रंप ने दायर की याचिका, टिकटॉक पर प्रतिबंध वाले कानून को रोकने का किया आग्रह

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप ने टिकटॉक पर बैन लगाने वाले कानून को रोकने के लिए अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। इस याचिका में ट्रंप ने कोर्ट से आग्रह किया कि वह उस कानून को रोक दे जो 20 जनवरी को उनके शपथ ग्रहण से एक दिन पहले टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाएगा, यदि इसको इसके चीनी मालिक बाइटडांस द्वारा नहीं बेचा जाता है। डोनाल्ड ट्रंप की कानूनी टीम ने याचिका में कहा कि इस मामले की जटिलता और नवीनता को देखते हुए, अदालत को इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए अधिक समय देने के लिए वैधानिक समय सीमा पर रोक लगाने पर विचार करना चाहिए, ताकि उन्हें राजनीतिक समाधान का प्रयास करने का अवसर मिल सके। गौरतलब है कि डोनाल्ड ट्रंप अपने पहले कार्यकाल (2017-2021) के दौरान टिकटॉक के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर इस ऐप पर प्रतिबंध लगाने की भी कोशिश की थी। इसके लिए रिपब्लिकन नेताओं ने यह चिंता व्यक्त की थी कि चीनी सरकार अमेरिकी टिकटॉक उपयोगकर्ताओं के डेटा का दुरुपयोग कर सकती है या प्लेटफ़ॉर्म पर जो कुछ भी देखा जाता है।

गाजा में फिर से वापसी कर रहे हमास के लड़ाके, इस्राइली सेना ने कमाल अदवान अस्पताल के करीब किया हमला

गाजा, एजेंसी। इस्राइली सेना (आईडीएफ) ने शुक्रवार को गाजा में कमाल अदवान अस्पताल के आसपास सैन्य कार्रवाई की है। दरअसल इस्राइली सेना को सूचना मिली थी कि गाजा के इस इलाके में हमास के लड़ाकों की वापसी हुई है और वे यहां आतंकी गतिविधि संचालित कर रहे हैं। सूचना के आधार पर इस्राइली सेना ने कमाल अदवान अस्पताल के पास छापेमारी की। आईडीएफ ने कहा कि उसने नागरिकों को होने वाले नुकसान को कम करने के लिए ऑपरेशन से पहले नागरिकों, रोगियों और चिकित्सा कर्मियों को सुरक्षित तरीके से निकालने में मदद की। अस्पताल के मरीजों को गाजा के अन्य अस्पतालों में शिफ्ट कर दिया गया है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के निदेशक मुनीर अल-बुर्श ने बताया, आईडीएफ ने 350 लोगों को कमल अदवान अस्पताल से नजदीक के स्कूल में जाने का आदेश दिया। इनमें 75 मरीज, उनके साथी और 185 चिकित्सा कर्मचारी शामिल थे। आईडीएफ का कहना है कि यमन से इस्राइल की तरफ मिसाइलें दागी गई हैं। हालांकि इस्राइली सेना ने हवा में

ही इन मिसाइलों को इंटरसेप्ट कर तबाह कर दिया। आईडीएफ ने यह स्पष्ट नहीं किया कि मिसाइल को रोकने वाला इजरायली सिस्टम था या अमेरिकी सिस्टम। अमेरिकी मिसाइल रक्षा प्रणाली बैटरी ने कल सुबह यमन से इजरायल पर दागी गई हौथी बैलिस्टिक मिसाइल को सफलतापूर्वक रोका था। गौरतलब है कि अक्तूबर में इस्राइल में अमेरिका की रक्षा प्रणाली को तैनात किया गया था। आईडीएफ ने बताया कि हूती विद्रोहियों ने पिछले साल इस्राइल पर 200 से अधिक मिसाइलें और 170 ड्रोन दागे हैं। एक अमेरिकी मीडिया को दिए इंटरव्यू में सीरियाई नेता अहमद अल-शरा की ओर से दमिश्क के गवर्नर माहेर मरवान ने कहा है कि सीरिया की नई सरकार इस्राइल के साथ शांति चाहती है। गवर्नर ने कहा कि हमें इस्राइल से कोई डर नहीं है, और हमारी समस्या इस्राइल के साथ नहीं है। हम सह-अस्तित्व चाहते हैं और कोई विवाद नहीं चाहते। हम ऐसी किसी भी चीज़ में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते हैं जो इस्राइल की सुरक्षा या किसी अन्य देश की सुरक्षा को ख़तरे में डाले।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129